कल्पमेधा

बिना शिक्षा हासिल किए व्यक्ति के पास विवेक या सूझबूझ होना, शिक्षा प्राप्त करके भी किसी के भीतर विवेक न होने से हजार गुना बेहतर है।

– रोबर्ट ग्रीन इंगर्सोल

आतंक का दायरा

राजधानी दिल्ली में लालकिला के पास एक कार में हुए धमाके की घटना ने एक बार फिर यहां की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर चिंताजनक सवाल खड़ा किया है, वहीं इस बात को लेकर एक आशंका खड़ी हो रही है कि क्या आतंकवादी संगठनों ने दोबारा अपने पांव फैलाने शुरू कर दिए हैं। हालांकि कार में हुए धमाके को लेकर फिलहाल कोई अंतिम निष्कर्ष सामने नहीं आया है कि विस्फोट का कारण क्या था, इसलिए इसके पीछे की मंशा के बारे में तभी कुछ ठोस सामने आ सकेगा, जब सरकार की ओर से कराई जाने वाली जांच की आधिकारिक रपट कोई संकेत करेगी। मगर धमाके का स्वरूप और उससे होने वाले नुकसान का जो दायरा दिखा, वह बेहद चिंताजनक है। इसमें किसी व्यापक साजिश की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। गौरतलब है कि सोमवार की शाम एक कार में हुए विस्फोट के बाद आसपास खड़े कई अन्य वाहन उसकी जद में आ गए और कई लोगों की जान चली गई। घटना स्थल से जानमाल के नुकसान के जैसे ब्योरे सामने आए, वे किसी बड़े आतंकवादी हमले या बम विस्फोट की तस्वीर से ज्यादा अलग नहीं थे।

जाहिर है, अब देश की जांच एजंसियां इस धमाके के बारे में विस्तृत पड़ताल कर सच्चाई का पता लगाएंगी। फिलहाल जांच के बिंदु में सभी कोण शामिल होने चाहिए, क्योंकि देश की राजधानी में हुई यह घटना बेहद संवेदनशील है और कई तरह के खतरों का संकेत भी हो सकती है। यही वजह है कि इस मामले में यूएपीए, विस्फोटक अधिनियम और अन्य सख्त धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज कर जांच का दायरा व्यापक रखा गया है। निश्चित रूप से इस धमाके की सभी कड़ियों की पड़ताल कर दोषियों को सजा के अंजाम तक पहुंचाने की जरूरत है, मगर सवाल यह भी उठता है कि राजधानी होने के नाते सुरक्षा व्यवस्था के लिहाज से सबसे चौकस और बेहतर मानी जाने वाली दिल्ली में इतनी बड़ी घटना हो गई और सुरक्षा एजंसियों को इसके बारे में कोई अंदाजा तक नहीं हुआ, तो यह किसकी नाकामी है! इस घटना के तार एक दिन पहले आतंकी तंत्र के एक हिस्से के खुलासे के तहत फरीदाबाद में गिरफ्तार किए गए लोगों के साथ जुड़े होने की आशंका भी जताई जा रही है। लेकिन कार में धमाके की वजह अगर कोई विस्फोटक था, तो उसे वाहन में लेकर कोई व्यक्ति बिना किसी रोकटोक के सड़क पर कैसे चलता रहा और क्या यह देश की खुफिया एजंसियों की कार्यशैली के चिंताजनक पहलू को नहीं दर्शाता है!

सबसे अहम है दिल्ली की सुरक्षा व्यवस्था को चौतरफा चाकचौबंद बनाना, ताकि यहां के लोगों को अतीत की वैसी त्रासदी का सामना फिर से करने की नौबत कभी न आए, जब यहां सिलसिलेवार बम धमाके हुए थे और उसमें कई लोग मारे गए। आतंकी हमलों के वैसे दौर की वापसी न हो, इसके लिए सरकार को हर जरूरी कदम उठाने चाहिए। खासतौर पर किसी अंतरराष्ट्रीय साजिश के पहलू से इस घटना की गहन छानबीन होनी चाहिए। सिर्फ दावे करने भर से आतंकवाद का खात्मा होना मुमकिन नहीं है। जम्मू-कश्मीर में आज भी आतंकियों की घुसपैठ और हमले की कोशिशें बताती हैं कि देश में आतंकवाद आज भी एक ऐसी चुनौती है, जिसे लेकर थोड़ी भी लापरवाही की बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है। सरकार की सबसे जरूरी प्राथमिकता यहां के आम लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना होना चाहिए। इसके लिए खुफिया एजंसियों सहित सुरक्षा व्यवस्था के सभी मोर्चों पर निरंतर चौकस रहने की जरूरत है।

खतरे का तापमान

जलवायु परिवर्तन से उपजे संकट से निपटने के लिए वर्ष 2015 में वैश्विक स्तर पर पेरिस में एक महत्त्वपूर्ण समझौता हुआ था। इसका मुख्य लक्ष्य वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करना था। मगर इस समझौते में जताई गई प्रतिबद्धता के अनुरूप प्रयास होते नजर नहीं आ रहे हैं। हालांकि, विकासशील देश इस दिशा में आगे बढ़ने का इरादा रखते हैं, लेकिन वित्तीय और तकनीकी चुनौतियां उनकी राह में रोड़े अटका रही हैं। इसके बावजूद भारत और चीन जैसे देश पेरिस समझौते के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए अपनी जिम्मेदारी निभाने की कोशिश कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन पर शुरू हुई 'संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन' की 30वीं वार्षिक बैठक में इन दोनों देशों की परिवर्तनकारी भूमिका की सराहना की गई। साथ ही कहा गया कि इन देशों ने जलवायु कार्रवाई को स्पष्ट तरीके से अपनाया है और वे दुनियाभर में स्वच्छ प्रौद्योगिकियों की लागत कम करने में मदद कर रहे हैं।

दरअसल, पेरिस समझौते में तय हुआ था कि विकसित देश जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विकासशील देशों की वित्तीय और तकनीकी रूप से मदद करेंगे। मगर संयुक्त राष्ट्र की हाल की एक रपट बताती है कि यह वित्तीय मदद लगातार घट रही है। विकासशील देशों को वर्ष 2035 तक अपने लक्ष्यों को पाने के लिए हर साल 365 अरब डालर की जरूरत है, लेकिन वर्ष 2023 में इन देशों को केवल 26 अरब डालर की अंतरराष्ट्रीय सहायता मिल पाई, जो वर्ष 2022 के 28 अरब डालर से भी कम है। सवाल है कि विकसित देशों ने अपने वादे के अनुसार विकासशील देशों को पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान करने से अपने कदम पीछे क्यों खींच लिए हैं? हो सकता है कि इन देशों को इसमें निजी हित नजर नहीं आ रहे हों, लेकिन उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में उनका योगदान सबसे ज्यादा है। इस लिहाज से विकासशील देशों की वित्तीय मदद और स्वच्छ प्रौद्योगिकियों को अपनाने में उनका तकनीकी तौर पर सहयोग करना विकसित देशों की नैतिक जिम्मेदारी है। इस पर भी विचार करने की जरूरत है कि दशकों से इस मसले पर जताई जा रही अंतरराष्ट्रीय चिंता का हासिल अब तक कोई ठोस हल सामने क्यों नहीं ला सका है।

प्रदूषण की फिक्र के बीच बढ़ता संकट

दिल्ली का प्रदूषण जमीनी समस्या है। इसका समाधान जमीन पर प्रदूषण फैलाने वाले स्रोतों को बंद करने से होगा। कृत्रिम बारिश प्रदूषण का स्थायी समाधान नहीं है। यह एक 'आपातकालीन' उपाय है, जिसका इस्तेमाल तभी किया जा सकता है, जब मौसम की सभी परिस्थितियां अनुकूल हों।

रंजना मिश्रा

दिल्ली का आसमान जब धुएं और धूल की एक मोटी चादर ओढ़ लेता है, तब सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। सूरज सिर्फ धुंधला-सा एक धब्बा बन कर रह जाता है। तब हर किसी को बारिश की प्रतीक्षा होती है। एक ऐसी बारिश की जो जहरीले गुबार को धो डाले और हवा को फिर से सांस लेने लायक बना दे। यह वह स्थिति होती है जब स्कूल बंद कर दिए जाते हैं, अस्पतालों में सांस के मरीजों की कतारें लग जाती हैं और स्वस्थ इंसान भी अपनी आंखों में जलन और फेफड़ों में चुभन महसूस करने लगता है। मगर जब प्रकृति रूठ जाती है, जब मानसून दूर होता है और पश्चिमी विक्षोभ भी धोखा दे जाता है, तब नजरें उठती हैं विज्ञान की ओर।

प्रदूषण से लड़ाई की इसी उम्मीद के साथ कुछ समय पहले दिल्ली ने कृत्रिम बारिश के लिए बादलों का दरवाजा खटखटाया था। आइआइटी कानपुर के वैज्ञानिकों के साथ मिल कर एक बड़ी योजना बनी। विशेष विमान तैयार किए गए और दिल्ली की बेबस जनता टकटकी लगाए आसमान की ओर देखने लगी। वह दिन आया, जब विमानों ने बादलों के बीच जाकर अपना काम किया। मगर नतीजा सिफर रहा। यह महंगा तकनीकी प्रयोग विफल रहा। इस नाकामी को समझने के लिए हमें यह समझना होगा कि कृत्रिम बारिश आखिर होती कैसे है?

कृत्रिम बारिश को वैज्ञानिक भाषा में 'क्लाउड सीडिंग' या 'बादलों का बीजारोपण' कहते हैं। यह पहले से मौजूद बादलों को बारिश करने के लिए 'मनाने' या 'उकसाने' की एक तकनीक है। प्राकृतिक तौर पर बारिश तब होती है, जब बादलों में मौजूद पानी की अरबों सूक्ष्म बूंदें या बर्फ के क्रिस्टल आपस में जुड़ कर इतने बड़े और भारी हो जाते हैं कि हवा उन्हें और संभाल नहीं पाती और वे गुरुत्वाकर्षण के कारण जमीन पर गिरने लगते हैं। यह प्रक्रिया उन घने 'कपासी' बादलों में सबसे अच्छी होती है जो रुई के पहाड़ों की तरह दिखते हैं और जिनमें पानी की मात्रा भरपूर होती है। मगर कई बार, बादलों में पानी तो बहुत होता है, मगर वे बूंदें इतनी छोटी होती हैं कि आपस में जुड़ कर भारी नहीं हो पातीं। यहीं पर बादलों के बीजारोपण की भूमिका शुरू होती है।

इस प्रक्रिया में, एक विमान या राकेट के जरिए बादलों के एक खास हिस्से में कुछ विशेष रसायन छोड़े जाते हैं। ये रसायन 'बीज' का काम करते हैं। सबसे आम रसायन है सिल्वर आयोडाइड, जिसकी बनावट बर्फ के बारीक टुकड़े से मिलती है। जैसे ही इसे ठंडे बादलों में छिड़का जाता है, पानी की ठंडी बूंदें इसे असली बर्फ के टुकड़े समझ कर इससे चिपकने लगती हैं। देखते ही देखते यह छोटा सा कण लाखों बूंदों को जोड़ कर बर्फ का एक बड़ा 'क्रिस्टल' बन जाता है, जो पिघल कर बारिश की बूंद के रूप में जमीन पर गिरता है। गर्म बादलों के लिए, नमक या कैल्शियम क्लोराइड जैसे 'नमी सोखने वाले' कणों का इस्तेमाल होता है, जो हवा से नमी खींच कर बड़ी बूंदों में तब्दील हो जाते हैं। यह तकनीक कोई नई नहीं है। चालीस के दशक में अमेरिकी वैज्ञानिक विंसेंट शेफर ने इसकी खोज की थी और तब से लेकर आज दुनिया के पचास से अधिक देश इसका इस्तेमाल सूखे से लड़ने और पानी के भंडारण के लिए या यहां तक

कि बड़े आयोजनों से पहले मौसम साफ करने के लिए करते आ रहे हैं।

अब सवाल यह है कि यह तकनीक दिल्ली में क्यों नाकाम हो गई? इसका जवाब है, नमी। दिल्ली का यह प्रयोग इसलिए विफल नहीं हुआ कि वैज्ञानिकों ने कोई गलती की या विमान ठीक से नहीं उड़े या सिल्वर

> **जब तक करोड़ों वाहन धुआं उगलते रहेंगे, जब तक निर्माण स्थलों से धूल उड़ती रहेगी और जब तक औद्योगिक इकाइयां जहरीली हवा छोड़ती रहेंगी, तब तक कोई भी कृत्रिम बारिश हमें बचा नहीं सकती। हमें अपनी जीवनशैली, अपनी नीतियों और प्राथमिकताओं को बदलना होगा। हमें सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करना होगा, स्वच्छ ऊर्जा को अपनाना होगा। प्रदूषण के खिलाफ एक सख्त और ईमानदार जंग लड़नी होगी। दिल्ली में प्रदूषण का गहराता संकट एक चेतावनी है कि हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ तो कर सकते हैं, लेकिन उसे नियंत्रित करने का वहम पालना छोड़ देना चाहिए। समाधान ऊपर आसमान में नहीं, नीचे जमीन पर है।**

आयोडाइड ने काम नहीं किया। यह प्रयास इसलिए नाकाम हुआ कि जिस 'कच्चे माल' की इस तकनीक को सबसे अधिक जरूरत होती है, वही आसमान से गायब था। आइआइटी कानपुर के विशेषज्ञों ने स्पष्ट किया कि कृत्रिम बारिश की सफलता के लिए बादलों में नमी की एक न्यूनतम मात्रा होना अनिवार्य है। सीधे शब्दों में कहें, तो बादल 'गीले' और घने होने चाहिए। वैज्ञानिकों के अनुसार, एक सफल बीजारोपण के लिए बादलों में कम से कम 50 फीसद या उससे अधिक तरलता होनी चाहिए। मगर दुर्भाग्य से, जिस दिन दिल्ली में यह परीक्षण किया गया, उस दिन आसमान में जो बादल मौजूद थे, वे बहुत पतले, सूखे और बेजान थे। वे घने कपासी बादल नहीं थे। उनमें नमी की मात्रा सिर्फ दस से बीस फीसद के बीच पाई गई। यह उस सूखी 'स्पंज' की तरह था, जिसे कितना भी निचोड़ लें, उसमें से पानी नहीं निकल सकता।

विडंबना देखिए, जिस प्रदूषण को मिटाने के लिए यह बारिश कराई जा रही थी, शायद उसी प्रदूषण ने बादलों की संरचना को इस हद तक बिगाड़ दिया था कि वे कृत्रिम बीजारोपण के लिए भी तैयार नहीं थे। वैज्ञानिकों को सिर्फ सूखे बादलों से ही नहीं, बल्कि 'प्रदूषित' और 'बिगड़ैल' बादलों से भी निपटना था। विमानों ने बादलों में सिल्वर आयोडाइड दागे, उन रसायनों ने अपना काम करने की कोशिश भी की, लेकिन जब बादलों में पर्याप्त जल कण ही नहीं थे, तो वे आपस में जुड़ कर बड़ी बूंदें कैसे बनाते? जो थोड़े-बहुत कण बने भी, वे इतने हल्के थे कि जमीन तक पहुंचने से पहले ही हवा में भाप बन गए। इस विफलता का एक और तकनीकी कारण था बादलों की ऊंचाई। विशेषज्ञों के मुताबिक, यदि बादल पांच हजार फुट के आसपास यानी जमीन के करीब होते, तो सफलता की संभावना ज्यादा होती, लेकिन दिल्ली के ऊपर बादल करीब दस हजार फुट या उससे भी अधिक ऊंचाई पर थे। इतनी ऊंचाई से एक छोटी बूंद का जहरीली और गर्म हवा के थपेड़ों को झेल कर जमीन तक पहुंचना लगभग नामुमकिन था। इसके अलावा, दिल्ली की सर्दियों में 'तापमान व्युत्क्रमण' की एक मोटी परत बन जाती है, जिसमें ठंडी हवा नीचे फंस जाती है और गर्म हवा उसके ऊपर एक ढक्कन लगा देती है। यह ढक्कन ही सारे प्रदूषण को शहर के ऊपर कैद रखता है। कृत्रिम बारिश के इस प्रयोग का एक मकसद इस ढक्कन को तोड़ना भी था, लेकिन अपर्याप्त नमी के कारण यह प्रयास सफल नहीं हो सका।

कृत्रिम बारिश प्रदूषण का स्थायी समाधान नहीं है। यह एक 'आपातकालीन' उपाय है, जिसका इस्तेमाल तभी किया जा सकता है, जब मौसम की सभी परिस्थितियां, खासकर नमी सौ फीसद अनुकूल हों। दरअसल, दिल्ली का प्रदूषण जमीनी समस्या है। इसका समाधान बादलों में सिल्वर आयोडाइड छिड़कने से नहीं, बल्कि जमीन पर प्रदूषण फैलाने वाले स्रोतों को बंद करने से होगा। जब तक करोड़ों गाड़ियां धुआं उगलती रहेंगी, जब तक निर्माण स्थलों से धूल उड़ती रहेगी और जब तक औद्योगिक इकाइयां जहरीली हवा छोड़ती रहेंगी, तब तक कोई भी कृत्रिम बारिश हमें बचा नहीं सकती। हमें अपनी जीवनशैली, अपनी नीतियों और अपनी प्राथमिकताओं को बदलना होगा। हमें सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करना होगा, स्वच्छ ऊर्जा को अपनाना होगा। प्रदूषण के खिलाफ एक सख्त और ईमानदार जंग लड़नी होगी। दिल्ली में प्रदूषण का गहराता संकट एक चेतावनी है कि हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ तो कर सकते हैं, लेकिन उसे नियंत्रित करने का वहम पालना छोड़ देना चाहिए। समाधान ऊपर आसमान में नहीं, नीचे जमीन पर है।

अधूरे अनुबंधों की यात्रा

मनीषा मंजरी

दुनिया मेरे आगे

समय की धारा में बहती यह जिंदगी न जाने कितने ही अजनबी मोड़ से होकर गुजरती है। कभी ये मोड़ हमें किसी शांत तट तक ले आते हैं, जहां मन ठहर जाने को आतुर हो उठता है। लगता है कि यही वह स्थान है, जहां इस यात्रा को रुक जाना चाहिए। मगर जीवन की यह धारा किसी एक ठहराव को स्थायी नहीं बनने देती, वह आगे बहती रहती है। नए किनारे दिखाती है, नए अनुभवों का उपहार देती है, जो कभी सुखद होते हैं, तो कभी असहनीय।

इस जीवन धारा में कई ऐसे मोड़ आते हैं, जो हमें उस समय समझ नहीं आते। कुछ अप्रसांगिक, कुछ रहस्यमय और कुछ ऐसे, जिनका अर्थ हमारे वर्तमान बोध से बहुत परे होता है। ये वे क्षण होते हैं, जब हमें किसी गहरे पूर्वानुभव का एहसास होता है। किसी अनजाने व्यक्ति की मुस्कान, किसी पुराने गीत की धुन, किसी जगह की गंध या किसी दृश्य का अचानक भीतर तक उतर जाना। ऐसा लगता है मानो आत्मा ने यह सब पहले जिया हो। कहीं, किसी और समय में। ऐसे पूर्वानुभव हमें अक्सर उलझन में डाल देते हैं, लेकिन समय के साथ उनकी परतें धीरे-धीरे खुलने लगती हैं। तब समझ आता है कि ये घटनाएं संयोग नहीं थीं, ये हमारी आत्मा की यात्रा के संकेत थे। अदृश्य धागे, जो हमें किसी नए द्वार तक ले जाने के लिए आए थे। यह अनुभव हमारी चेतना का विस्तार करते हैं।

कभी अचानक ऐसे मोड़ भी सामने आ खड़े होते हैं, जिनसे निकलने के लिए मन व्याकुल हो उठता है। यह व्याकुलता, संघर्ष और इनसे उपजे अनुभव मिलकर हमारे भीतर एक गठरी बना देते हैं- अनुभवों की गठरी। यही गठरी हमें संभालती भी है और हमें परिपक्व भी बनाती है। शुरू में जो उतार-चढ़ाव हमें तोड़ने लगते हैं, वही अनुभव धीरे-धीरे हमें इस धारा के प्रवाह को स्वीकार करना सिखा देते हैं। मानव जीवन एक सतत यात्रा है, जो केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। इसका मूल उद्देश्य आत्मा को उस विद्वता और शांति के आलिंगन तक ले जाना है, जहां वह परमात्मा में विलीन हो सके। यह यात्रा रैखिक नहीं है। यह समय और जन्म की परतों में फैली हुई है। हर अनुभव अधूरे पाठों को पूरा करने की एक कड़ी भर है। हमारे जीवन में आने वाले सुख-दुख, रिश्ते-नाते, सफलताएं और असफलताएं, सब हमारे लिए अनुबंध होते हैं, जिन्हें पूरा करना हमारी नियति होती है। कई बार ये अनुभव इतने गहरे होते हैं कि हमें लगता है जैसे हम किसी अदृश्य शक्ति द्वारा संचालित हो रहे हैं, जो हमें किसी निश्चित दिशा में खींच रही है। कभी ये अनुबंध पीड़ा के रूप में सामने आते हैं- किसी रिश्ते की कसक, किसी प्रियजन का बिछोह या किसी असफलता का बोझ बनकर। कभी ये सामाजिक या पारिवारिक रूप में प्रकट होते हैं, जहां हमें अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना होता है या किसी गहरे रिश्ते के माध्यम से हमें कोई महत्त्वपूर्ण सबक मिलना होता है। जब हम इन अनुबंधों की गहराई को समझना शुरू करते हैं, तो जीवन का अर्थ बदलने लगता है। तब हमें यह अहसास होता है कि हर घटना, हर मोड़, हर सुख और दुख आत्मा की उन्नति के लिए एक साधन मात्र हैं।

> **जीवन में जो अनुभव हमें मिलते हैं, वे एक मौन शिक्षक की तरह काम करते हैं। ये अनुभव, जो हमें हमारी सीमाओं से परिचित कराते हैं, हमारी धैर्य-शक्ति को परखते हैं और हमें आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करते हैं। समय के साथ हम यह समझने लगते हैं कि सुख और दुख दोनों ही क्षणभंगुर हैं और इनका चक्र जीवन भर चलता रहेगा।**

जीवन में जो अनुभव हमें मिलते हैं, वे हमारे भीतर एक मौन शिक्षक की तरह काम करते हैं। ये अनुभव, जो हमें हमारी सीमाओं से परिचित कराते हैं, हमारी धैर्य-शक्ति को परखते हैं और हमें आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करते हैं। समय के साथ हम यह समझने लगते हैं कि सुख और दुख दोनों ही क्षणभंगुर हैं और इनका चक्र जीवन भर चलता रहेगा। यह समझ हमें भीतर से स्थिर कर देती है। तब जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदल जाता है। हम प्रतिक्रियाशील होने के बजाय पर्यवेक्षक बन जाते हैं। यही पर्यवेक्षक दृष्टि हमें उस गहन शांति तक ले जाती है, जिसकी तलाश हर आत्मा अनजाने में करती रहती है।

अक्सर लोग इस अवस्था को उदासीनता कहकर गलत समझ लेते हैं। उन्हें लगता है कि व्यक्ति अब न खुशी महसूस करता है, न दर्द। लेकिन यह उदासीनता दरअसल वह शांति होती है, जो हर अनुभव को सहजता से स्वीकार करना सीख चुकी होती है। जब हम किसी घटना को केवल उसकी सतही रूपरेखा में देखते हैं, तो हमें उसमें या तो पीड़ा दिखती है या उल्लास। लेकिन जब हम उसे अपनी यात्रा का एक हिस्सा मानकर देखते हैं, तो उसका अर्थ बदल जाता है। तब न हम अत्यधिक उल्लसित होते हैं, न अत्यधिक व्यथित। हम बस उस घटना को एक अनुभव के रूप में स्वीकार कर आगे बढ़ जाते हैं। यही परिपक्वता है।

जीवन का अंतिम लक्ष्य केवल जीना या भौतिक सुख-सुविधाओं का संग्रह करना नहीं है। ये तो यात्रा के बीच में मिलने वाले छोटे ठहराव भर हैं। असली लक्ष्य अहंकार का समाप्त हो जाना है, इच्छाओं का शांत हो जाना है। मगर इस अवस्था तक पहुंचने के लिए लंबी यात्रा करनी पड़ती है, जिसमें नए सबक लिखे जाते हैं- कभी यह अध्याय सुखद होता है, कभी अत्यंत कठिन, लेकिन दोनों ही हमारी उन्नति के लिए आवश्यक होते हैं। जीवन की यह धारा निरंतर बहती रहती है, हम चाहें या न चाहें। हम इसके प्रवाह के साथ चलना सीख सकते हैं। जब हम इस प्रवाह को स्वीकार कर लेते हैं, तब जीवन सरल हो जाता है। तब न हमें ठहराव की लालसा रहती है, न मोड़ों से डर। हम बस बहते जाते हैं, सीखते जाते हैं, और आखिर शांति के किनारे तक पहुंच जाते हैं। यही जीवन की सच्ची यात्रा है- अनुभव से ज्ञान, ज्ञान से शांति, और शांति से मुक्ति की ओर एक सतत् प्रवाह।

सांस पर आफत

'लापरवाही का हासिल' (संपादकीय, 7 नवंबर) में सही कहा गया कि दिल्ली में प्रदूषण के गहराते संकट की मुख्य वजह सरकार की अनदेखी और लापरवाही है। आइएचएमई की रपट के अनुसार दिल्ली में वर्ष 2023 में 17,188 लोगों की मौत प्रदूषण की वजह से हुई। यानी हर सात में एक व्यक्ति की मौत दिल्ली की जहरीली हवा के कारण हुई है। सच्चाई यही है कि यहां वायु गुणवत्ता 'बेहद खराब' श्रेणी में पहुंच गई है। एक अन्य रपट के मुताबिक, दिल्ली में किसी भी अन्य बीमारी से उतनी मौतें नहीं होतीं, जितनी अब प्रदूषण के कारण हो रही है। दिल्ली में प्रदूषण के कारण जिंदगी के 10-12 साल कम हो जाते हैं। सरकार की लापरवाही के कारण दिल्लीवासी जहरीली हवा झेलने को मजबूर हो गए हैं। पिछले दिनों दिवाली बीतते ही दिल्ली के प्रदूषण ने पुराने सारे कीर्तिमान ध्वस्त कर दिए। कायदे से सरकार को यहां के प्रदूषण की हालत को देखते हुए पटाखों को पूरी तरह से प्रतिबंधित करना चाहिए था। पिछले दिनों वायु गुणवत्ता सूचकांक खतरनाक सीमा पार कर गया था। आज दिल्ली की हवा में सांस लेने का मतलब जहर अपने अंदर लेने जैसा हो गया है!

– योगेश, करावल नगर, दिल्ली

जोखिम की तकनीक

शांति और विकास के कार्यों में विज्ञान की भूमिका अहम है। अगर विज्ञान का उचित प्रयोग किया जाए, तो यह प्राणी जाति के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है और अनुचित प्रयोग अभिशाप भी बन जाता है। विज्ञान ने इंसान की जिंदगी बहुत आरामदायक बना दी है। संचार क्रांति, डिजिटल क्रांति और अन्य भौतिकतावादी वस्तुएं जो विज्ञान से हमें मिली हैं, वे हमारे लिए सुख तो पहुंचाती हैं, लेकिन इनमें से कई तो हमारे लिए नुकसानदायक भी हैं। विज्ञान और नई तकनीक का प्रयोग उचित तरीके से किया जाए, तो वह वरदान है, अन्यथा वह अभिशाप बनेगा। विज्ञान ने मनुष्यों को पृथ्वी खत्म करने का हथियार दे दिया है। इससे कैसे शांति आएगी? आज बेशक विज्ञान ने उपलब्धियों के झंडे गाड़े हैं, लेकिन फिर भी दुनिया में अशांति है। विश्व शांति भंग होने का एक कारण जो सबसे बड़ा है, वह ये है कि वैज्ञानिकों ने बेवजह ही दुनिया को तबाह करने वाले हथियार, परमाणु बम, मिसाइलों का निर्माण कर दिया है।

– राजेश कुमार चौहान, जलंधर

दोहरा रवैया

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जी-20 शिखर बैठक का बहिष्कार क्यों कर रहे हैं? यह सम्मेलन पहली बार अफ्रीकी महाद्वीप पर हो रहा है, जिसमें दक्षिण अफ्रीका 22-23 नवंबर तक इस बैठक की मेजबानी करेगा। यह अफ्रीकी महाद्वीप के लिए अहम पल है और इसकी अध्यक्षता में एकजुटता, स्थिरता, समानता जैसे विषय पर चर्चा होगी। ऐसा नहीं है कि दक्षिण अफ्रीका को यह दायित्व अभी एक दो महीना पहले दिया गया हो। उसे आधिकारिक तौर पर जी 20 में काफी समय पहले जगह दी गई। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में दुनिया में शांति कायम करने के लिए आए हैं कि हर देश को अस्थिर करने का इरादा लेकर आए हैं? कभी वे कहते हैं कि अफ्रीकी देश नाइजीरिया पर वे आक्रमण करेंगे, क्योंकि वहां ईसाई समुदाय सुरक्षित नहीं है। यूक्रेन और गाजा पट्टी में बेकसूर मर रहे हैं, लेकिन वहां तो ट्रंप कभी नहीं कहते कि वे रूस और इजराइल पर हमला करेंगे!

– जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

आदेश के मायने

'सुरक्षा और संवेदना' (संपादकीय, 8 नवंबर) पढ़ा। सार्वजनिक स्थलों से आवारा कुत्तों को हटाने के बारे में सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय स्वागत योग्य और जन सुरक्षा के लिहाज से अहम है। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर सही तरीके से अमल तब तक संभव नहीं होगा, जब तक राज्य सरकारों के स्थानीय निकाय गंभीरता से इस आदेश को लागू नहीं करते। राज्यों के ढुलमुल रवैये के कारण ही आवारा कुत्ते तथा बेसहारा पशु दुर्घटनाओं का मुख्य कारण बनते हैं। राज्यों को स्थानीय निकायों द्वारा उन स्थलों की पहचान गंभीरता से करनी चाहिए जहां आवारा पशु तथा कुत्ते पाए जाते हैं। उनका बंध्याकरण और टीकाकरण कर जिस स्थल से उन्हें उठाया गया था, वहीं पर ही न छोड़ कर उनके लिए बनाए गए आश्रय स्थलों पर ले जाया जाए। इस पूरी कवायद पर अब कड़ी निगरानी करने की जरूरत है।

– वेद प्रकाश, गुरुग्राम

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

विशेष
जनसत्ता | 12 नवंबर, 2025

देश में त्योहारों के दौरान भर्ती 17 फीसद बढ़ी : रपट

देश में अगस्त-अक्तूबर के दौरान भर्तियों में सालाना आधार पर 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उपभोक्ता भावना में सुधार, आकर्षक त्योहारी पेशकशों और भौगोलिक विस्तार के दम पर यह वृद्धि दर्ज की गई। कार्यबल समाधान प्रदाता 'एडेको इंडिया' की रपट के अनुसार, 2024 की समान अवधि की तुलना में इस वर्ष 'गिग' (अल्पकालिक) और अस्थायी नौकरियों में 25 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। आंतरिक आंकड़ों एवं बाहरी रिपोर्ट के विश्लेषण पर आधारित इस रिपोर्ट में कहा गया कि दशहरा से पहले और उसके बाद के हफ्तों में खुदरा, ई-कामर्स, बीएफएसआइ (बैंकिंग, वित्तीय सेवाएं एवं बीमा), लाजिस्टिक्स तथा आतिथ्य क्षेत्रों में अस्थायी कर्मचारियों की मांग में तेज उछाल देखने को मिला। एडेको ने 2025 में 2.16 लाख 'गिग' और अस्थायी नौकरियों का अनुमान लगाया था लेकिन सिर्फ तीन महीनों में ही इस क्षेत्र में अस्थायी भर्ती में 37 प्रतिशत और 'गिग वर्कर' की तैनाती में 15-20 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

उत्तराखंड क्रांति दल आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा

सुनील दत्त पांडे

वक्त की बात

उत्तराखंड क्रांति दल उत्तराखंड राज्य के 25 सालों में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है और आज इस दल का अस्तित्व उत्तराखंड में न के बराबर है। उत्तराखंड की पांचवीं विधानसभा में इस बार उत्तराखंड क्रांति दल का एक भी विधायक चुनकर नहीं आया है। 2017 और 2022 के विधानसभा चुनाव में उत्तराखंड क्रांति दल का राज्य से सफाया हो गया था। लोकसभा में तो उत्तराखंड क्रांति दल एक भी सीट नहीं ले पाया।

उत्तराखंड राज्य गठन के बाद राज्य में पहले विधानसभा चुनाव 2002 में हुआ था तब उत्तराखंड क्रांति दल के चार सदस्य चुनकर आए थे और उत्तराखंड में दल के सबसे बड़े कद्दावर नेता और दल के फील्ड मार्शल दिवाकर भट्ट अपनी विधानसभा सीट कीर्ति नगर से चुनाव हार गए थे और इस तरह उत्तराखंड क्रांति दल को 2002 में तगड़ा झटका लगा। 2007 में विधानसभा चुनाव में उत्तराखंड क्रांति दल के तीन विधायक चुने गए और उनकी संख्या 2002 के विधानसभा चुनाव के मुकाबले एक संख्या घट गई और 2012 के चुनाव में उत्तराखंड क्रांति दल के केवल एक विधायक प्रीतम सिंह पवार टिहरी विधानसभा क्षेत्र से जीत पाए और पार्टी के दिग्गज नेता दिवाकर भट्ट जैसे कई नेताओं को राज्य की जनता ने नकार दिया। 2007 के विधानसभा चुनाव में दिवाकर भट्ट चुनाव जीत कर आए और भाजपा की भुवन चंद्र खंडूरी सरकार में मंत्री बन गए और उसके बाद भट्ट भाजपा की रमेश पोखरियाल निशंक की सरकार में भी मंत्री रहे और उसके बाद तो उत्तराखंड क्रांति दल का राज्य में सफाया ही हो गया। उत्तराखंड क्रांति दल पर भाजपा की पिछलग्गू होने का आरोप लगा। राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि 2007 में भाजपा की सरकार में शामिल होना उत्तराखंड क्रांति दल की सबसे बड़ी भूल थी, जिसे भाजपा को तो राजनीतिक फायदा हुआ परंतु उत्तराखंड क्रांति दल का बिल्कुल सफाया हो गया और सरकार में रहते हुए उत्तराखंड क्रांति दल के नेताओं पर कई आरोप लगे, जिसका परिणाम यह हुआ की 2012 के विधानसभा चुनाव में उत्तराखंड क्रांति दल का केवल एक ही विधायक चुनकर आया और 2017 के चुनाव में तो उत्तराखंड क्रांति दल का सफाया हो गया।

आज उत्तराखंड क्रांति दल राज गठन के 25 साल पूरे होने पर अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है जबकि 25 जुलाई 1979 में उत्तराखंड क्रांति दल का गठन मसूरी में अलग उत्तराखंड राज्य की गठन की मांग को लेकर हुआ था। तब उत्तराखंड राज्य की जनता की आवाज बन गया था और उत्तराखंड क्रांति दल की लहर पूरे राज्य में चल रही थी उत्तराखंड को चुनाव आयोग ने कुर्सी चुनाव निशान दिया था और उत्तराखंड क्रांति दल का झंडा हरा और केसरिया रंग का झंडा है। 1994 में उत्तराखंड क्रांति दल ने राज्य गठन की मांग को लेकर व्यापक आंदोलन चलाया और जिसने राज्य में जबरदस्त रूप धारण कर लिया और इस आंदोलन की वजह से ही 9 नवंबर 2000 को केंद्र की अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने उत्तराखंड राज्य का गठन किया। उत्तराखंड क्रांति दल विधानसभा चुनाव में दहाई आंकड़ा प्राप्त नहीं कर पाया।

दरअसल उत्तराखंड क्रांति दल के नेता आपस में ही लड़ते झगड़ते रहते हैं और उत्तराखंड राज्य बनने के बाद दो बार इस दल का विभाजन हो चुका है। उत्तराखंड क्रांति दल का गठन 25 जुलाई 1979 को हुआ था। यह पार्टी अलग राज्य की मांग के लिए आंदोलन का एक हिस्सा थी, जिसकी स्थापना मसूरी में कुमाऊं विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति कुलपत देवी दत्त पंत उत्तराखंड क्रांति दल के संस्थापक अध्यक्ष बने और इसके संस्थापकों में उत्तराखंड के गांधी कहलाए जाने वाले इंद्रमणि बडोनी, काशी सिंह ऐरी , दिवाकर भट्ट और सुरेंद्र कुकरेती प्रमुख नाम है। दरअसल उत्तराखंड क्रांति दल के नेता आपस में ही लड़ते रहते हैं और राज्य गठन के बाद एक बार इस दल का बंटवारा भी हो चुका है।

46 साल पहले उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों के लिए एक अलग राज्य उत्तराखंड का निर्माण की मांग को लेकर उत्तराखंड क्रांति दल ने सबसे पहले लड़ाई शुरू की थी और उत्तराखंड राज्य गठन के बाद 2002 में पहले विधानसभा चुनाव में राज्य की जनता ने क्षेत्रीय दल उत्तराखंड क्रांति दल को खारिज कर दिया। राजनीतिक विश्लेषक डाक्टर अवनीत कुमार घिल्डियाल का कहना है कि उत्तराखंड राज्य गठन के बाद 2002 में पहले विधानसभा चुनाव में राज्य की जनता ने पूरे प्रदेश और राष्ट्र को यह संदेश दिया कि उत्तराखंड की जनता क्षेत्रवाद में विश्वास नहीं करती है इसलिए राज्य की जनता ने राष्ट्रीय दलों कांग्रेस और भाजपा को ही तवज्जो दी और उत्तराखंड क्रांति दल को नकार दिया। इस तरह उत्तराखंड राज्य निर्माण की लड़ाई लड़ने वाला उत्तराखंड क्रांति दल 25 सालों अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। जब पूरा उत्तराखंड राज्य शासन प्रशासन सरकार राज्य गठन के 25 साल पूरे होने पर रजत जयंती महोत्सव धूमधाम से मना रहा है, तब इस राज्य के निर्माण के आंदोलन का बीज बोने वाला उत्तराखंड क्रांति दल कहीं नहीं दिखाई दे रहा है और ना ही जनता को इसके नेताओं के प्रति सहानुभूति है और उत्तराखंड क्रांति दल और उसके नेता आज प्रदेश की राजनीति में अप्रासंगिक हो चुका है।

'कम खाओ, ज्यादा चलो' से अलग है वजन कम करने का विज्ञान

मोटापा

एक ताजा शोध के मुताबिक वजन कम करने का विज्ञान 'कम खाओ, ज्यादा चलो' की प्रचलित मान्यता से अलग है। दशकों तक हमें बताया गया कि वजन कम करना केवल आत्म-नियंत्रण का मामला है : कम खाओ, ज्यादा चलो। लेकिन आधुनिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि वास्तविकता इससे अलग है।

भविष्य में, शोध यह संभव बना सकता है कि शरीर को पुराने वजन पर लौटने के लिए प्रेरित करने वाले संकेतों को स्थायी रूप से कम किया जा सके। साथ ही, अच्छी स्वास्थ्य स्थिति का मतलब हमेशा अच्छा वजन नहीं होताझ नियमित व्यायाम, संतुलित पोषण, पर्याप्त नींद और मानसिक स्वास्थ्य दिल और मेटाबालिक स्वास्थ्य में सुधार ला सकते हैं।

भारत में मोटापा एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन गया है। देश में लगभग 35 करोड़ लोग मोटापे से प्रभावित हैं और अनुमान है कि यह संख्या 2050 तक 45 करोड़ तक पहुंच सकती है। बदलती जीवनशैली, शहरीकरण, अस्वास्थ्यकर खान-पान की आदतों, और शारीरिक निष्क्रियता के कारण मोटापे की समस्या बढ़ रही है। मोटापे से दिल की बीमारियां, मधुमेह, और गठिया जैसी कई स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। इस कारण देश में वजन कम करने के खान-पान से लेकर योग-व्यायाम तक तरह तरह तरकीब लोग अपना रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी देशवासियों से खाने में तेल की दस फीसद कम खपत करने का आ''ान किया है। ताजा शोध के मुताबिक वजन कम करने का विज्ञान 'कम खाओ, ज्यादा चलो' की प्रचलित मान्यता से अलग है। दशकों तक हमें बताया गया कि वजन कम करना केवल आत्म-नियंत्रण का मामला है : कम खाओ, ज्यादा चलो। लेकिन आधुनिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि वास्तविकता इससे अलग है।

हजारों साल पहले हमारे मानव पूर्वजों के लिए शरीर की चर्बी जीवन रेखा थी, बहुत कम चर्बी से भूखमरी का खतरा, बहुत अधिक चर्बी से धीमी गति का खतरा। समय के साथ, मानव शरीर ने ऊर्जा भंडारण की रक्षा करने के लिए जटिल जैविक रक्षा तंत्र विकसित किए, जो दिमाग में जुड़े थे। आज, जब भोजन हर जगह उपलब्ध है और शारीरिक गतिविधि वैकल्पिक है, तो वही तंत्र वजन घटाना मुश्किल बनाते हैं। जब कोई व्यक्ति वजन घटाता है, तो शरीर इसे जीवन पर खतरे के रूप में देखता है : भूख वाले हार्मोन बढ़ते हैं, खाने की लालसा बढ़ती है और ऊर्जा खर्च घटता है। यह तंत्र कभी भूख और भोजन की अनिश्चितता में जीवन बचाने के लिए विकसित हुआ था, लेकिन आज यह चुनौती बन गया है। हमारा दिमाग भी वजन की रक्षा के लिए शक्तिशाली तंत्र रखता है और यह पुराने वजन को याद रख सकता है। इसका मतलब है कि यदि शरीर कभी भारी रहा है, तो दिमाग बाद में उसे सामान्य मानकर उसकी रक्षा करता है। यही कारण है कि कई लोग डाइट के बाद वजन वापस पा लेते हैं। यह आत्म-अनुशासन की कमी नहीं, बल्कि जैविक प्रतिक्रिया है।

वजन कम करने वाली कुछ दवाएं उम्मीद जगाती हैं। ये दवाएं आंत के हार्मोन्स की नकल कर दिमाग को भूख कम करने का संकेत देती हैं। हालांकि, सभी पर इसका समान असर नहीं होता और कुछ में दुष्प्रभावों की वजह से दवा जारी रखना मुश्किल हो जाता है।

अक्सर, इलाज बंद करने के बाद शरीर का जैविक तंत्र वापस सक्रिय हो जाता है। भविष्य में, शोध यह संभव बना सकता है कि शरीर को पुराने वजन पर लौटने के लिए प्रेरित करने वाले संकेतों को स्थायी रूप से कम किया जा सके। साथ ही, अच्छी स्वास्थ्य स्थिति का मतलब हमेशा अच्छा वजन नहीं होता झ नियमित व्यायाम, संतुलित पोषण, पर्याप्त नींद और मानसिक स्वास्थ्य दिल और मेटाबालिक स्वास्थ्य में सुधार ला सकते हैं। *(ए)*

समाज व्यापी दृष्टिकोण

मोटापा केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है। इसे रोकने के लिए पूरे समाज की भूमिका जरूरी है। स्कूलों में स्वास्थ्यकर भोजन, बच्चों के लिए जंक फूड की मार्केटिंग कम करना, पैदल और साइकिल चलाने के अनुकूल नगर नियोजन, रेस्तरां में मानकीकृत भोजन आकार आदि। शोध यह भी बताता है कि जीवन के शुरुआती चरण (गर्भावस्था से लगभग सात साल तक) में बच्चों के वजन नियंत्रण तंत्र पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। माता-पिता का खान-पान, शिशुओं का पोषण और शुरुआती जीवनशैली आदतें मस्तिष्क में भूख और चर्बी भंडारण को प्रभावित कर सकती हैं।

वजन घटाना चाहते हैं तो

यदि आप वजन घटाना चाहते हैं, तो डाइट के बजाय सतत और स्वास्थ्यपरक आदतों पर ध्यान दें। पर्याप्त नींद भूख को नियंत्रित करने में मदद करती है और नियमित गतिविधि, जैसे पैदल चलना, रक्त शर्करा और हृदय स्वास्थ्य में सुधार लाता है। मोटापा व्यक्तिगत असफलता नहीं, बल्कि जैविक स्थिति है जो हमारे दिमाग, जीन और वातावरण से आकार लेती है। अच्छी खबर यह है कि न्यूरोसाइंस और फार्माकोलॉजी में प्रगति नई उपचार संभावनाएं दे रही है, और रोकथाम रणनीतियां भविष्य की पीढ़ियों के लिए स्थिति बदल सकती हैं।

जल संचय जन भागीदारी में तेलंगाना का प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ

जनसत्ता ब्यूरो

उपलब्धि

जल संचय जन भागीदारी में तेलंगाना राज्य का प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्य-केंद्र शासित प्रदेश में सबसे ऊपर रहा। वहीं इस श्रेणी में दूसरे स्थान पर छत्तीसगढ़ और तीसरे स्थान पर राजस्थान रहा।

दरअसल, मंगलवार को जल शक्ति मंत्रालय ने जल संचय जन भागीदारी (जेएसजेबी) पहल के तहत उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों के लिए प्रथम पुरस्कारों की घोषणा की। विज्ञान भवन में इन्हें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु 18 नवंबर को प्रथम जल संचय जन भागीदारी (जेएसजेबी) पुरस्कार प्रदान करेंगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जल शक्ति के लिए जन शक्ति के दृष्टिकोण से प्रेरित, जल संचय जन भागीदारी पहल 6 सितंबर 2024 को सूरत में आरंभ की गई थी। पहल के तहत राज्यों को पांच क्षेत्रों में विभाजित कर कम से कम दस हजार कृत्रिम पुनर्भरण और जल भंडारण संरचनाएं स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। पूर्वोत्तर और पहाड़ी राज्यों के जिलों के लिए यह लक्ष्य तीन हजार है, जबकि देश भर के नगर निगमों के लिए यह दस हजार का लक्ष्य है। इन संरचनाओं में भवन छतों पर वर्षा जल संचयन के साथ ही झीलों, तालाबों और बावड़ियों का पुनरुद्धार करना शामिल है।

प्रथम जल संचय जन भागीदारी (जेएसजेबी) सम्मान के तहत इस वर्ष कुल 100 पुरस्कारों की घोषणा की गई है। इनमें तीन शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्य, 67 जिले, छह नगर निगम, एक शहरी स्थानीय निकाय, दो सहयोगी मंत्रालय/विभाग, दो उद्योग, तीन गैर सरकारी संगठन, दो परोपकारी और 14 नोडल अधिकारी शामिल हैं। जेएसजेबी पोर्टल पर अपलोड किए गए सत्यापित आंकड़ों के आधार पर पुरस्कार विजेताओं का चयन किया गया है। इस कार्य में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले श्रेणी एक के जिलों को 2 करोड़ रुपए प्रति जिले से पुरस्कृत किया जा रहा है, जबकि श्रेणी दो और तीन के जिलों को क्रमशः एक करोड़ रुपए प्रति जिले और 25 लाख रुपए के पुरस्कार दिये जाएंगे। अन्य जिलों को भी प्रोत्साहन स्वरूप सम्मानित किया जा रहा है।

छठवें राष्ट्रीय जल पुरस्कारों के विजेताओं की घोषणा

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल ने मंगलवार को श्रम शक्ति भवन में छठवें राष्ट्रीय जल पुरस्कारों के विजेताओं की सूची की घोषणा की। राष्ट्रपति की उपस्थिति में 18 नवंबर को ये पुरस्कार 10 श्रेणियों में दिए जाएंगे। इस बार सर्वश्रेष्ठ राज्य की श्रेणी में प्रथम स्थान महाराष्ट्र को, गुजरात को दूसरा और हरियाणा को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। प्रत्येक पुरस्कार विजेता को एक प्रशस्ति पत्र और एक ट्राफी के साथ-साथ कुछ श्रेणियों में नकद पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे। बता दें कि वर्ष 2024 के लिए छठे राष्ट्रीय जल पुरस्कारों के लिए संयुक्त विजेताओं सहित 46 विजेताओं की घोषणा की गई है।

प्रथम जल संचय जन भागीदारी (जेएसजेबी) सम्मान के तहत इस वर्ष कुल 100 पुरस्कारों की घोषणा की गई है। इनमें तीन शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्य, 67 जिले, छह नगर निगम, एक शहरी स्थानीय निकाय, दो सहयोगी मंत्रालय/विभाग, दो उद्योग, तीन गैर सरकारी संगठन, दो परोपकारी और 14 नोडल अधिकारी शामिल हैं।

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल ने मंगलवार को श्रम शक्ति भवन में छठवें राष्ट्रीय जल पुरस्कारों के विजेताओं की सूची की घोषणा की। राष्ट्रपति की उपस्थिति में 18 नवंबर को ये पुरस्कार 10 श्रेणियों में दिए जाएंगे। इस बार सर्वश्रेष्ठ राज्य की श्रेणी में प्रथम स्थान महाराष्ट्र को, गुजरात को दूसरा और हरियाणा को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

भारत 2032 तक 50 लाख टन हरित हाइड्रोजन क्षमता जुटा लेगा

अनुमान

भारत ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए हाइड्रोजन क्षेत्र में अधिक से अधिक निवेश कर रहा है। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के सचिव संतोष कुमार सारंगी ने मंगलवार को कहा कि वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारत अपने राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के माध्यम से 2030 तक 50 लाख टन (एमएमटी) वार्षिक हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता हासिल करने के लक्ष्य से चूक सकता है। हालांकि वह इसे 2032 तक हासिल कर लेगा।

हरित हाइड्रोजन पर तीसरे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए सारंगी ने कहा, ' हम लक्ष्य (2030 तक 50 लाख टन की वार्षिक उत्पादन क्षमता ग्रीन हाइड्रोजन) से पीछे रह सकते हैं। देश 2032 तक 50 लाख टन वार्षिक हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता हासिल कर लेगा।' यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 2023 में शुरू किए गए राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के तहत भारत ने 2030 तक हरित हाइड्रोजन की वार्षिक उत्पादन क्षमता 50 लाख टन करने का लक्ष्य रखा है।

वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 50 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जोड़ने की वार्षिक आवश्यकता के बारे में सारंगी ने कहा कि भारत बिजली खरीद या बिक्री समझौतों पर हस्ताक्षर के लिए पहले से ही लंबित 40 गीगावाट क्षमता पर ध्यान केंद्रित करेगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान में कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में 160 गीगावाट की नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं प्रक्रियाधीन हैं। भारत को 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हर साल कम से कम 50 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जोड़नी होगी।

परियोजनाओं के लिए नए प्रस्ताव आमंत्रित

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री प्र''ाद जोशी ने अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने वाली शुरुआती परियोजनाओं के लिए नए प्रस्ताव मंगलवार को आमंत्रित किए। इनमें 100 करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ हरित हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए 'बायोमास' का उपयोग भी शामिल है। हरित हाइड्रोजन पर तीसरे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि कार्यान्वयन एजंसी बीआइआरएसी (जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद) इच्छुक एजंसियों एवं अनुसंधान संस्थानों से भागीदारी के वास्ते जल्द ही प्रस्तावों के लिए आमंत्रण जारी करेगी। उन्होंने कहा कि मुझे ऐसे नवोन्मेषी प्रस्ताव मिलने की उम्मीद है जो हमें अपने हरित हाइड्रोजन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकें। जोशी ने कहा कि राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन (एनजीएचएम) के तहत देश नवोन्मेषी प्रौद्योगिकी का विकास कर रहा है।

उन्होंने कहा कि हमारा सबसे अधिक ध्यान ऐसी नवीन प्रौद्योगिकियों के विकास पर है जो हरित हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए 'बायोमास' या अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग करें।' मंत्री ने कहा कि मैं पायलट परियोजनाओं के लिए नए प्रस्तावों की घोषणा कर रहा हूं, जो हरित हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए 'बायोमास' के उपयोग सहित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करते हैं।' जोशी ने बताया कि इन शुरुआती स्तर की परियोजनाओं के लिए कुल 100 करोड़ रुपए का आबंटन किया गया है जो एनजीएचएम के तहत स्टार्टअप परियोजनाओं के लिए पहले से आबंटित 100 करोड़ रुपए के अतिरिक्त है। उन्होंने राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन का 'लोगो' भी जारी किया। एनजीएचएम का उद्देश्य भारत को हरित हाइड्रोजन के उत्पादन, उपयोग एवं निर्यात का वैश्विक केंद्र बनाना है। इसका परिव्यय 19,744 करोड़ रुपए है और इसका लक्ष्य 2030 तक प्रति वर्ष 50 लाख टन हरित हाइड्रोजन का उत्पादन करना है।

इसका लक्ष्य 125 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता, आठ लाख करोड़ रुपए से अधिक का निवेश और छह लाख से अधिक हरित रोजगार उत्पन्न करना है। *(ए)*

मुसीबत

नई दिल्ली में वायु प्रदूषण के बीच धुंध से ढकी सड़क पर चलते वाहन।

छियासी फीसद किसान कृषि प्रौद्योगिकी नवोन्मेषण से दूर

जनसत्ता ब्यूरो

रपट

भारत को प्रौद्योगिकी से अभी भी अछूते अधिकांश किसानों तक पहुंचने के लिए खंडित कृषि नवाचार से हटकर राज्य-स्तरीय परीक्षण मंच और एकीकृत डेटा ढांचे के माध्यम से प्रणालीगत एकीकरण की ओर बढ़ना होगा। उद्योग मंडल एसोचैम की मंगलवार को जारी एक रपट में यह बात कही गई है।

उद्योग निकाय ने कहा कि 86 फीसदी किसान अभी भी अधिकांश कृषि-प्रौद्योगिकी नवोन्मेषण की पहुंच से बाहर हैं और प्रौद्योगिकी के सत्यापन, व्यावसायीकरण और छोटे किसानों तक उनकी पहुंच के तरीके में मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता है। रपट में कहा गया, भविष्य के लिए तैयार कृषि प से परिभाषित होगी कि वह प्रौद्योगिकी को समावेशन के साथ, डेटा को निर्णय लेने के साथ और नवाचार को प्रभाव के साथ कितनी प्रभावी ढंग से एकीकृत करता है। एसोचैम की रपट में वास्तविक दुनिया की परिस्थितियों में प्रौद्योगिकी के परीक्षण के लिए सहयोगी परीक्षण स्थल के रूप में काम करने को राज्य-स्तरीय कृषि-तकनीकी सैंडबाक्स स्थापित करने की सिफारिश की गई है। प्रस्तावित सैंडबाक्स सरकारी एजेंसियों, नवोन्मेषण और अनुसंधान संस्थानों को पूर्ण पैमाने पर तैनाती से पहले समाधान को सत्यापित करने के लिए एक साथ लाएंगे। रपट में कहा गया है कि 90 से ज़्यादा आईसीएआर संस्थान, 60 राज्य कृषि विश्वविद्यालय और 700 से ज्यादा कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) होने के बावजूद, भारत में उभरती कृषि प्रौद्योगिकी के परीक्षण के लिए एक एकीकृत प्रणाली का अभाव है।

वर्तमान तंत्र खंडित और धीमा बना हुआ है, जिससे नवाचार के लिए स्पष्ट सत्यापन के रास्ते नहीं खुल पा रहे हैं। प्रत्येक सैंडबआक्स राज्य कृषि विभागों के भीतर स्थापित होगा, जिसमें आईसीएआर संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और नाबार्ड सहित संबद्ध विभागों और भागीदारों की हिस्सेदारी होगी। कृषि मंत्रालय और नीति आयोग की सह-अध्यक्षता वाली एक राष्ट्रीय संचालन समिति शासन और वित्तपोषण की देखरेख करेगी।

संपादकीय जागरण

बुधवार, 12 नवंबर, 2025 : मार्गशीर्ष कृष्ण - 8 वि. 2082

रफ्तार से ज्यादा जरूरी होता है, सही दिशा में दौड़ना

आतंक का नया रूप

अंततः यह आशंका सच साबित हुई कि दिल्ली में लाल किले के निकट 10 लोगों की जान लेने वाला कार धमाका आतंकी घटना हो सकता है। विस्फोटक से लैस कार का चालक डाक्टर उमर मोहम्मद उन संदिग्ध आतंकियों का साथी निकला, जिनके ठिकानों से लगभग तीन हजार किलो विस्फोटक और घातक हथियार बरामद किए गए थे। आतंकी दिल्ली में जिस तरह 14 वर्षों बाद एक बड़ी घटना को अंजाम देने में सफल हो गए, उसने मोदी सरकार के साथ पुलिस, खुफिया संगठनों एवं आतंकवाद निरोधक एजेंसियों की चुनौती बढ़ा दी है। सुरक्षा एजेंसियां आतंकियों और उनके ठिकानों तक तो पहुंच गईं, लेकिन वे उनके पूरे नेटवर्क को नाकाम नहीं कर सकीं। केंद्र सरकार के कठोर रुख को देखते हुए इस पर भरोसा किया जा सकता है कि सुरक्षा एजेंसियां आखिरकार इस पूरे आतंकी नेटवर्क को ध्वस्त करने में सक्षम होंगी, लेकिन समस्या केवल एक आतंकी नेटवर्क की नहीं है। हाल में कई ऐसे आतंकी नेटवर्क पकड़े गए हैं, जो देश के अलग-अलग हिस्सों में सक्रिय होकर आतंक की साजिश रच रहे थे। स्पष्ट है कि सुरक्षा एजेंसियों और विशेष रूप से आतंक निरोधक एजेंसियों को और अधिक सतर्कता का भी परिचय देना होगा और आपसी सहयोग का भी। कश्मीर के आतंकियों ने जिस तरह फरीदाबाद में ठिकाना बना लिया, उसे देखते हुए यह साफ है कि वे देश में कहीं पर और किसी भी रूप में छिपे हो सकते हैं।

दिल्ली को दहलाने वाली घटना के लिए जिन आतंकियों को जिम्मेदार माना जा रहा है, उनके तार जिस तरह पाकिस्तान से जुड़ रहे हैं, उस पर हैरानी नहीं। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आतंकवाद के खिलाफ नई नीति के तहत क्या पाकिस्तान के खिलाफ नए सिरे से कोई कठोर कार्रवाई की जाएगी? यह प्रश्न इसलिए भी, क्योंकि आपरेशन सिंदूर अभी जारी है। निःसंदेह चुनौती केवल पाकिस्तान को सबक सिखाने की ही नहीं, इसकी भी है कि उसके उकसावे में आकर कश्मीर से लेकर केरल तक आतंक की राह पर चलने वालों पर कैसे लगाम लगे? यह चुनौती केवल सरकार के समक्ष ही नहीं, समाज और विशेष रूप से मुस्लिम समाज के सामने भी है। यह बड़े संकट का सूचक है कि डाक्टरी की पढ़ाई करने वाले भी आतंकी बनना पसंद कर रहे हैं। इससे आतंक एक नए रूप में उभर रहा है और यह बता रहा है कि मजहबी उन्माद कहीं व्यापक रूप में फैल गया है। इस गंभीर समस्या का सामना तब संभव है, जब सरकारी तंत्र के साथ मुस्लिम समाज का राजनीतिक, धार्मिक नेतृत्व यह देखने को तैयार होगा कि उसके पढ़े-लिखे युवा भी आतंक का पाठ क्यों पढ़ रहे हैं? निःसंदेह वह ऐसा तभी कर पाएगा, जब आतंक पर राजनीतिक रोटियां सेंकने वालों के बहकावे में नहीं आएगा। यह किसी से छिपा नहीं कि अपने देश में आतंकवाद पर कैसी सस्ती राजनीति की जाती है।

समन्वय पर सवाल

लाल किले के सामने हुए धमाके के आतंकी हमला होने की पुष्टि के साथ ही दिल्ली पुलिस के साथ ही सुरक्षा व खुफिया एजेंसियों की कार्यप्रणाली सवालों के घेरे में आना स्वाभाविक है। यह घटना दिल्ली पुलिस के साथ ही एनसीआर की पुलिस के आपसी समन्वय पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। फरीदाबाद में विगत 15 दिनों से हरियाणा पुलिस जम्मू कश्मीर पुलिस के साथ मिलकर आतंकियों के विरुद्ध अभियान चला रही थी। इस दौरान, एक महिला समेत दो आतंकियों को भी पकड़ा गया था और बड़ी मात्रा में विस्फोटक भी बरामद किया गया था। लेकिन दिल्ली में जिस तरह पुलिस सतर्क नहीं थी, उसे देखकर ये मानने में कोई संदेह नहीं है कि साथ लगते शहर में हो रही इतनी बड़ी गतिविधि की जानकारी दिल्ली पुलिस को नहीं थी। अन्यथा, दिल्ली पुलिस की सतर्कता का स्तर कुछ और होता।

> इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि यदि पुलिस या खुफिया एजेंसियां सतर्क होतीं, तो आतंकी को राजधानी की सीमा में ही दबोच लिया जाता

फरीदाबाद की अल फ्लाह यूनिवर्सिटी से जुड़े जैश-ए-मोहम्मद के आतंकियों में से एक बड़ी मात्रा में विस्फोटक बरामदगी के दिन ही फरीदाबाद से दिल्ली में प्रवेश कर इतनी बड़ी घटना को अंजाम देता है। ऐसे में इससे कतई इन्कार नहीं किया जा सकता कि यदि दिल्ली पुलिस या अन्य सुरक्षा व खुफिया एजेंसियां सतर्क होतीं तो उसे बदरपुर बार्डर से दिल्ली की सीमा में घुसते ही धर-दबोचा जाता।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या शैक्षणिक संस्थानों में 'वंदे मातरम्' का गायन अनिवार्य किया जाना चाहिए?

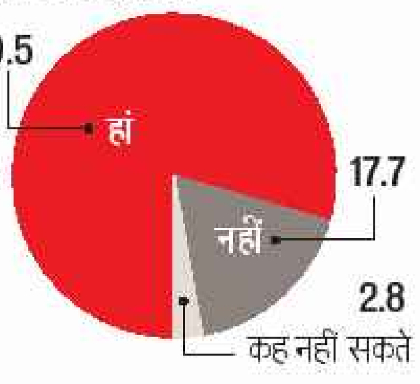

आज का सवाल

क्या लाल किला विस्फोट के पीछे पाकिस्तान का हाथ दिख रहा है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

अभी खत्म नहीं हुआ आतंक के खिलाफ युद्ध

अशोक कुमार

दिल्ली में लाल किले की घटना यही बताती है कि दुश्मन भले ही कुछ कमजोर हो गया है, फिर भी वह वार करने में सक्षम है

दिल्ली में लाल किले के पास हुए शक्तिशाली विस्फोट ने फिर याद दिला दिया कि आतंकवाद के खिलाफ भारत की जंग अभी खत्म नहीं हुई है। आपरेशन सिंदूर के कुछ ही महीने बाद यह आतंकी घटना इसकी पुष्टि करती है कि लड़ाई बस एक नए चरण में प्रवेश कर गई है। दुश्मन हालांकि कमजोर हो गया है, फिर भी वार करने में सक्षम है। चिंताजनक बात यह है कि लाल किले की आतंकी घटना की साजिश बहुत सावधानी से रची गई। विस्फोट से कुछ घंटे पहले जम्मू-कश्मीर पुलिस ने हरियाणा पुलिस के साथ मिलकर फरीदाबाद की दो रिहायशी इमारतों में लगभग 3,000 किलोग्राम विस्फोटक बरामद किया। इनमें 350 किलोग्राम अमोनियम नाइट्रेट भी था। यह एक ऐसा उर्वरक होता है, जिसे आसानी से एक घातक बम में बदला जा सकता है। इस बरामदगी ने संभवतः एक और भी बड़ी त्रासदी को टाल दिया।

आतंकवाद के इस कृत्य में डाक्टरों की संलिप्तता यह बताती है कि कट्टरपंथ अब विश्वविद्यालयों, अस्पतालों जैसी उन जगहों में भी घुस रहा है, जिन्हें कभी सुरक्षित माना जाता था। लाल किला विस्फोट कांड की शुरुआत बीते 27 अक्टूबर को हुई, जब श्रीनगर में जैश-ए-मोहम्मद के पोस्टर दिखाई दिए। सीसीटीवी फुटेज से पुलिस को डा. आदिल की पहचान करने में मदद मिली, जिसे बाद में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से गिरफ्तार किया गया। जब जांचकर्ताओं ने अनंतनाग के सरकारी मेडिकल कालेज में उसके लाकर की तलाशी ली तो उन्हें वहां से एक असाल्ट राइफल मिली। उससे पूछताछ के दौरान पुलिस को फरीदाबाद में छिपे विस्फोटकों का एक जखीरा मिला, जिससे यह उजागर हुआ कि यह नेटवर्क कश्मीर से लेकर दिल्ली-एनसीआर तक व्यापक रूप से फैला हुआ है। इस नेटवर्क के तार भारत की सीमाओं से परे भी जुड़े रहे हैं। आतंकियों के हैंडलर पाकिस्तान में सक्रिय थे। इस मामले में एक अन्य आतंकी अल फलाह विश्वविद्यालय के डा. मुजम्मिल शकील को भी गिरफ्तार किया गया। विस्फोटकों से लदी कार भी एक डाक्टर उमर मोहम्मद चला रहा था। अधिकारियों के अनुसार संदिग्ध आत्मघाती हमलावर दिल्ली में घुस आया था और उसने गाड़ी एक मस्जिद के पास खड़ी कर दी थी। सीसीटीवी फुटेज से पता चलता है कि जब कार खड़ी थी, तब वह एक बार भी उससे बाहर नहीं निकला। ऐसा लग रहा था कि वह या तो निर्देशों का इंतजार कर रहा था या अपने लक्षित लक्ष्य का। जांचकर्ताओं का मानना है कि फरीदाबाद में हुई गिरफ्तारियों से समूह में दहशत फैल गई होगी। फंसने का अहसास होने पर उमर मोहम्मद ने हताशा या घबराहट में बम विस्फोट कर दिया होगा। हो सकता है कि उसके संचालक ने उसे जिंदा पकड़े जाने के बजाय आत्मघाती हमला करने के लिए राजी किया हो। जो भी हो, यह किसी से छिपा नहीं कि चरमपंथी समूह युवा शिक्षित दिमागों को यह विश्वास दिलाकर प्रभावित करते हैं कि शहादत एक महान कार्य है।

अवधेश राजपूत

एक बार फिर सुराग पाकिस्तान की ओर इशारा कर रहे हैं। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ लश्कर-ए-तैयबा और इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रोविंस जैसे आतंकी समूहों को एक साथ लाने के लिए काम कर रही है। इसका उद्देश्य भारत में आतंकी गतिविधियों को पुनर्जीवित करना और जम्मू-कश्मीर से परे भी अशांति फैलाना है। दिल्ली में विस्फोट के समय से पता चलता है कि यह आपरेशन सिंदूर का बदला लेने के लिए था, जो भारत का सफल आतंकवाद-रोधी अभियान था। पाकिस्तान की नई आक्रामकता वैश्विक राजनीति से भी जुड़ी हुई प्रतीत होती है। हाल में उसने मध्य एशिया में अपनी स्थिति का रणनीतिक लाभ उठाकर अमेरिका के साथ रिश्ते फिर से बनाने में कामयाबी हासिल की है। जब भी पाकिस्तान को वैश्विक समर्थन मिलता है, वह उसका इस्तेमाल आतंकी गतिविधियों के जरिए भारत को उकसाने के लिए करता है।

भविष्य में ऐसे हमलों को रोकने के लिए कड़ी सतर्कता की आवश्यकता है। सुरक्षा, सतर्कता केवल जम्मू-कश्मीर या दिल्ली जैसे बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि पूरे देश में होनी चाहिए। आतंकियों के पास से बरामद विस्फोटकों की विशाल मात्रा विनाश के संभावित पैमाने को उजागर करती है। इससे इस आशंका को बल मिलता है कि कई समन्वित विस्फोटों की योजना बनाई गई हो सकती है। इसलिए खुफिया नेटवर्क को मजबूत करना, शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में निगरानी कड़ी करना और अंतर-एजेंसी समन्वय में सुधार करना महत्वपूर्ण है। कूटनीतिक मोर्चे पर भारत को खुद को आतंकवाद के शिकार के रूप में पेश करते हुए गुप्त रूप से उसका समर्थन करने वाले पाकिस्तान के दोहरे खेल का पर्दाफाश करना भी जारी रखना चाहिए। जो देश अभी भी पाकिस्तान को आतंकवाद रोधी सहयोगी मानते हैं, उन्हें उसके वास्तविक रिकार्ड की याद दिलानी चाहिए। भारत को संयुक्त राष्ट्र, जी-20 और एफएटीएफ जैसे वैश्विक मंचों का उपयोग आतंकवाद को पनाह देने या उसे वित्तपोषित करने वाले देशों के खिलाफ सख्त अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई के लिए दबाव बनाने के लिए करना चाहिए। भारत को अपने अगले कदमों की योजना बनाते समय तत्काल सैन्य या जवाबी कार्रवाई से आगे बढ़ना चाहिए। आज आतंकवाद-निरोध के लिए बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है, जिसमें मजबूत कूटनीति, उन्नत रक्षा और खुफिया प्रणालियां, आंतरिक सामाजिक सामंजस्य और सबसे बढ़कर, अटूट राजनीतिक इच्छाशक्ति शामिल है।

लाल किले की घटना इसकी भी याद दिलाती है कि खतरा अभी भी हमारे बीच छिपा है और कमजोरी तथा विभाजन के क्षणों का इंतजार कर रहा है। यह लड़ाई सिर्फ पुलिस, सशस्त्र बलों या खुफिया एजेंसियों की नहीं, बल्कि हर भारतीय की लड़ाई है। सरकार और विपक्ष को एक साझा उद्देश्य के साथ मिलकर काम करना चाहिए, राष्ट्रीय सुरक्षा को राजनीति से ऊपर रखना चाहिए। नागरिकों को भी देश को अंदर से कमजोर करने वाली नफरत और गलत सूचनाओं के खिलाफ सतर्क, जिम्मेदार और एकजुट रहना चाहिए।

(लेखक उत्तराखंड के पूर्व डीजीपी हैं)

response@jagran.com

आतंक का पाठ पढ़ने वाले डाक्टर

राजधानी दिल्ली में लाल किले के पास जिस कार में भीषण धमाका हुआ और जिसके चलते दस से अधिक लोग मारे गए, उसका चालक भी एक डाक्टर ही निकला। नाम है उमर मोहम्मद। उसने विस्फोटक से लैस कार के साथ या तो खुद को उड़ा लिया या फिर किसी गफलत में धमाका कर बैठा। पुलवामा का उमर उन तीन डाक्टरों का सहयोगी निकला, जिनके पास से फरीदाबाद में करीब 3,000 किलो विस्फोटक और हथियार मिले थे। इनमें एक का नाम डाक्टर मुजम्मिल है और दूसरे का डाक्टर आदिल। दोनों कश्मीर के हैं। इनकी तीसरी साथी डाक्टर शाहीन है। शाहीन लखनऊ की है। इनके और साथियों की भी तलाश की जा रही है। हैरानी नहीं कि उनके संपर्क में और भी ऐसे डाक्टर निकलें, जो आतंकी हों। इन डाक्टरों के अतिरिक्त एक अन्य डाक्टर मोहिउद्दीन गुजरात पुलिस की गिरफ्त में है। उसने चीन से मेडिकल की पढ़ाई की है। उसे गुजरात पुलिस के आतंकवाद निरोधक दस्ते ने उसके दो साथियों के साथ हथियारों संग गिरफ्तार किया। वह अरंडी के बीज से बेहद घातक जहर राइसिन बनाने की तैयारी कर रहा था, ताकि एक साथ तमाम लोगों को मारा जा सके।

यह पहली बार नहीं है जब किसी आतंकी साजिश और घटना में किसी डाक्टर का नाम सामने आया हो। इसके पहले भी कई डाक्टर आतंक की राह पर चलते पकड़े जा चुके हैं। हाल के समय में इनमें सबसे चौंकाने वाला नाम पुणे के डाक्टर अदनान अली सरकार का था। उसे एनआइए ने 2023 में गिरफ्तार किया था। वह शहर का प्रतिष्ठित डाक्टर था, लेकिन खूंखार आतंकी समूह आइएस के लिए काम कर रहा था। बीते वर्षों में डाक्टरों के अलावा कई ऐसे आतंकी गिरफ्तार किए गए हैं, जो इंजीनियर थे। इनमें से एक बेंगलुरु में बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम कर रहा था और शामी विटनेस नाम से आनलाइन सक्रिय रहकर मुस्लिम युवाओं को आइएस में भर्ती के लिए उकसाता भी था और उन्हें सीरिया भेजने में मदद भी करता था। डाक्टरों और इंजीनियरों के अलावा अन्य तमाम उच्च शिक्षित मुस्लिम युवा आतंकी के रूप में पकड़े जा चुके हैं। कुछ

राजीव सचान

यह धारणा मिथ्या साबित हो चुकी है कि अशिक्षित अथवा गरीब ही मजहबी उन्माद से ग्रस्त होकर आतंकी बनते हैं

आतंकवाद की राह पर चल निकले डाक्टर ● एजेंसियां

इसलिए नहीं पकड़े जा सके, क्योंकि वे पुलिस के हत्थे चढ़ने के पहले आइएस या अलकायदा का हाथ बंटाने सीरिया और अफगानिस्तान पहुंच गए। अब ऐसे पढ़े-लिखे युवाओं की गिनती करना कठिन है, जो आतंकी बन गए।

यह धारणा नितांत मिथ्या सिद्ध हो चुकी है कि अशिक्षित अथवा गरीब ही मजहबी उन्माद से ग्रस्त होकर या फिर किसी प्रताड़ना के चलते आतंकी बनते हैं। पिछले दो-तीन दशकों में देश और दुनिया में न जाने कितने ऐसे मुस्लिम युवकों ने आतंकी बनना पसंद किया है, जो उच्च शिक्षित थे। दुनिया भर से ऐसे युवाओं को सबसे अधिक आकर्षित किया आइएस ने। भारत में केरल से लेकर कश्मीर तक में अनेक पढ़े-लिखे मुस्लिम युवा आतंकी बन चुके हैं। पहले उनके बारे में ऐसी खबरें आती थीं कि वे किसी जिहादी मौलवी-मौलाना के संपर्क आए और आतंकी बन गए। फिर ऐसी खबरें आने लगीं कि वे इंटरनेट पर जिहादी सामग्री देखकर आतंकी बन गए। कुछ तो मजहबी उन्माद से इतना अधिक भर गए कि उन्होंने गजवा ए हिंद या ऐसे ही किसी नाम से खुद का आतंकी गुट बना लिया। क्या यह किसी से छिपा है कि ऐसे नामों की प्रेरणा मजहबी मान्यताओं से ही मिलती है?

मेडिकल या इंजीनियरिंग की पढ़ाई करते हुए आतंकी बनना पसंद करने वालों के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वे प्रताड़ित थे या फिर आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे। वे चाहते तो खुशहाल जिंदगी जीते रह सकते थे, लेकिन उन पर आतंकी बनने का भूत सवार हुआ। ऐसा क्यों हुआ, इसका जवाब इस कथन में नहीं खोजा जा सकता कि आतंक का कोई मजहब नहीं होता। इस कथन को लेकर सदैव विवाद होता रहता है, लेकिन इसमें तो कोई विवाद ही नहीं कि मजहब की आड़ लेकर या फिर उसके सहारे ही आतंक के रास्ते पर चला जाता है। दुनिया भर के जिहादी गुट मजहबी मान्यताओं से ही लैस हैं। इन्हीं के सहारे वे अपनी जिहादी हरकतों को सही ठहराते हैं। उनके खिलाफ समय-समय पर फतवे जारी होते रहे हैं, लेकिन अब डाक्टरों, इंजीनियरों के भी आतंकी बनने से यही सिद्ध होता है कि वे प्रभावी नहीं साबित हो रहे हैं।

जिहादी आतंक एक विचारधारा की उपज है। इस खतरनाक विचारधारा से अकेले पुलिस, खुफिया एजेंसियां और सरकारें नहीं निपट सकतीं। उससे निपटना सरकारों के साथ समाज की भी जिम्मेदारी है। समाज इस जिम्मेदारी का निर्वहन तभी कर सकता है, जब वह यह समझेगा कि समस्या उन मजहबी सिद्धांतों और मूल्यों-मान्यताओं में है, जिनकी बड़ी आसानी से मनचाही व्याख्या कर ली जाती है। जिहादी आतंक से निपटने के लिए यह भी आवश्यक है कि सस्ती और संकीर्ण राजनीति न हो। दिल्ली में धमाका होते ही बिहार में मतदान के दूसरे चरण का उल्लेख करके चटखारे लेकर यह कहा जाने लगा, पता करो कहीं चुनाव हैं क्या? देश के किसी न किसी हिस्से से पुलिस की ओर से रह-रहकर किसी आतंकी माड्यूल का भंडाफोड़ करने, आतंकियों को गिरफ्तारी करने और उनके पास से विस्फोटक-हथियार बरामद करने की खबरें आती ही रहती हैं। इसका यह मतलब नहीं कि आतंकी खतरा कम हो रहा है। सच यह है कि वह दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, क्योंकि अब सम्मानित पेशे वाले भी आतंकी बन रहे हैं।

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

व्रत

विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति, जीवन की समस्याओं से मुक्ति तथा सुख-शांति और प्रगति की कामना हेतु लोग विविध प्रकार के व्रत करते हैं। इन व्रतों से जब उन्हें लाभ मिलता है तो उनकी आस्था और विश्वास और भी दृढ़ होता है। यही हमारी संस्कृति की वह धरोहर है, जिसे पीढ़ियां संजोकर आगे बढ़ाती आई हैं। पुराणों में उतानपाद के भाई प्रियव्रत का उल्लेख है-जिसका अर्थ है "व्रत का प्रिय"। व्रत का वास्तविक अर्थ है संकल्प-और संकल्प का अर्थ है प्रतिज्ञा। व्रत केवल यह नहीं कि हाथ में अक्षत, पुष्प और जल लेकर मंत्र पढ़े जाएं, व्रत का मूल भाव है निष्ठा और प्रतिज्ञा। यदि कोई व्यक्ति किसी को कोई वचन देता है-"मैं यह कार्य अवश्य करूंगा" तो वही उसका संकल्प है। और यदि उस वचन से वह पीछे हट जाए, तो यह संकल्पभंग माना जाता है, जिसका फल उसे भोगना ही पड़ता है। अतः संकल्प तभी सार्थक है जब उसे पूर्ण करने की दृढ़ निष्ठा हो। वचन पालन का सर्वोत्तम उदाहरण राजा दशरथ हैं। दशरथ जी ने कैकेयी को संकट में सहायता के बदले यह वचन दिया था कि समय आने पर वह कोई भी दो वरदान मांग सकती हैं। वर्षों बाद जब कैकेयी ने राम को चौदह वर्ष का वनवास और भरत को राजगद्दी मांगी, तब भी राजा दशरथ अपने वचन से पीछे नहीं हटे। वचन पालन की यह मर्यादा आज भी आदर्श मानी जाती है।

व्रत का अर्थ यही है-अपने वचनों, संकल्पों और आदर्शों पर दृढ़ रहना। अक्षत और पुष्प लेकर संकल्प करना केवल प्रतीक है, परंतु वास्तविक संकल्प वह है जो मन में दृढ़ता से लिया जाए और पूर्ण निष्ठा से निभाया जाए। आज के समय में व्रत के बाहरी रूप पर अधिक जोर है, जबकि उसका सार स्व-अनुशासन, सत्यनिष्ठा, वचनपालन और मनोवैज्ञानिक शुद्धि है। यदि मनुष्य इन मूल सिद्धांतों को समझ ले, तो व्रत केवल धार्मिक क्रिया न रहकर जीवन का मार्गदर्शन बन जाते हैं।

मुकेश ऋषि

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

भारत का सुरक्षा कवच है भूटान

श्रीराम चौलिया द्वारा लिखित आलेख 'भूटान को चीनी चंगुल से बचाने की चुनौती' पढ़ा। वास्तव में हिमालय की गोद में बसा यह छोटा सा राष्ट्र भूटान भारत का सुरक्षा कवच है। डोकलाम जैसी घटनाओं ने यह साबित किया कि भूटान की भौगोलिक स्थिति सीधे भारत की उत्तर-पूर्वी सुरक्षा को प्रभावित करती है। भारत और भूटान का संबंध दक्षिण एशिया की कूटनीति, सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक साझेदारी का उत्कृष्ट उदाहरण है। चीन की कुटिल दृष्टि भूटान के ऊपर है। भूटान के जरिए चीन भारत को घेरना चाहता है। चीन के कुटिल चालों से भूटान को बचाना भारत के लिए अनिवार्य है। भारत-भूटान संबंध विश्वास और परस्पर सम्मान पर आधारित हैं। भूटान के साथ भारत के संबंध हमेशा सौहार्दपूर्ण रहे हैं। दोनों देशों के बीच विकसित यह 'विशेष संबंध' क्षेत्रीय स्थिरता को मजबूत करता है। भारत भूटान के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में है और उसकी कई विकास परियोजनाओं में सहयोग भी करता है। हाइड्रोपावर परियोजनाएं भारत-भूटान संबंधों की रीढ़ हैं। भूटान भारत को बिजली निर्यात करता है, और भारत इन परियोजनाओं के निर्माण में सहायता करता है। भूटान की आर्थिक स्थिरता भारत की पूर्वोत्तर विकास रणनीति के लिए भी महत्वपूर्ण है। भारत और भूटान के लोगों के बीच गहरी सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक समानताएं हैं। बौद्ध संस्कृति, शिक्षा, स्वास्थ्य और जन-कल्याण के क्षेत्रों में भी दोनों देशों का सहयोग लगातार प्रगाढ़ हुआ है। भारत के लिए भूटान केवल एक पड़ोसी देश नहीं, बल्कि एक भरोसेमंद मित्र, सामरिक साझेदार और विकास सहयोगी है। पीएम मोदी की यात्रा दोनों देशों के रिश्ते को और मजबूत करेगी।

himanshushekhar.mca@gmail.com

गिर रहा राजनीति का स्तर

देश की राजनीति का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। राजनीति में मतभेद होना तो स्वाभाविक है। लेकिन अब मतभेद, हर मामले में विरोध, मनभेद, यहां तक कि वैमनस्य का रूप ले चुका है। यह हाल ही के तीन उदाहरण से पूरी तरह स्पष्ट हो जाएगा। वक्फ कानून संशोधन में लेशमात्र भी बुराई नहीं है। फिर भी इसका भयंकर, यहां तक कि हिंसक विरोध भी किया गया। आपरेशन सिंदूर, जिसमें भारत की एकतरफा जीत हुई, और पाकिस्तान की कमर तोड़ दी। उसे राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सरेंडर करार दे दिया। वहीं कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खरगे जी ने उसे छिटपुट आपरेशन बता दिया। अभी जारी एसआइआर जिसमें वोटर लिस्ट का पुनरीक्षण होना है, उसका अंधविरोध हो रहा है। ममता बनर्जी और तृणमूल नेता तो अभद्र भाषा में चुनाव आयोग और मोदीजी और भाजपा नेताओं को धमकियां दे रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट से राहत न मिलने के बाद भी धमकी दी जा रही हैं। अब मोदीजी और चुनाव आयोग पर वोट चोरी का न केवल आरोप लगाया जा रहा है, कांग्रेस और अन्य दलों के नेता चुनाव आयुक्त को धमकी दे रहे हैं। जिस लोकतंत्र और संविधान की दुहाई कांग्रेस और विपक्षी दल दे रहे हैं।

सीपी बंसल, दिल्ली

आवश्यक है एसआइआर

बिहार में एसआइआर समाप्त होने के पूर्व ही बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एसआइआर के विरोध का राग अलापने लगीं थीं। क्योंकि उन्होंने बंग्लादेशी एवं रोहिंग्याओ को राज्य में आने एवं बसने की खुली छूट दे रखी है। उनको सरकार का संरक्षण भी प्राप्त है। वहां पर नकली पहचान-पत्र बनवाने की सुविधा है। यह सब इसलिए क्यों कि यह लोग तृणमूल कांग्रेस के सालिड वोटर होते हैं। कहीं-कहीं तो घुसपैठियों की संख्या इतनी अधिक हो गई है कि वह चुनाव परिणाम बदलने में सक्षम हो सकते हैं। कई जगह तो उनकी कालोनी ही बन गई है। फर्जी कागजों पहचान-पत्रों के आधार पर सरकार की सभी सुविधाओं का लाभ लिया जा रहा है। पर एसआइआर के आने से घुसपैठियों में भगदड़ मच गई है। उत्तर परगना जिले से 48 ऐसे भगोड़ो को दबोचा गया है, जो बंग्लादेश भागने की फिराक में थे। अनेक मकानों में ताला लग गया है, वहां के रहने वाले पलायन कर गए हैं। बर्धवान जिले में तीन बोरे भरकर आधार कार्ड फेके गये हैं, जो कि फर्जी बताये जा रहे हैं। बंगाल में एक गुलशन नाम की कालोनी है, जहां दो लाख लोग रहते हैं। पर मतदाता केवल 20,000 ही हैं। उनको भी ढूंढने में चुनाव कर्मियों को मशक्कत करनी पड़ रही है। असल में गुलशन के अधिकांश निवासी भारतीय नहीं हैं। सब घुसपैठिये है, फर्जी कागजातों के सहारे अभी तक मतदाता बने हुए थे, एक पार्टी विशेष का समर्थन एवं उनके प्रत्याशी को वोट दे रहे थे।

धर्मेंद्र नाथ रस्तोगी, गाजियाबाद

पोस्ट

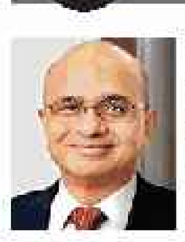

आज जब भारत नई कूटनीतिक और सामरिक चुनौतियों से जूझ रहा है, तब दिल्ली में हुआ कार विस्फोट यह संकेत देता है कि आतंकवाद अब भी आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बना हुआ है। और भी ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि गिरफ्तार आरोपितों में कुछ डाक्टरों और अन्य पेशेवरों का नाम सामने आया है। यह बताता है कि आतंक अब पढ़े-लिखे लोगों के नेटवर्क के रूप में उभर रहा है। ऐसा नेटवर्क अत्यधिक जटिल हमलों की योजना बना सकता है। डा. ब्रह्म चेलानी@Chellaney

2011 के बाद दिल्ली में यह पहला बड़ा हमला है। सुरक्षा का जो सिलसिला चला आ रहा था, वह टूट गया है, पर यह भी स्पष्ट है कि एजेंसियों और राज्य पुलिस ने इससे कहीं बड़े षड्यंत्र को विफल किया है। उनको बारंबार धन्यवाद। शिवानी गुप्ता@ShivaniGupta_5

ग्लोबल आतंकवाद के सारे अनुभव बताते हैं कि आतंकवादी अनपढ़ या गरीब नहीं, बल्कि उच्च शिक्षित, डाक्टर, इंजीनियर, रिसर्चर, साइंटिस्ट, स्कालर आदि होते हैं। वे आपके और हमारे आसपास ही रहते हैं। दिलीप मंडल@Profdilipmandal

जनपथ

दहशतगर्दी कर रहे पढ़ लिखकर भी लोग,
बने डॉक्टर मौत का लगा रहे उद्योग।
लगा रहे उद्योग स्वयं बनकर आतंकी,
झेले पूरा देश मजहबी ये नौटंकी!
मासूमों को मार दिखाते ये नामर्दी,
'भटके हुए' जवान कर रहे दहशतगर्दी!!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय :0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 117

78.63 प्रतिशत सर्वाधिक कटिहार में मतदान हुआ। किशनगंज में 78.06 एवं पूर्णिया में 76.04 प्रतिशत लोगों ने मतदान किया है।

पिछले दो विस चुनावों में सटीक नहीं रहा है एक्जिट पोल

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: बिहार में मंगलवार को दूसरे और अंतिम चरण का मतदान होने के साथ ही विभिन्न एजेंसियों के एक्जिट पोल के अनुमानों में राजग को पूर्ण बहुमत के साथ एक बार फिर सत्ता में वापसी करते हुए दर्शाया गया है। इन एक्जिट पोल में दिखाया गया है कि 243 सदस्यीय विधानसभा में राजग 140 से 150 सीटें जीत सकता है। देखा जाए तो एक्जिट पोल को अक्सर अंतिम नतीजों का सूचक माना जाता है लेकिन जहां तक बिहार की बात है तो पिछले दो चुनावों यानी 2020 और 2015 में इनका आकलन सटीक नहीं रहा है। वैसे भी बिहार में जातिगत फैक्टर, कानून-व्यवस्था और विकास ऐसे मुद्दे हैं जाकि काफी हद तक चुनाव को प्रभावित करते हैं और ऐसी सूरत में एक्जिट पोल करने वाली एजेंसियों के लिए सटीक अनुमान लगाना बड़ा मुश्किल हो जाता है।

पिछले विधानसभा चुनाव (2020) में करीब 11 एक्जिट पोल में महागठबंधन को विजेता के रूप में पेश किया गया था और उसे लगभग 125 सीटें हासिल करते हुए दिखाया गया था। दूसरी ओर, राजग को लगभग 108 सीटें जीतते हुए दिखाया गया था यानी बहुमत से दर्जनभर से ज्यादा कम सीटें। हालांकि जब नतीजे आए तो भाजपा-जदयू वाला गठबंधन राजग 125 सीटें जीतकर सत्ता बरकरार रखने में कामयाब रहा। राजद और कांग्रेस के नेतृत्व वाले महागठबंधन को 110 सीटें ही मिल पाईं। इस तरह एक्जिट पोल का आकलन सही नहीं रहा।

2015 के विस चुनाव के एक्जिट पोल की बात करें तो 2015 में छह प्रमुख एजेंसियों ने एक्जिट पोल में कड़ी टक्कर का अनुमान लगाते हुए राजद-जदयू महागठबंधन को बढ़त मिलती दिखाई थी। गठबंधन को 123 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया जबकि भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन के 114 सीटों तक सीमित रहने की उम्मीद थी। तीन एक्जिट पोल ने राजद-जदयू महागठबंधन की स्पष्ट जीत की भविष्यवाणी की थी तो दो ने राजग के सत्ता में आने की बात कही थी। राजद-जदयू महागठबंधन ने दो-तिहाई बहुमत के साथ सरकार बनाई। यह गठबंधन 178 सीटें जीतने में कामयाब रहा जबकि राजग को सिर्फ 58 सीटें मिली थीं।

एनडीए को अपार जनसमर्थन का भरोसा, राजद का दावा-इस बार भी फेल होंगे एक्जिट पोल

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना: एक्जिट पोल के बाद भाजपा नेता सैयद शाहनवाज हुसैन ने कहा कि एक्जिट पोल संकेत दे रहे हैं कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी "पूरी तरह से फ्लाप" रहे हैं और लोगों ने प्रधानमंत्री मोदी, मुख्यमंत्री नीतीश और विकास को वोट दिया है। केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय ने कहा कि बिहार के लोगों ने एनडीए को अपार जनसमर्थन दिया है।

वहीं कांग्रेस सांसद तारिक अनवर ने कहा कि ये केवल अटकलें हैं। राजद ने कहा है कि कई चुनावों की तरह बिहार में भी एक्जिट पोल फेल होगा।

'लोकतंत्र' के लिए 20 किमी जंगल-पहाड़ लांघ पहुंचे

मनीष कुमार • जागरण

- कहा- माओवादियों के पांव उखड़े तो लोकतंत्र के जमे, लोस चुनाव में भी किया था मतदान
- सुबह आठ बजे घर से निकले और चार घंटे की कठिन पैदल यात्रा कर मतदान केंद्र पहुंचे

गया के इमामगंज विधानसभा क्षेत्र के अनरबन सलैया स्थित मतदान केंद्र पर वोट देने के लिए कतार में खड़े कोकणा, महजरी, कटकाना और पिपरहट के मतदाता • जागरण

औरंगाबाद: आए दिन माओवादियों के लगाए आईईडी व हथियारों की बरामदगी के कारण सुर्खियों में रहने वाले बिहार में गया जिले के डुमरिया प्रखंड की छकरबंदा पंचायत में लोकतंत्र के प्रति गहरी आस्था देखने को मिली। पुरुषों का जत्था जंगल-पहाड़ लांघकर आगे बढ़ रहा था, पैरों में वाहनों के टायर काटकर बनाए गए चप्पल थे। उद्देश्य एक ही था जल्द से जल्द बूथ तक पहुंच जाएं और जिस लोकतंत्र ने माओवाद आतंक से मुक्ति दिलाई है, उसे जीवंत बनाए रखने को अपना योगदान दे आएं। क्षेत्र दुर्गम, राह पथरीली, परंतु इरादे दृढ़ थे, इसी कारण पांव थके नहीं और दोपहर होते-होते वनवासियों का यह समूह अनरबन सलैया प्राथमिक विद्यालय स्थित मतदान केंद्र पहुंच गया। यह गया के इमामगंज विधानसभा क्षेत्र का मतदान केंद्र है। यह मतदान केंद्र औरंगाबाद की सीमा पर पहाड़ी के तराई क्षेत्र में है। कोकणा गांव के कमलेश सिंह भोक्ता ने कहा, क्षेत्र से माओवादियों के पांव उखड़े, इस कारण लोकतंत्र के पांव जम गए हैं। महजरी के सत्येंद्र सिंह भोक्ता ने बताया कि उनके साथ कोकणा, महजरी, कटकाना और पिपरहट गांव के लोग आए हैं। सुबह आठ बजे घर से निकले और करीब चार घंटे की कठिन पैदल यात्रा के बाद मतदान केंद्र पहुंचे। वोट देकर फिर 20 किमी पैदल यात्रा करनी पड़ेगी।

बिहार में 25 वर्षों बाद गांव में बने बूथ तो 62% हो गया मतदान

जासं, डेहरी आनसोन (रोहतास): बिहार में लोकतंत्र के महापर्व में पहाड़ी गांव में सुबह से ही लोगों ने पंक्ति में खड़े होकर मतदान किया। कैमूर पहाड़ी पर बसे मध्य विद्यालय कोरहास और कछुअर चाकडीह मतदान केंद्र पर 25 वर्षों बाद मतदान केंद्र बनाया गया है। इन मतदान केंद्रों को वर्ष 2005 में स्थानांतरित कर मैदानी क्षेत्र में कर दिया गया था। जब मैदानी क्षेत्र मध्य विद्यालय चुनहट्टा में बूथ थे, तो तीन से पांच प्रतिशत मतदान होता था। मतदान केंद्र पास होने पर इस बार इन गांवों के लोगों ने 60 से 62 प्रतिशत मतदान कर दिखाया।

चुनावी झलकियां

मां का श्राद्ध कर्म छोड़कर वोट देने पहुंचे पूर्व मुखिया

फारबिसगंज में माता के श्राद्ध कर्म को छोड़कर वोट कर निशान दिखाते पूर्व मुखिया कुमार झा • जागरण

जासं, रेणुग्राम (अररिया): बिहार में लोकतंत्र के महापर्व को लेकर हर किसी का उत्साह चरम पर रहा। विधानसभा के दूसरे चरण के मतदान में फारबिसगंज विधानसभा क्षेत्र में भी यही दिखा। मतदान में अपनी भागीदारी को लेकर पूर्व मुखिया कुमार झा अपनी माता के एकादशा श्राद्ध कर्म को बीच में ही छोड़कर पत्नी के साथ वोट डालने मवि खवासपुर के मतदान केंद्र संख्या 266 पर पैदल पहुंचे। उन्होंने कहा कि वे अपनी स्वर्गीय माता के बड़े पुत्र होने के नाते कर्ता बने हैं। चुनाव पांच वर्ष बाद होता है। इसमें भागीदारी आवश्यक है।

लोकतंत्र की तीर्थयात्रा में वृद्ध चाचा को कंधे पर लाद 30 किलोमीटर चले पैदल

रोहतास जिला के औरइया गांव के भुज यादव भतीजे सवारथ यादव की पीठ पर मतदान को जाते • जागरण

जासं, तेनारी (रोहतास): बिहार में रोहतास जिले के एक मतदान केंद्र पर युवा सवारथ सिंह यादव अपने वृद्ध चाचा को कंधे पर उठाकर वोट डलवाने के लिए लेकर पहुंचे। चाचा भुज यादव चलने में असमर्थ थे। रास्ता पहाड़ी था। लोग पैदल ही आते-जाते हैं। सवारथ ने चाचा को कंधे पर उठाकर लगभग तीस किलोमीटर की दूरी तय कर मतदान केंद्र तक पहुंचाया। उन्होंने मतदान किया। भतीजे की आंखों में भी खुशी की चमक थी।

विस चुनाव में मतदाताओं ने रचा इतिहास

देश की आजादी के बाद से अब तक पहली बार 67 प्रतिशत लोगों ने किया मताधिकार का प्रयोग

मधुबनी में मंगलवार को बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे और अंतिम चरण में मतदान के लिए कतार में लगे मतदाता • प्रेट्र

- इससे पहले विस चुनाव में सर्वाधिक मतदान का रिकार्ड 2000 में बना था, जब 62.57 प्रतिशत वोट पड़े थे
- प्रथम चरण में 65.08 तो द्वितीय चरण में 69 प्रतिशत मतदान
- कुल 2616 प्रत्याशियों का भाग्य हुआ ईवीएम में बंद, मतगणना 14 नवंबर को
- 2025 में महिलाओं ने 71.06 एवं पुरुषों ने 62.91 प्रतिशत किया मतदान
- कटिहार में सर्वाधिक 78.63 प्रतिशत तो नवादा में सबसे कम 57.85 प्रतिशत वोटिंग

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना: देश की आजादी के उपरांत बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में मतदाताओं ने इतिहास रच दिया। पहली बार दोनों चरण मिलाकर रिकार्ड 67 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने मतदान किया। इससे पहले विस चुनाव में सर्वाधिक मतदान का रिकार्ड 2000 में बना था, जब 62.57 प्रतिशत वोट पड़े थे। पहले चरण में इस बार छह नवंबर को 65.08 प्रतिशत मतदान हुआ था। वहीं, मंगलवार को दूसरे चरण में 69 प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ। सभी 243 विधानसभा क्षेत्र में छिटपुट घटनाओं के बीच शांतिपूर्ण मतदान संपन्न हो गया। बिहार के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) विनोद सिंह गुंजियाल ने प्रेसवार्ता में देर शाम यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि दूसरे चरण के करीब दो हजार बूथों से अभी आंकड़े लिया जाना शेष है। देर शाम तक मिले आंकड़ों के अनुसार दूसरे चरण वाले 20 जिले की 122 सीटों पर सर्वाधिक कटिहार में 78.63 प्रतिशत, किशनगंज में 78.06 एवं पूर्णिया में 76.04 प्रतिशत लोगों ने मताधिकार का प्रयोग किया है। वहीं, दूसरे चरण में सबसे कम 57.85 प्रतिशत मतदान नवादा में हुआ। 2020 के विधानसभा चुनाव से इस बार 9.6 प्रतिशत अधिक मतदान हुआ है।

46 मतगणना स्थलों पर होगी गिनती: अब 14 नवंबर को अयोग की ओर से राज्य में 46 मतगणना स्थलों पर सुबह आठ बजे से मतगणना की जाएगी। राजनीतिक विश्लेषकों का दावा है कि बंपर वोटिंग के पीछे वजह एनडीए सरकार की ओर से जीविका समूह से जुड़े महिलाओं को मुख्यमंत्री रोजगार योजना के तहत हर परिवार की महिला को 10 हजार रुपये एवं लगभग दो करोड़ परिवार को प्रतिमाह 125 यूनिट बिजली मुफ्त दिया जाना है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी हैं। मतदान कार्य में 1.80 लाख से अधिक जीविका दीदी व महिला कार्यकर्ताओं को पर्दानशीं महिलाओं की पहचान के लिए भी लगाया गया था। मतदान के उपरांत हर बूथ पर उपस्थित चुनाव एजेंट को फार्म-सी दिया गया, जिसमें मतदान से संबंधित सभी सूचनाएं दर्ज हैं।

माओवाद प्रभावित 1592 बूथों पर मतदान: प्रेसवार्ता में पुलिस मुख्यालय के एडीजी कुंदन कृष्णन ने बताया कि कहीं से भी किसी अप्रिय घटना की जानकारी नहीं मिली है। सभी मतदान केंद्रों पर केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों की तैनाती की गई थी। मतदान समाप्त होने के उपरांत कड़ी सुरक्षा के बीच ईवीएम पेटी को मतगणना केंद्र तक देर रात तक पहुंचाया जाता रहा। इस चुनाव में पहली बार माओवाद प्रभावित 1592 बूथों को बिना शिफ्ट किए उसी गांव में मतदान कराया गया। **बंपर मतदान के प्रमुख कारण:** मतदान जागरूकता अभियान के साथ ही मतदान प्रतिशत बढ़ने के पीछे वैसे तो कई कारण बताए जा रहे हैं। किंतु, इनमें तीन मुख्य हैं। पहला व मुख्य कारण दीवाली व छठ में विभिन्न राज्यों में प्रवास करने वाले मतदाताओं के लिए 13 हजार से अधिक ट्रेनें चलाने व लोगों का मतदान के लिए रुकना है। दूसरा एसआइआर के अतिरिक्त राजनीतिक दलों की ओर से मतदाताओं को दिए गए लाभ एवं घोषणा वगैरह सम्मिलित है।

खटास बढ़ा सकता है महागठबंधन के दोस्ताना संघर्ष का परिणाम

दीनानाथ साहनी • जागरण

- 11 सीटों पर महागठबंधन के बीच फ्रेंडली फाइट
- महागठबंधन की रणनीति और तालमेल पर खड़े हुए सवाल

पटना: बिहार विधानसभा का चुनाव परिणाम महागठबंधन की गांठ खोलने वाला साबित होगा। इसकी वजह भी है। 11 सीटों पर कांग्रेस और राजद, भाकपा और कांग्रेस के बीच दोस्ताना संघर्ष है। कथित गठबंधन धर्म का उल्लंघन करते हुए, राजद और कांग्रेस, भाकपा एवं कांग्रेस ने एक-दूसरे के खिलाफ उम्मीदवार दिए। वहीं, कुछ जगहों पर बागियों ने महागठबंधन के सहयोगी दलों को असहज किया। अगर चुनाव परिणाम मन मुताबिक नहीं आए, तो महागठबंधन के दलों के बीच खटास और दूरी, दोनों बढ़ सकती है।

रोचक यह कि इस बार का विधानसभा चुनाव बंपर वोटिंग के साथ-साथ फ्रेंडली फाइट के लिए भी याद रखा जाएगा। दरअसल, महागठबंधन के महत्वपूर्ण घटक दल राजद, कांग्रेस और भाकपा ने एक ही सीट पर अपने-अपने उम्मीदवारों को खड़ा कर दिया। महागठबंधन के नेताओं के बीच खुलकर जुबानी जंग भी देखने को मिली। राजद, कांग्रेस और भाकपा में खटपट सतह पर दिखी।

आपस में भिड़ा महागठबंधन: जिन 11 सीटों पर महागठबंधन आपस में ही भिड़ा, उनमें कैमूर की चैनपुर, रोहतास की करगहर, पश्चिम चंपारण की नरकटियागंज, जमुई की सिकंदरा व भागलपुर की कहलगांव और सुल्तानगंज सीटें शामिल हैं।

बिहारशरीफ सीट पर कांग्रेस के ओमार खान और भाकपा के शिव कुमार यादव, राजापाकर सीट पर भाकपा के मोहित पासवान तथा कांग्रेस की प्रतिमा कुमारी, बछवाड़ा सीट पर कांग्रेस के गरीबदास एवं भाकपा के अवधेश राय, वैशाली सीट पर कांग्रेस के संजीव सिंह एवं राजद के अजय कुमार कुशवाहा, बेलदौर सीट पर कांग्रेस के मिथिलेश कुमार व आइआइपी की तनीषा भारती, सिकंदरा सीट पर राजद के उदय नारायण चौधरी और कांग्रेस के विनोद कुमार चौधरी, नरकटियागंज सीट पर राजद के दीपक यादव और कांग्रेस के शाश्वत केदार, चैनपुर सीट पर वीआइपी के गोबिंद बिंद व राजद के बृज किशोर बिंद में मुकाबला हुआ।

105 वर्ष के बुजुर्ग का जोश देख सब हुए दंग, बोले- जब तक सांस है वोट डालता रहूंगा

गया में गुरुआ प्रखंड क्षेत्र में वोट देने पहुंचे 105 वर्षीय जेठान यादव • जागरण

जासं, गुरुआ (गया): बिहार के गया में ग्राम श्रीरामबिगहा निवासी 105 वर्षीय जेठान यादव ने इस बार चुनाव में मतदान करके मिसाल पेश की। उम्र के इस पड़ाव में भी उन्होंने बूथ पर पहुंचकर मतदान किया। जब वे मतदान केंद्र पहुंचे तो मौजूद मतदाताओं ने तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा कि जब तक सांस है, तब तक वोट डालता रहूंगा। लोगों ने बताया कि जेठान यादव हर चुनाव में समय पर मतदान करते हैं और गांव के लोगों को भी लोकतंत्र में भागीदारी के लिए प्रेरित करते हैं।

आंगन में रखा था मां का शव, बहू-बेटे ने निभाया लोकतंत्र का फर्ज: जासं किशनगंज के अनुसार जिले के ठाकुरगंज प्रखंड के योगी टोला गांव में लोकतंत्र के प्रति निष्ठा की अद्भुत मिसाल देखने को मिली। 100 वर्षीय टटू टुडू का मंगलवार सुबह निधन हो गया, लेकिन उनके परिवार ने उनके लोकतांत्रिक आदर्श को जीवित रखा। शोक के बीच परिवार के 12 सदस्य, टटू टुडू का पार्थिव शरीर आंगन में रखकर मतदान केंद्र पहुंचे और वोट डाला। मतदान के बाद सभी सदस्य पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ अंतिम संस्कार में शामिल हुए।

घर से मतदान को निकले बुजुर्ग ने तोड़ा दम

जागरण संवाददाता सासाराम (रोहतास) के अनुसार सासाराम विधानसभा क्षेत्र के खैरा गांव में 95 साल के हरिहर सिंह उर्फ हरिद्वार सिंह की मतदान करने जाने के दौरान बूथ से मात्र सौ मीटर पहले ही मौत हो गई। स्वजन के अनुसार उन्होंने वोट डालने की इच्छा जाहिर की तो उन्हें ई रिक्शा पर बैठाकर मतदान केंद्र ले जाया जा रहा था। हरिहर सिंह ने दो-तीन दिन पहले ही परिवार में कह दिया था कि इस बार 11 नवंबर को मतदान के बाद दुनिया छोड़कर चला जाऊंगा, लेकिन वोट जरूर करूंगा। स्वजन के अनुसार उनका निधन उम्रजनित था।

भरोसे की जीत, माओवाद की धरती पर लोक उत्सव

अर्जुन जायसवाल • जागरण

- थरुहट की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर किया मतदान, बूथों पर कतार में पुरुषों से रहीं आगे
- वाल्मीकिनगर क्षेत्र के वनवर्ती इलाकों में कभी दहशत में रहते थे लोग, अब विकास की बात

बिहार में वैरिया महदेवा कुट्टी में मतदान के लिए कतार में खड़ी महिलाएं • जागरण

हरनाटांड (बगहा): कभी माओवादी गतिविधियों के कारण दहशत और सन्नाटे की धरती रहा थरुहट क्षेत्र में जहां भय था, वहां भरोसा। यहां लोकतंत्र के कई रंग दिखे। लोक उत्सव में उत्साह और भागीदारी का केंद्र बन गया। विधानसभा चुनाव के अंतिम चरण में मंगलवार को जब मतदान शुरू हुआ तो बिहार में पश्चिम चंपारण जिले के वाल्मीकिनगर विधानसभा के थरुहट के वनवर्ती इलाकों में मतदाताओं की लंबी-लंबी कतार दिखी। जहां कभी गोलियों की तड़तड़ाहट से भय का वातावरण हो जाया करता था, आज ईवीएम की बीप से बदलते परिदृश्य का अनुभव हो रहा है।

चंपापुर गोनौली पंचायत के मलकौली, देवरिया तरुअनवा के तरुअनवा, कुनई, भेलाही और जिमरी नौतनवा पंचायत के मतदान केंद्रों पर सुबह से ही मतदाताओं की भीड़ उमड़ पड़ी। इनमें महिलाओं की भागीदारी सबसे अधिक रही। सिर पर आंचल, गोद में बच्चा, हाथ में वोटर स्लिप लिए महिलाएं लाइन में सबसे आगे रहीं। लोकतंत्र के पर्व में अपने अधिकार का प्रयोग करने में थरुहट के युवा भी पीछे नहीं रहे। स्थानीय प्रशासन द्वारा इन इलाकों में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। परिणामस्वरूप जो इलाका कभी भय और बहिष्कार के कारण मतदान से दूर रहता था, आज वहां श्रद्धा और विश्वास के साथ मतदान हुआ।

जमुई में माओवाद से प्रभावित रहे 10 मतदान केंद्रों पर पहली बार बजी बीप: जागरण टीम, जमुई के अनुसार विधानसभा चुनाव में जमुई जिले के कई माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में इस बार मतदान ने नया इतिहास रच दिया। गुरमाहा, चोरमारा, चकाई के बोंगी, बरमोरिया और सिकंदरा विधानसभा क्षेत्रों के कई गांवों में पहली बार वोटिंग हुई। पहले माओवादी डर के कारण लोग वोट डालने दूसरी जगह जाते भी नहीं थे, लेकिन इस बार लोग अपने गांव में ही अपने मत का प्रयोग करने पहुंचे। विशेषकर खैरा प्रखंड के दीपाकरहर गांव में पहली हिंसक वारदात के बाद अब लोग अपने मतदान केंद्र पर वोट डालने लगे। चकाई प्रखंड के 10 गांवों में 25 साल बाद मतदान केंद्र बने और सुबह से शाम तक ईवीएम की बीप गूंजती रही। गगनपुर में 65 प्रतिशत से अधिक मतदान दर्ज हुआ।

झाझा प्रखंड में भी 25 साल बाद लोकतंत्र का उत्सव देखा गया। सुरक्षा के लिए सीआरपीएफ और बीएसएफ के जवान तैनात थे और उन्होंने पूरी चौकसी बरती। पहले माओवादी आतंक के कारण मतदाताओं में भय था, लेकिन अब स्थिति पूरी तरह बदल गई है। आत्मसमर्पण कर चुके माओवादी बालेश्वर कोड़ा की पत्नी मंगनी देवी ने कहा कि अब लोग ऐसे उम्मीदवार को वोट देंगे जो बिजली, पानी, शिक्षा और अन्य बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराए। माओवाद मुक्त होने के बाद इन गांवों में विकास और लोकतंत्र दोनों को मजबूती मिली है।

सात राज्यों की आठ विस सीटों पर उपचुनाव में मतदाताओं में दिखा उत्साह

- ओड़िशा के नुआपाड़ा में 81.16 प्रतिशत, झारखंड के घाटशिला में 74.63 प्रतिशत मतदान
- राजस्थान के अंता में लगभग 80.32 प्रतिशत, पंजाब के तरनतारन में 60.95 प्रतिशत

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : सात राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की आठ विधानसभा सीटों पर उपचुनाव में मंगलवार को मतदाताओं में उत्साह दिखा। सभी सीटों पर मतदान शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ। मिजोरम के डंपा सीट पर सर्वाधिक 82.34% मतदान हुआ।

ओडिशा के नुआपाड़ा में 81.16% मतदान हुआ। बीजद के पूर्व विधायक राजेंद्र ढोलकिया का निधन हो जाने के बाद यहां उपचुनाव कराया जा रहा है। झारखंड के घाटशिला में 74.63%मतदान हुआ। घाटशिला की सीट पूर्व मंत्री व झामुमो नेता रामदास सोरेन के निधन से सीट खाली हुई थी। प्रेट्र के अनुसार ओडिशा में मतदान की गोपनीयता बनाए रखने में विफल रहने के कारण दो चुनाव अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया। राजस्थान में बारां जिले की अंता विधानसभा सीट पर उपचुनाव में शाम छह बजे तक 80.32% मतदान हुआ। पंजाब की तरनतारन विधानसभा सीट के उपचुनाव में मंगलवार को कुल 60.95% मतदान हुआ। आप विधायक कश्मीर सिंह सोहल के निधन के कारण तरनतारन में उपचुनाव हुआ।

जम्मू-कश्मीर के दो विधानसभा सीटों पर उपचुनाव के लिए वोट डाले गए। जम्मू क्षेत्र के नगरोटा में 75.08% मतदान हुआ, कश्मीर में बड़गाम विधानसभा सीट पर शाम 50.02% मतदान हुआ। उमर अब्दुल्ला विधानसभा चुनाव में बडगाम और गांदेरबल दो सीटों से चुनाव जीते थे। उन्होंने बडगाम विधानसभा सीट से इस्तीफा दे दिया इसलिए इस निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव करवाया जा रहा है, वहीं नगरोटा सीट भाजपा नेता और नगरोटा के विधायक देवेंद्र सिंह राणा के निधन के बाद खाली हुई थी।

तमिलनाडु, बंगाल में एसआइआर पर आयोग से जवाब मांगा

- चुनाव आयोग दो सप्ताह में देगा जवाब, अगली सुनवाई 26 नवंबर को होगी
- सर्वोच्च अदालत ने याचिकाकर्ताओं से पूछा-आप इतने आशंकित क्यों हैं

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को तमिलनाडु, बंगाल और पुड्डूचेरी में मतदाता सूची विशेष सघन पुनरीक्षण (एसआइआर) का विरोध करने वाली याचिकाओं पर चुनाव आयोग को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। चुनाव आयोग को दो सप्ताह में जवाब देना है।

इसके साथ ही कोर्ट ने देश के विभिन्न हाई कोर्टों से अनुरोध किया है कि वे फिलहाल एसआइआर को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई टाले रहें। मामले पर कोर्ट ने कहा कि 26 नवंबर को फिर सुनवाई करेगा।

जस्टिस सूर्यकांत और जोयमाल्या बाग्ची की पीठ ने तमिलनाडु, बंगाल, पुड्डूचेरी सहित कुछ अन्य जगहों पर एसआइआर को चुनौती देने वाली छह याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान कहा कि आप लोग इतने आशंकित क्यों हैं। आप ऐसे कर रहे है जैसे पहली बार मतदाता सूची का सघन पुनरीक्षण हो रहा हो। एसआइआर को लेकर याचिकाकर्ताओं की आशंकाओं पर टिप्पणी करते हुए कोर्ट ने कहा कि संवैधानिक संस्था काम कर रही है। कुछ प्रक्रियात्मक कमियां हो सकती हैं, कोर्ट उसे देखेगा। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा कि अगर वह उनसे संतुष्ट होगा तो प्रक्रिया रद भी कर सकता है।

इसके अलावा कोर्ट ने गैर सरकारी संगठन एडीआर की ओर से बिहार एसआइआर मामले में कुछ निर्देश मांगने वाली अर्जी पर भी चुनाव आयोग को नोटिस जारी कर जवाब देने को कहा है। कोर्ट ने चुनाव आयोग से कहा है कि वह एसआइआर के संबंध में सभी राज्यों की स्थिति को ध्यान में रखे। पीठ ने मौखिक टिप्पणी में कहा कि हर राज्य की स्थितियां भिन्न हो सकती हैं। कहीं साक्षरता दर ज्यादा है तो कहीं कम, जैसे बिहार में लोग बाहर नौकरी करने जाते हैं आदि।

चुनाव आयोग ने नोटिस स्वीकार करते हुए दो सप्ताह में जवाब दाखिल करने की हामी भरी। कोर्ट ने मामले को 26 नवंबर को सुनवाई पर लगाने का आदेश देते हुए चुनाव आयोग से 24 नवंबर तक जवाब दाखिल करने को कहा है। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि वह एसआइआर के मुद्दे पर 26 और 27 नवंबर को सुनवाई करेगा और पहले चुनाव आयोग का पक्ष सुना जाएगा उसके बाद याचिकाकर्ता बहस करेंगे। तमिलनाडु और बंगाल की ओर से पेश वकील कपिल सिब्बल ने एसआइआर का विरोध कर कहा कि तमिलनाडु में मानसून की स्थिति है।

दूरस्थ क्षेत्रों में नेटवर्क नहीं है। उन्होंने कहा कि बंगाल में स्थिति और खराब है। याचिकाकर्ता अश्वनी कुमार उपाध्याय ने सभी जगह एसआइआर कराए जाने की मांग वाली अपनी याचिका का जिक्र करते हुए कहा कि उनकी याचिका पर कोर्ट ने सभी राज्यों को नोटिस जारी किया था लेकिन अभी तक किसी भी राज्य ने जवाब दाखिल नहीं किया। राज्य अलग याचिकाएं दाखिल कर रहे हैं।

72 घंटे में च्यवनप्राश से जुड़ा विज्ञापन हटाए पतंजलि: हाई कोर्ट

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: दिल्ली हाई कोर्ट ने पतंजलि आयुर्वेद को प्रतिद्वंद्वी डाबर के उत्पादों को धोखा बताने से जुड़े च्यवनप्राश विज्ञापन को 72 घंटे के भीतर हटाने का निर्देश दिया है। न्यायमूर्ति तेजस कारिया की पीठ ने कहा कि झूठे, भ्रामक व अनुचित विज्ञापन को संवैधानिक संरक्षण नहीं दिया जा सकता है। पतंजलि के च्यवनप्राश विज्ञापन ने यह संदेश देकर इस रेखा को पार कर लिया कि अन्य सभी निर्माता उपभोक्ताओं को धोखा दे रहे हैं।

अदालत ने कहा कि जो आयुर्वेदिक उत्पाद का निर्माण कानून व उसमें वर्णित नियमों का पालन कर करता है, उसे भ्रामक कहकर बदनाम नहीं किया जा सकता। डाबर इंडिया ने पतंजलि के 25 सेकंड के विज्ञापन को चुनौती दी थी।

****

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

शाबाश बिहार

दूसरे चरण का मतदान संपन्न होने के साथ ही बिहार में 2,600 से अधिक प्रत्याशियों का भाग्य ईवीएम में बंद हो गया है। यह बेहद संतोष की बात है कि पहले चरण की तरह ही दूसरे चरण का मतदान भी शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हो गया, बल्कि जिस बड़े पैमाने पर राज्य के मतदाता दूसरे चरण में भी मतदान केंद्रों पर उमड़े, वह बिहार की चुनावी तारीख में एक नया कीर्तिमान स्थापित करने जा रहा है। चुनाव आयोग अंतिम आंकड़ा तो बाद में दर्ज करेगा, मगर तीन बजे तक ही किशनगंज, बांका, कटिहार, पूर्णिया, जमुई आदि जिलों में 63 प्रतिशत से अधिक मतदान की सूचना से यह साफ हो गया था कि बिहार अपने सर्वाधिक मतदान की पटकथा लिख चुका है। जिस तरह, पहले चरण के चुनाव प्रचार के दौरान दुलारचंद यादव की हत्या हुई और उसके बाद राज्य का राजनीति माहौल गरमाया, उसे देखते हुए यह अंदेशा था कि कहीं एक बार फिर बिहार दशकों पहले के उस शर्मनाक दौर में न पहुंच जाए, जब चुनावी हिंसा उसकी राजनीतिक संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हुआ करती थी। मगर चुनाव आयोग, राज्य प्रशासन और तमाम राजनीतिक दलों की सराहना की जानी चाहिए कि उन्होंने हालात को बिगड़ने नहीं दिया, बल्कि उन्होंने मतदाताओं को प्रेरित किया कि वे बेखौफ होकर अपना नागरिक कर्तव्य निभाएं।

हिंदी पट्टी को लेकर यह आम शिकायत रही है कि यहां के मतदाता मतदान को अहमियत नहीं देते और अपना लोकतांत्रिक दायित्व निभाने से कतराते हैं। ऐसे में, बिहार का नया मतदान कीर्तिमान इस छवि को अवश्य बदलने का काम करेगा। पहले चरण में ही राज्य में 64.66 प्रतिशत की रिकॉर्ड वोटिंग दर्ज की जा चुकी है। पिछले साल झारखंड में भी 67.62 प्रतिशत मतदान हुआ था, जबकि इसके पांच वर्ष पहले यहां करीब 65 प्रतिशत वोट पड़े थे। बिहार का यह संदेश उत्तर प्रदेश तक बखूबी पहुंचना चाहिए, जहां 2017 के मुकाबले 2022 में करीब चार प्रतिशत की गिरावट देखी गई थी। वहां 2027 की शुरुआत में चुनाव होने वाले हैं। यह एक स्थापित तथ्य है कि किसी भी लोकतंत्र की सफलता उसके नागरिकों की अधिकतम भागीदारी से सुनिश्चित होती है, ऐसे में कम मतदान प्रतिशत उसकी वैधता को नैतिक आधार से वंचित कर देता है। चुनाव आयोग और राजनीतिक दलों का यह दायित्व बनता है कि वे मतदाताओं के इस उत्साह को मंद नहीं पड़ने दें।

हिंदी पट्टी को लेकर यह शिकायत रही है कि यहां के मतदाता अपना लोकतांत्रिक दायित्व निभाने से कतराते हैं। ऐसे में, बिहार का नया मतदान कीर्तिमान इस छवि को बदलेगा।

बिहार विधानसभा का यह चुनाव इस बात के लिए भी याद रखा जाएगा कि चुनाव से ऐन पहले निर्वाचन आयोग ने राज्य में मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान (एसआईआर) चलाया और उसकी इस कवायद से उठा विवाद सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप से शांत हुआ, बल्कि इस एसआईआर पर शीर्ष अदालत का आखिरी फैसला अभी आया भी नहीं है और वहां मतदान संपन्न हो चुका है। इस पूरे विवाद ने चुनाव आयोग की भूमिका को लेकर राजनीतिक दल ही नहीं, मतदाताओं के मन में भी तमाम तरह के सवाल पैदा किए। इसलिए मुनासिब यही है कि बिहार के रिकॉर्ड मतदान को यह सांविधानिक संस्था अपनी छवि पर मुहर के रूप में न ले, बल्कि इसकी एक व्याख्या मतदाताओं की प्रतिक्रिया के रूप में भी की जाएगी। एक तथ्य यह भी है कि इस बार बहुत सारे मतदाता छठ पूजा के लिए अपने गांव-घर पहुंचे और मतदान के लिए रुक गए थे। बेहतर होगा कि आयोग इस उत्साह को अपनी सकारात्मक पहल से आगे ले जाए।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 12 नवम्बर, 1950

राणाशाही की तानाशाही

भारत की उत्तरी तथा उत्तर-पूर्वी सीमा अभी तक अभेद्य समझी जाती रही है। इस ओर से हमारा देश शताब्दियों ही नहीं, सम्भवतः सहस्त्राब्दियों से निश्चिन्त-सा रहा है। लेकिन आज तिब्बत तथा नेपाल की घटनाओं ने भारत को सतर्क तथा चिन्तित बना दिया है। तिब्बत, जिसे सरदार पटेल ने संसार का सर्वाधिक शान्तिप्रिय देश बताया है, साम्यवादी आक्रमण से पीड़ित है, तो नेपाल ने राणाशाही की तानाशाही से मुक्त होने के लिए कमर कस ली है। यद्यपि नेपाल में लोकतंत्र के दमन तथा सामन्तवाद के कारण कई वर्षों से जनता में असन्तोष की वृद्धि होती जा रही थी और नेपाली कांग्रेस का आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा था, किन्तु उसकी परिणति ऐसे आकस्मिक और नाटकीय विस्फोट के रूप में होगी, इसकी आशंका बहुत कम लोगों को थी।

नेपाल नरेश त्रिभुवन वीर विक्रम शाहदेव के लिए जब राणाशाही का निरंकुश शासन असह्य हो उठा, तो उन्होंने काठमांडू में भारतीय दूतावास में शरण ग्रहण कर ली और अब वह विमान द्वारा दिल्ली पहुंच गये हैं। किन्तु बिगड़ी हुई स्थिति को उचित रूप में सुलझाने का प्रयत्न न कर नेपाल के प्रधानमंत्री महाराणा मोहन शमशेर जंग बहादुर राणा ने, जो प्रधान सेनापति भी हैं, राजा के सबसे छोटे पौत्र को, जिसकी आयु अभी केवल तीन वर्ष की है, नेपाल का नवीन नरेश घोषित कर दिया है। स्थिति कैसी असह्य हो उठी है, इसका पता इस बात से लग जाता है कि राजकुमार भी अपने ज्येष्ठ पुत्र के साथ भारतीय दूतावास में आ गये। अतएव इस स्थिति में भारत नेपाल के नये नरेश को किस प्रकार स्वीकार कर सकता है।

नेपाल में जन-क्रान्ति : जन-क्रान्ति के लिए उपयुक्त अवसर देखकर नेपाली कांग्रेस ने बाकायदा राणाशाही के विरुद्ध विद्रोह प्रारम्भ कर दिया है। उसकी राष्ट्रीय सेना ने नेपाल के दूसरे बड़े नगर वीरगंज पर अधिकार कर लिया है और वहां के राज्यपाल ब्रिगेडियर सोम शमशेर जंग बहादुर राणा, उनकी पत्नी, उनके बच्चे तथा कई उच्च अधिकारियों को गिरफ्तार कर समानान्तर सरकार स्थापित कर दी है। यह राष्ट्रीय सेना स्टेनगनों से लैस है। नेपाली कांग्रेस के नेता थिरूग मल्ला इसका नेतृत्व कर रहे हैं और वह इस कार्रवाई में घायल भी हुए हैं।

अब वेतन आयोग की सिफारिशों पर नजर

यहां स्कैन करें

अरुण कुमार | वरिष्ठ अर्थशास्त्री

तनख्वाह बढ़ने से कुछ लोगों के हाथों में पैसे आ जाते हैं और बाजार में नकदी बढ़ जाती है, पर केंद्रीय बजट में घाटा भी बढ़ जाता है। इससे निपटने के उपाय भी करने होंगे।

इन दिनों आठवें वेतन आयोग को लेकर देश में हलचल तेज है। इसके 'टर्म ऑफ रेफरेंस', यानी आयोग के कामकाज की शर्तें और सीमाएं बताने वाले दस्तावेज जारी कर दिए गए हैं। मगर, आरोप यह भी लग रहे हैं कि सातवें और आठवें वेतन आयोग की शर्तों में अंतर है, जिसके कारण 69 लाख पेंशनभोगी इस प्रक्रिया से बाहर हो गए हैं।

हालांकि, एक बहस आयोग की सिफारिशों का देश के श्रम-बल और यहां की आर्थिकी पर पड़ने वाले असर को लेकर भी चल रही है। यह सच है कि तकरीबन हर दस साल पर वेतन आयोग का गठन किया जाता है, क्योंकि सरकार मानती है कि अगर महंगाई के हिसाब से तनख्वाह में बढ़ोतरी न हो, तो कर्मचारियों के जीवन-स्तर में गिरावट आती है। यह एक अच्छी सोच है। मगर ऐसी सिफारिशें सरकारी खजाने पर बोझ भी बढ़ाती हैं। संभवतः इसीलिए, इस बार आयोग के सामने यह शर्त रखी गई है कि वह ऐसी सिफारिशें न दे, जिनसे सरकार का आर्थिक घाटा और बढ़ जाए।

सुखद यह है कि अपने यहां राजस्व खर्च (वेतन आदि पर सरकार का खर्च) बहुत अधिक नहीं है। यह कुल बजट खर्च का औसतन सात प्रतिशत है। फिर, तमाम सरकारी खर्च गैर-उत्पादक नहीं माने जाते। मसलन, रेलवे, डाक और दूरसंचार आदि अनिवार्य सेवाएं हैं, इसलिए यहां वेतन पर जो खर्च होता है, वे उत्पादक होते हैं। पुलिस और सुरक्षा कर्मियों पर किया जाने वाला खर्च भी अनिवार्य है। इसका मतलब है कि दफ्तरों में कथित 'बाबुओं' की संख्या ज्यादा नहीं है। इसीलिए, अगर वेतन आयोग सिफारिशें करता भी है, तो सरकार पर उत्पादक खर्च का दबाव बढ़ेगा, गैर-उत्पादक खर्च का ज्यादा नहीं।

फिर, भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी 29.12 प्रतिशत है, इस कारण कुल वेतन में सरकारी क्षेत्र का योगदान 39 प्रतिशत है। यह दूसरे देशों की तुलना में काफी कम है।

मसलन, जीडीपी में सरकारी क्षेत्र की हिस्सेदारी अमेरिका में 36.28 प्रतिशत है, फ्रांस में तो 56.99 प्रतिशत और जापान में 41.16 प्रतिशत। इसका अर्थ है कि अन्य देशों में हर एक लाख आबादी पर सरकारी कर्मचारियों की संख्या भारत की तुलना में काफी ज्यादा है। भारत में करीब 1.8 करोड़ सरकारी कर्मचारी हैं, जो कुल श्रमबल का 3.5 प्रतिशत हिस्सा हैं। इसके बरअक्स संगठित कार्यबल का आधा हिस्सा निजी क्षेत्र में काम करता है, जहां वेतन आयोग की सिफारिशें परोक्ष रूप से असर डालती हैं।

देखा जाए, तो यही वह मुकाम है, जहां वेतन आयोग को लेकर संगठित क्षेत्र बनाम असंगठित क्षेत्र की बहस खड़ी की जाती है। यह तर्क दिया जाता है कि असंगठित क्षेत्र को नुकसान हो रहा है, क्योंकि संगठित क्षेत्र में वेतन अधिक है। चूंकि निजी क्षेत्र की मंशा अधिक से अधिक मुनाफा कमाने की होती है, इसलिए यहां कर्मचारियों पर कई तरह के दबाव होते हैं। हालांकि, इसकी भरपायी वेतन-वृद्धि से करने की कोशिश भी की जाती है, जैसे- ज्यादा कर्मचारियों के बजाय कम कर्मियों की नियुक्ति करके उनको सामान्य से अधिक तनख्वाह देना। साथ ही, नियमित कर्मचारियों की जगह अनुबंध पर कामगार भी रखे जाते हैं। मगर इस कारण निजी क्षेत्र में असमानता भी काफी ज्यादा बढ़ गई है।

इससे पार पाना बहुत आवश्यक है, जिसके लिए जरूरी है कि हरेक कर्मचारी को कम से कम जीवन गुजारने लायक वेतन मिले। और, यह तब होगा, जब उसके पास काम होगा, क्योंकि रोजगार की कमी की वजह से ही असंगठित क्षेत्र के कर्मी अपने लिए बेहतर वेतन की मांग नहीं कर पाते, जबकि सरकारी कर्मियों के पास अपनी मांग पर जोर देने के लिए धरना या हड़ताल जैसे विकल्प होते हैं।

वेतन आयोग का एक असर अर्थव्यवस्था पर यह भी होता है कि अचानक उसमें मांग बढ़ जाती है। मुझे याद है, वर्ष 2006-07 में जब छठे वेतन आयोग की सिफारिशें लागू हुई थीं, तब शिक्षकों को तीन-चार लाख रुपये अतिरिक्त मिल गए थे, जिससे उन्होंने कई तरह (कार, टीवी आदि) की खरीदारी की थी। इसी तरह की खरीदारी आठवें वेतन आयोग की सिफारिशों के लागू होने के बाद भी संभव है। हालांकि, इस लाभ को बनाए रखने के लिए असंगठित क्षेत्र के मुलाजिमों का ध्यान रखना जरूरी है, क्योंकि जीवन-स्तर में असमानता होने के कारण निजी क्षेत्र की तरफ से बाजार में मांग कम बढ़ती है, जिससे कुछ दिनों के बाद ही संगठित क्षेत्र की बढ़ी हुई मांग पूर्ववत स्तर पर आ जाती है। इतना ही नहीं, मांग बढ़ते ही कंपनियां अपने उत्पादों के दाम बढ़ा देती हैं, जिससे महंगाई में इजाफा होता है। साल 2006-07 में भी ऐसा ही हुआ था।

बेशक, तनख्वाह बढ़ने से कुछ लोगों के हाथों में पैसे आ जाते हैं और बाजार में नकदी बढ़ जाती है, लेकिन केंद्रीय बजट में घाटा भी बढ़ जाता है। इससे बचने के लिए काले धन की व्यवस्था पर दबिश एक विकल्प हो सकता है। दरअसल, प्रत्यक्ष कर जीडीपी का कमोबेश 6.5 प्रतिशत है। अगर काला धन का कारोबार कम हो जाए, तो यह हिस्सेदारी बढ़कर 15-16 प्रतिशत हो सकती है। इस कारण, वेतन-वृद्धि से सरकारी खजाने पर पड़ने वाले भार को आसानी से टाला जा सकता है।

इसके लिए सरकारी कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने पर भी विचार होना चाहिए। मसलन, अभी आयकर विभाग के पास पांच से छह हजार अधिकारी हैं। अधिकारियों की यह संख्या तब से है, जब आयकर जमा करने वाली आबादी बमुश्किल दो से तीन करोड़ थी। अब इसमें भारी वृद्धि हो चुकी है और तकरीबन 9.5 करोड़ लोग आयकर जमा करने लगे हैं। इसका मतलब है कि दो-तीन करोड़ लोगों के आयकर को जांचने के लिए जितने कर्मी उचित माने गए थे, उतने ही आज 9.5 करोड़ लोगों के आयकर जांच रहे हैं। बेशक, अब कंप्यूटरीकरण हो चुका है, लेकिन काली कमाई करने वाली आबादी को पकड़ने के लिए, जो एक से दो फीसदी है, और अधिक अधिकारियों की दरकार है।

जाहिर है, संगठित और असंगठित क्षेत्र के श्रम-बल के अंतर पर काम करने की जरूरत है। अगर इसमें कुछ सुधार हो जाए, तो वेतन आयोग की सिफारिशों का अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले असर को सकारात्मक दिशा दी जा सकती है। यह सरकारी बनाम निजी क्षेत्र या संगठित बनाम असंगठित क्षेत्र का संघर्ष नहीं है, बल्कि यह पूंजी और श्रम के बीच का टकराव है। इसी वजह से यह पूरी व्यवस्था जटिल हो जाती है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

डिजिटल जहर से समाज को बचाने की अनूठी पहल

यहां स्कैन करें

किंशुक पाठक | एसोशिएट प्रोफेसर, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय

महाराष्ट्र के सांगली जनपद के मोहित्यांचे वडगांव (जिसे संक्षेप में वडगांव कहा जाता है) में हर शाम सात बजे भैरवनाथ मंदिर से 45 सेकंड के लिए एक सायरन-ध्वनि गूंजती है, जो किसी चीनी मिल या अन्य औद्योगिक इकाई के कर्मचारियों के लिए बजने वाले सायरन से भिन्न है। यह ध्वनि दरअसल एक सूचना है कि अगले 90 मिनट (7 से 8:30 बजे तक) सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण-मोबाइल, टीवी इत्यादि बंद रहेंगे। दूसरा बजने वाला सायरन इस अवधि की समाप्ति की सूचना देता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्षेत्रवार समूहों का गठन किया गया है, जो हर घर जाकर इस पहल का महत्व समझाते हैं। इस 'डिजिटल कर्फ्यू' का उल्लंघन करने वालों को शुरू में चेतावनी दी जाती थी, लेकिन अब पूरा समाज इसका पालन करने का प्रयास करता है। माता-पिता भी नियम का अनुपालन करते हैं, ताकि बच्चे अकेला न अनुभव करें। इस 90 मिनट में बच्चे अध्ययन करते हैं, युवा पुस्तकें पढ़ते हैं या घर से बाहर निकलकर सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं।

वर्तमान दौर में स्मार्टफोन और टीवी हमारे रोजमर्रा के जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं, पर वडगांव ने इसको चुनौती दी है। इस गांव में लगभग 3,000 से 3,500 लोग रहते हैं। अधिकतर किसान या चीनी मिल श्रमिक हैं, जो प्रत्येक शाम डेढ़ घंटे के लिए 'डिजिटल डिटॉक्स' का पालन करते हैं। 15 अगस्त, 2022 को देश के स्वतंत्रता दिवस पर प्रारंभ हुई यह पहल अब न केवल ग्रामीण संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है, बल्कि आस-पास के गांवों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन गई है।

महाराष्ट्र के वडगांव में हर रोज पूरे डेढ़ घंटे तक कोई भी व्यक्ति मोबाइल, टीवी या दूसरे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण नहीं चलाता।

दरअसल, कोविड-19 के संक्रमण-काल में मानव व्यवहार में अप्रत्याशित परिवर्तन देखा गया। इसने 2020 से 2022 तक शिक्षा के ऑनलाइन माध्यम को अनिवार्य बना दिया, जिससे कम आयु के बच्चों और युवाओं में मोबाइल फोन के प्रयोग को लेकर एक बुरे व्यवहार ने जन्म लिया। एक सर्वेक्षण के अनुसार, 18 वर्ष से कम आयु के 65 प्रतिशत बच्चों में फोन चलाते रहने की मानो लत पड़ गई, जो 30 मिनट से अधिक समय तक फोन से दूर रहने में असमर्थ थे।

वडगांव के सरकारी विद्यालयों में भी बच्चे कक्षाओं में एकाग्र नहीं रह पा रहे थे; वे निरंतर वीडियो देखने या सोशल मीडिया में खोए रहते। तब इतिहास के शिक्षक जयवंत विट्ठल मोहिते जैसे कई सेवानिवृत्त शिक्षकों ने इस समस्या को समझा और और इसके नुकसान का अनुमान लगाया। सबके प्रयास से गांव के मुखिया विजय मोहिते ने अगस्त 2022 में अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय लिया और सार्वजनिक घोषणा की कि 'डिजिटल विष' से अपने समाज को बचाना है और स्वतंत्रता दिवस पर इस मुहिम को अंजाम दे दिया गया। जिला विकास अधिकारी, आंगनवाड़ी कर्मी, आशा कार्यकर्ता व स्थानीय महिलाओं के सामूहिक सहयोग से इस मुहिम का कार्यान्वयन हुआ और लक्ष्य की प्राप्ति हुई।

मोबाइल और अन्य इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों का अत्यधिक उपयोग एकाग्रता, बौद्धिक ह्रास, भावनात्मक व्यवहार और रचनात्मकता को प्रभावित करता है। भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्रालय के अनुसार, लगभग एक-तिहाई नाबालिग बच्चे मोबाइल से होने वाले दुष्परिणामों से प्रभावित हैं। ऐसे में, 'डिजिटल डिटॉक्स' पहल का प्रमुख उद्देश्य बच्चों के भविष्य को सुरक्षित बनाने का प्रयास है।

जब लक्ष्य सकारात्मक बदलाव का हो, तब समाज भी साथ आ खड़ा होता है। डिजिटल डिटॉक्स मुहिम का परिणाम यह हुआ कि एक माह में ही अंतर साफ दिखने लगा। छात्रों के अध्ययन में सुधार हुआ, रचनात्मकता में वृद्धि हुई और स्कूल में उनके व्यवहार में और स्पष्ट बदलाव नोटिस किया गया। इन नतीजों को ध्यान में रखते हुए सरपंच विजय मोहिते ने अब इसे ढाई घंटे तक करने का विचार किया है। सांगली जिले के पांच अन्य गांवों ने भी इसे अपनाया है, जो इसकी सफलता का प्रमाण है।

जैसे-जैसे डिजिटल दुनिया विस्तृत हो रही है, वडगांव मॉडल जैसे प्रयोगों की अहमियत बढ़ती जा रही है। समाज को फिर से जोड़ने और संबंधों को पुनर्जीवित करने में ये रामबाण बन सकते हैं। इस पहल ने एक बार फिर हमें स्मरण कराया है कि तकनीक मनुष्य की सहजता के लिए है, न कि स्वामी बनने के लिए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

प्रह्लाद सा विश्वास कीजिए

यदि किसी का पिता किसी ऊंचे पद पर हो, तो उस बच्चे की बोलचाल में, बातचीत के ढंग में पिता का प्रभाव आएगा। ऐसे बच्चे को अपने पिता पर अभिमान होता है। उतने ही मान से अगर हम ईश्वर को मां-बाप जानते होते, तो हमारे अंदर भी यह गर्व होता कि हमको किस बात की चिंता? जब परमात्मा हमारे माता-पिता हैं, तो हमें चिंता करने की क्या जरूरत है? मैंने चिंता उसी को दे दी, जिसने जल में उत्पन्न जीव-जन्तुओं के भोजन की व्यवस्था कर रखी है, वह मेरी भी चिंता कर लेगा।

जो सारी सृष्टि की देखभाल कर रहा है, क्या वह एक मनुष्य की देखभाल नहीं करेगा? हम क्यों चिंता करें? यह चिंता करने का काम हमारा नहीं, जिसका है, वह करे। हम ऐसा बोलते तो हैं कि *त्वमेव माता च पिता त्वमेव*, लेकिन दिल में ऐसा भाव पक्का भी होना चाहिए कि ईश्वर ही मेरे माता-पिता हैं।

प्रह्लाद से उनके पिता हिरण्यकश्यपु ने कहा, 'विष्णु मेरा दुश्मन है, यदि तू उसका नाम लेगा, तो मैं तुझे मार डालूंगा।' प्रह्लाद ने कहा, 'पिताश्री! जिसने जन्म दिया है, मारेगा भी वही। आप कोशिश करके देख लो। आप मुझे नहीं मार सकते, क्योंकि मेरा जन्मदाता तो कोई और है। श्वास और जीवन के जितने पल मेरे जन्मदाता ने मुझे दिए हैं, वे मुझसे कोई और नहीं छीन सकता।'

प्रह्लाद मात्र छह साल के थे। छह साल के बच्चे में इतना गहरा विश्वास, इतनी गहरी अनुभूति थी कि उसने कहा, 'परमात्मा ही मेरे पिता हैं। वही मेरे रक्षक हैं। वही जन्मदाता हैं।' सामने खड़ा पिता लाल-लाल आंखें करके हिंसक प्रवृत्ति में आ गया, पर अपने पुत्र को भयभीत नहीं कर पाया। कहते हैं कि हिरण्यकश्यपु ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि लोहे के खंभे को तपाकर लाल कर दो और उससे इसको चिपटा दो। हिरण्यकश्यपु का यही हठ था कि प्रह्लाद से अपनी बात मनवानी ही है। सैनिकों ने लोहे के खंभे को तपाया और प्रह्लाद को पकड़कर ले गए। अब प्रह्लाद थे तो बच्चे ही, उनके मन में भय की लहर उठी, तो भगवान ने अजब लीला रची। प्रह्लाद ने देखा कि एक चींटी उसी खंभे पर आराम से चल रही थी। प्रह्लाद मन में सोचने लगे कि मुझसे बहुत छोटी और कमजोर चींटी भी खंभे पर आहत हुए बिना सैर कर रही है, तो मेरा हरि मुझसे कह रहा है कि बच्चे! चिंता मत कर, मैं तेरा रक्षक हूं। यह लाल खंभा तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। जैसे चींटी कह रही है कि 'तू कर ले इस खंभे का आलिंगन! तेरा राखनहार राम हैं, तुझे कोई नहीं मार सकता।' उन्हें मालूम था कि इस चींटी के रूप में नारायण ही आए हैं।

जो सारी सृष्टि की देखभाल कर रहा है, क्या वह एक मनुष्य की देखभाल नहीं करेगा? प्रह्लाद जैसा यह विश्वास जब एक भक्त को अपने प्रभु पर होता है, तो वह किसी से घबराता नहीं है।

प्रह्लाद जैसा ही विश्वास जब एक भक्त को अपने प्रभु पर होता है, तो वह किसी से घबराता नहीं है। वह जानता है कि मेरा रक्षक परमात्मा ही है।

आनंदमूर्ति गुरुमां

तस्लीमा नसरीन | बांग्लादेशी लेखिका

आलोचना के बिना समाज आगे नहीं बढ़ता। दास प्रथा के उन्मूलन से लेकर औरतों के हुकूक पाने तक, हर बड़े सुधार की शुरुआत ऐसे लोगों से हुई, जिन्होंने परंपराओं पर सवाल उठाने और जुल्म को बेनकाब करने का साहस किया।

ऐसी दहशतगर्दी हमारी परीक्षा लेती रहेगी

राजधानी दिल्ली के लाल किले मेट्रो स्टेशन के बाहर कार धमाके की घटना ने राष्ट्रीय सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं, हालांकि इस तरह की वारदातों को पूरी तरह रोक पाना काफी मुश्किल काम है। इस विस्फोट की तीव्रता इतनी भयावह थी कि आसपास की दुकानों के शीशे तक चूर-चूर हो गए और आग की लपटों ने कुछ पलों के लिए पूरे क्षेत्र को अंधेरे में डूबो दिया। इस विस्फोट की सूचना मिलते ही दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल, एनएसजी ब्लैक कैट कमांडो, बम निरोधक दस्ते और फॉरेंसिक विशेषज्ञों की टीमें मौके पर पहुंच गईं, जो बताता है कि हमारी सुरक्षा व खुफिया तत्पर हैं और पूरी तरह सक्षम भी। गौरतलब है कि लाल किला मेट्रो स्टेशन दिल्ली का एक ऐसा क्षेत्र है, जहां रोजाना लाखों लोग आते-जाते हैं। यह स्थान न केवल ऐतिहासिक धरोहर है, बल्कि पर्यटन और व्यापार का केंद्र भी है। इतने संवेदनशील इलाके में इस तरह का सुनियोजित हमला संकेत है कि असामाजिक तत्व फिर से सक्रिय होने लगे हैं। इससे स्वाभाविक ही आम जनता में दहशत का माहौल है, लेकिन ऐसी वारदातों से भारत रुकता नहीं है। यह घटना भले ही लोगों में आक्रोश पैदा करे, लेकिन इस समय संयम बरतना और एकजुट बने रहना बेहद जरूरी है। हमें अफवाहों और सांप्रदायिक तनाव को बढ़ावा देने वाली किसी भी गतिविधि से बचना चाहिए। यह कायराना, दुर्भाग्यपूर्ण और दिल दहलाने वाली घटना है, जो भारत-विरोधियों की नापाक मंशा को उजागर करती है। हमें उनके खिलाफ पूरी ताकत से प्रतिरोध करना होगा और अपने सुरक्षा मानकों को बेहतर बनाना होगा।

वीरेंद्र कुमार जाटव, टिप्पणीकार

यह सही है कि बीते कुछ समय से आतंकी वारदातों में काफी कमी आई है और हमारे सुरक्षा बल लगातार आतंकियों से सफलतापूर्वक मोर्चा लेते रहे हैं, लेकिन सच यह भी है कि भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में दहशतगर्दी का खतरा शायद ही खत्म हो। इसकी वजह यह भी है कि देश के पास एक विशाल आबादी है और इसकी सीमाएं पूरी तरह से बंद नहीं हैं। फिर भी, हमारे सुरक्षा बलों की तारीफ करनी चाहिए कि वे आतंकियों को आमतौर पर रोक देते हैं। रविवार और सोमवार को ही फरीदाबाद में करीब तीन हजार किलो विस्फोटक की बरामदगी बताती है कि हमारी एजेंसियां सावधान रहती हैं। हां, यह अलग बात है कि सोमवार को दिल्ली में धमाका हो गया। मगर जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कहा है, उम्मीद करनी चाहिए कि षड्यंत्रकारी जल्द बेनकाब होंगे।

रोहित कुमार, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

दिल्ली धमाका

सवाल सुरक्षा व्यवस्था पर जरूर उठेंगे

भारत की यह विडंबना ही है। यहां पता नहीं चलता कि कब, कौन और कहां काल का शिकार बन जाए! अति-सुरक्षित कहे जाने वाले क्षेत्र में भी यदि विस्फोट की घटना हो जाए, तो समझा जा सकता है कि स्थिति क्या है? देश की राजधानी और दिलवालों की नगरी कही जाने वाली दिल्ली के एक महत्वपूर्ण इलाके में कार विस्फोट हुआ, जिसने जान-माल की बड़ी हानि पहुंचाई। यह घटना ऐतिहासिक लाल किले के ठीक बगल में हुई है और जो तस्वीरें सामने आई हैं, वे दिल दहला रही हैं। सवाल यह है कि राजधानी दिल्ली की सख्त और चौकस सुरक्षा-व्यवस्था में दहशतगर्दों ने सेंध कैसे लगा दी? क्या यह हमारी खुफिया एजेंसियों की नाकामी का नतीजा है? अगर यह विस्फोटक से किया गया हमला है, तो राष्ट्रीय राजधानी में इसे कैसे लाया गया? निस्संदेह, इस मामले की जांच-पड़ताल से पूरी हकीकत सामने आ जाएगी, लेकिन यह समझना होगा कि जिन निर्दोषों की जान ऐसे हादसों में चली जाती है, उसकी भरपायी महज मुआवजे से नहीं हो सकती। अगर घटनाएं घट रही हैं, तो सवाल सुरक्षा व्यवस्था पर ही उठेंगे। अब खबर यह भी है कि दिल्ली धमाके के तार फरीदाबाद विस्फोटक बरामदगी और पुलवामा हमले से भी जुड़े हो सकते हैं। अगर यह सच हो, तो पहले क्यों नहीं इसका पता लगाया जा सका और समय रहते इसको निष्क्रिय किया जा सका? खैर, यह हादसा दर्दनाक है और समय का तकाजा है कि जो भी दोषी हैं, उनको तत्काल सजा दी जाए, ताकि भविष्य में भारत का कोई भी दुश्मन आंख उठाकर देखने की हिमाकत न कर सके।

हर्षवर्द्धन कुमार, टिप्पणीकार

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की भीड़-भाड़ वाली जगह पर एक कार में विस्फोट हुआ और कई लोगों की जान चली गई। कई घायल भी हुए हैं। निश्चय ही, यह कोई पहली घटना नहीं है, जो सुरक्षित क्षेत्र में हुई है। इससे पहले भी संवेदनशील इलाकों में सुरक्षा व खुफिया बलों को चकमा देकर आतंकी अपनी मंशा में सफल होते रहे हैं। मगर इस बार सवाल इसलिए उठ रहे हैं, क्योंकि माना यही जाता है कि देश मजबूत हाथों में है। क्या सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने के लिए उचित कदम नहीं उठाए गए? आखिर भारतीय सुरक्षा तंत्र में कहां खामी थी? क्या भारतीय खुफिया एजेंसियों में कोई कमी थी? क्योंकि सरकार इसके लिए उचित रणनीति नहीं बना पा रही? इन सभी सवालों के जवाब हमें ढूंढ़ने होंगे। इसके साथ ही सुरक्षा के कुछ अतिरिक्त प्रयास भी करने होंगे।

राजेश कुमार चौहान, टिप्पणीकार

देश के दुश्मन छिप न पाएंगे

हमारे सुरक्षा और खुफिया तंत्र में लगातार मजबूती आई है। पिछले कुछ सालों में बहुत तेजी से हमारी सुरक्षा का अपग्रेडेशन हुआ है। फिर भी यह निरंतर प्रक्रिया है और इस हमले से सबक मिला है कि अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। यह भी देखना होगा कि कट्टरपंथ बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। कट्टर लोग कितना नुकसान पहुंचा सकते हैं, यह समझने की जरूरत है।

वाई सी मोदी
पूर्व महानिदेशक, एनआईए

लाल किले के पास धमाके की घटना वास्तव में बहुत चिंता की बात है। जांच एजेंसियों को यह देखना होगा कि क्या फरीदाबाद में जब्त विस्फोटक सामग्री से इसका कोई संबंध है? या यह कश्मीर से जुड़ी हुई घटना है? एनआईए सहित अन्य पेशेवर एजेंसियां इसकी पड़ताल में जुट गई हैं, इसका खुलासा हो जाएगा, लेकिन जिस तरह से यह घटना हुई है, उसने कई प्रश्न खड़े किए हैं। कहां चूक रह गई, यह देखना होगा।

हमें देखना होगा कि हमारी सुरक्षा ग्रिड और खुफिया ग्रिड में लगातार मजबूती आई है। पिछले कुछ सालों में बहुत तेजी से अपग्रेडेशन हुआ है। फिर भी यह निरंतर प्रक्रिया है और इस हमले से सबक मिला है कि अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। देखना होगा कि कट्टरपंथ बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। पूरे देश में जनसंख्या के हिसाब से देखें या कई अन्य देशों से तुलना करें, तो यह अनुपात कम नजर आएगा। फिर भी यह बड़ी चुनौती है, क्योंकि एक कट्टर व्यक्ति कितना नुकसान कर सकता है, यह देखा जा सकता है। इस दिशा में एनआईए ने काफी काम किए हैं। गृह मंत्रालय की तरफ से कई कदम उठाए गए हैं, पर कट्टरपंथ से निपटने के लिए अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। जिस तरह के तथ्य सामने आए हैं, उन्हें देखते हुए आने वाले समय में यह चुनौती ज्यादा बड़ी हो सकती है।

> **दिल्ली धमाके के बाद एजेंसियों को अपने पूरे खुफिया तंत्र, सुरक्षा तंत्र के साथ समन्वित दृष्टि के साथ बहुत तेजी से काम करना होगा, क्योंकि चुनौती काफी बड़ी है। हर पहलू से जांच होनी चाहिए। साथ ही, इसमें स्थानीय पुलिस और आम नागरिकों से सहयोग लेना भी जरूरी है।**

दरअसल, राष्ट्र विरोधी गुट लगातार कुछ न कुछ नया करने की साजिश करते हैं। हमारी जितनी तैयारी होती है, उससे एक कदम आगे बढ़कर सोचते हैं। हमारी एजेंसियों को काउंटर रणनीति पर काम करना होगा। अगर दिल्ली धमाके की घटना का संबंध फरीदाबाद से निकला, तो इसकी जांच में ज्यादा आसानी होगी, क्योंकि इस मामले में एजेंसियां पहले ही कई गिरफ्तारी कर चुकी हैं। पकड़े गए लोगों से पूछताछ और उपलब्ध साक्ष्यों के वैज्ञानिक तरीके से जांच में सारा खुलासा हो जाएगा। वैसे कई बार निष्कर्ष पर पहुंचने में काफी समय लग जाता है। पुलवामा मामले में सारी कड़ियों को जोड़ने में हमें एक साल के करीब वक्त लग गया था। कश्मीर में जितने भी संदिग्ध लोग या आतंकी अलग-अलग मामलों में पकड़े गए थे, उन सबसे पूछताछ की गई थी।

हालांकि, पढ़े-लिखे पेशेवर का घटना में शामिल होना कोई नई बात नहीं है, पर यह चिंताजनक ट्रेंड है। एजेंसियां लगातार इस तरह के माड्यूल का खुलासा पिछले कुछ सालों से कर रही हैं। आतंकी सपोर्ट सिस्टम खत्म करने पर काम हो रहा है, लेकिन अब यह देखना होगा कि कैसे और ज्यादा कारगर तरीके खोजे जाएं। जहां तक कश्मीर में सख्ती की वजह से आतंकियों के दूसरे राज्यों या इलाकों में शिफ्ट होने की बात है, मैं इससे बहुत इत्तफाक नहीं रखता। क्योंकि कट्टरपंथ की गतिविधियां पहले से चल रही हैं। देश के अलग-अलग राज्यों में इस तरह के मामले पकड़ में आए हैं। एनआइए ने पहले भी ऐसे मामलों की जांच की है।

आतंकी-अपराधी गठजोड़ चुनौती जरूर है, पर एजेंसियां इस ट्रेंड को समझती हैं और यह भी नया नहीं है। दाऊद के समय को देखें, तो तब भी ऐसा नेटवर्क था। हमारी एजेंसियां उसे तोड़ने के लिए काम कर रही हैं।

घटना में शामिल कार की फोरेंसिक जांच और मारे गए लोगों की डीएनए जांच से कई चीजें स्पष्ट होंगी। जांच की दिशा फोरेंसिक सहित अन्य वैज्ञानिक सबूतों पर आगे बढ़ेगी। गाड़ी किसकी थी, किसने खरीदी, किस मकसद से खरीदी और अंतिम खरीदार का इससे क्या संबंध था, यह भी सामने आएगा।

स्लीपर सेल आदेश मिलने पर अचानक सक्रिय होकर हमला या लॉजिस्टिक सहायता देता है। कोई शिक्षित या असंतुष्ट युवक सोशल मीडिया पर कट्टर विचारधारा से प्रभावित होकर स्लीपर सेल में भर्ती होता है। उसे किसी छोटे व्यवसाय या नौकरी से जोड़ दिया जाता है, ताकि उसकी पहचान सामान्य दिखे। इन्हें आदेश और प्रशिक्षण ऑनलाइन दिए जाते हैं- कभी-कभी वीडियो ट्यूटोरियल के रूप में। जब ऊपर से आदेश मिलता है, तो ये सोए हुए सदस्य एक झटके में सक्रिय होकर हथियार या विस्फोटक पहुंचाते हैं।

संदिग्ध व्यक्ति की पहचान करना सूई को भूसे के ढेर में ढूंढ़ने जैसा काम है। पुलिस या एजेंसियों की जांच अक्सर सूचना पर आधारित होती है और जब तक सुराग मिलता है, नेटवर्क जगह बदल चुका होता है। फरीदाबाद मामले के बाद अब दिल्ली, गुरुग्राम, नोएडा, सूरत और पुणे पुलिस को इंडस्ट्रियल इंटेलिजेंस यूनिट बनाने की सलाह दी गई है, जो औद्योगिक क्षेत्रों में असामान्य गतिविधियों की निगरानी करे। स्लीपर सेल्स की पहचान केवल पुलिस नहीं कर सकती। किराएदार, मकान मालिक, सुरक्षा गार्ड, स्थानीय लोग अगर सतर्क रहें और समय पर सूचना दें, तो कई बड़ी साजिशें रोकी जा सकती हैं। सुरक्षा एजेंसियों ने हाल ही में संदेहास्पद एक्टिविटी हेल्पलाइन भी सक्रिय की है, ताकि आम नागरिक सहयोग कर सकें। फरीदाबाद बरामदगी ने जो रास्ता दिखाया है, वह डराने वाला भी है और चेतावनी भी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

जर्रे-जर्रे में दोषियों की तलाश : लाल किले के निकट जहां धमाका हुआ, वहां एजेंसियों की कड़ी निगाह।

587
आतंकी घटनाएं साल 2010 में अकेले जम्मू-कश्मीर में हुई थीं। उस दौर में देश का लगभग हर बड़ा शहर धमाकों के साये में जीता था।

210
आतंकी घटनाएं साल 2024 में अकेले जम्मू-कश्मीर में हुईं। बीते दस वर्ष में धमाकों व हिंसा में काफी कमी आई है। देश के दुश्मन कमजोर हुए हैं।

इंटनरेट और कट्टरपंथ के घातक घालमेल से मुकाबला जरूरी

वीपीएन, डार्क वेब और क्रिप्टो जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए काम हो रहा है। सुरक्षा एजेंसियों के सामने प्रोफेशनल्स अपराधियों तक पहुंचना आसान इसलिए नहीं होता, क्योंकि ये आम लोगों के साथ मिलकर रहते हैं। इनका आपराधिक रिकॉर्ड नहीं होता। अब बिहेवियरल एआई सर्विलांस और डिजिटल फुटप्रिंट मैपिंग जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल हो रहा है। इन चुनौतियों पर एजेंसियों की नजर है। सोशल मीडिया के नए टूल भी आतंकी ट्रेनिंग और पहचान छिपाकर संपर्क का बड़ा जरिया बन रहे हैं।

देश विरोधी हिंसक तत्वों के स्लीपर सेल तबाह होने चाहिए

आतंकवाद की जड़ें कश्मीर से बाहर न फैलने पाएं, इसके लिए समन्वय राज्यों के साथ काफी बढ़ा है, इसका विस्तार होना चाहिए। भारत के अलग-अलग शहरों में इनके सपोर्ट सिस्टम की मौजूदगी को पूरी तरह ध्वस्त करना होगा। आतंक के अलग-अलग माड्यूल का स्लीपर सेल पूरे देश में फैला हुआ है। जो भी इनपुट मिलता है, उस पर त्वरित एक्शन जरूरी है। नकली आईडी, बिना पूछताछ के रहने या गोदाम किराये पर लेने की सुविधा की गहन पड़ताल जरूरी है। लोकल पुलिस को जागरूक व प्रशिक्षित करना चाहिए।

आतंकियों- संगठित अपराधियों के तीन घेरों को तोड़ने की जरूरत

सफेदपोश आतंकी मॉड्यूल पर सर्वाधिक काम अमेरिका में नजर आता है। सफेदपोश आतंकियों को पालने वाले आतंकी संगठन तीन घेरे में काम करते हैं। सबसे बड़ा घेरा दानदाताओं का होता है, जो किसी खास मकसद के लिए गुप्त रूप से धन देते हैं। इस बड़े घेरे के अंदर दूसरा घेरा होता है, यह आतंकवाद के सहयोगियों का घेरा है। इस दूसरे घेरे के अंदर तीसरा घेरा होता है, जहां कट्टर आतंकी पलते हैं। खुफिया एजेंसियां बाहरी या बड़े घेरे को ही सबसे खतरनाक मानती हैं, क्योंकि यह घेरा समय-समय पर आतंकी पैदा करता है। पैसे लेकर कोई भी काम करने वाले सफेदपोश अपराधी भी बड़ा खतरा बन रहे हैं।

सतर्क रहें, ताकि धमाकों की पुनरावृत्ति न हो सके

बृज लाल
सांसद एवं पूर्व डीजीपी

दिल्ली और फरीदाबाद की घटनाएं साफ इशारा हैं कि अराजक समूह भारतीय शहरों के अंदर फिर साजिश रच रहे हैं। साल 2014 से पहले देश में अनेक शहरों में विस्फोट होते थे। साल 2014 में ही यह स्पष्ट कर दिया गया कि भारत पहले केवल निंदा करने की परिपाटी निभाता था, पर अब भारत बदल गया है, वह घुसकर मारेगा। इसका नतीजा यह हुआ कि कश्मीर को अगर छोड़ दीजिए, तो बाकी शहरों में बड़े विस्फोट बंद हो गए।

मैं उत्तर प्रदेश में एटीएस का फाउंडर चीफ रहा हूं। यूपीएसटीएफ और लॉ ऐंड ऑर्डर का भी चीफ रहा हूं। मैं अनेक ऐसी घटनाओं को जानता हूं, जब हमने साजिशों को मुंहतोड़ जवाब दिया। निस्संदेह, फरीदाबाद में विस्फोटक सामग्री बरामद होने की ताजा घटना के बाद हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए। इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक सामग्री का मिलना चिंता की बात है।

आज इसे समझ लेना चाहिए कि इंडियन मुजाहिदीन कैसे बना था। पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन ने जब देखा कि वह आतंकी भेजता है और आतंकी पकड़े जाते हैं, इससे पाकिस्तान की बदनामी भी होती है। पाकिस्तान इस वजह से ग्रे लिस्ट में आ गया था, तो वहां के आतंकी आकाओं ने सोचा कि क्यों न भारतीय मुस्लिमों से ही आतंकी वारदात कराई जाए। इसके बाद ही इंडियन मुजाहिदीन का गठन हुआ। तब मुजाहिदीन की ट्रेनिंग मुजफ्फराबाद में लश्करे तैयबा के मुख्यालय में हुई थी। इन मुजाहिदीन ने जब आतंकी वारदात को अंजाम देना शुरू किया, तब हमारे शहरों में धमाके होने लगे। 29 अक्तूबर 2005 को दिल्ली के सरोजनीनगर में धनतेरस के दिन धमाके हुए थे। मुजाहिदीन सीरियल ब्लास्ट करते थे। तब भी हमारी एजेंसियां आतंकियों के पीछे लगी थीं और उसके बाद सबसे मुख्य जो आतंकी मारा गया, उसका नाम आतिफ अमीन था, आजमगढ़ का रहने वाला था, नार्थ इंडिया कमांडर था। उसके बाद ही इंडियन मुजाहिदीन का खुलासा हुआ।

लोग आज भी भूले नहीं हैं कि तब कैसे दिल्ली, अहमदाबाद, मुंबई, बनारस, जयपुर, अयोध्या, लखनऊ इत्यादि शहरों में धमाके होते थे। तमाम सरकारें सक्रिय हुईं और अनेक आतंकी पकड़े गए। उन्हें सजा मिली। लोग यह भी नहीं भूले हैं कि तब इस मुद्दे पर राजनीति भी होती थी। धमाकों में शामिल लोगों के प्रति सहानुभूति भी जताई जाती थी। सहानुभूति दर्शाने के लिए तब पुस्तकें भी लिखी गईं। तब केंद्र में यूपीए की सरकार थी। मुंबई पर 26/11 को आतंकी हमला हुआ, तब आईपीएस अफसर भी शहीद हुए, पर अफसोस, तब भी नरमी बरती गई थी। हमारी दृष्टि में ही दोष था और हम लगातार हमले के शिकार हो रहे थे। आंकड़े गवाह हैं, साल 2014 के बाद स्थितियां बदली हैं। अब आतंकी संगठन अगर फिर साजिश कर रहे हों, तो अचरज नहीं। हमें सतर्क रहना होगा। इतने वर्षों में अर्जित शांति हाथ से नहीं फिसलनी चाहिए।

> **जितने भी महत्वपूर्ण संस्थान हैं, उनकी सुरक्षा चाक-चौबंद कर लेनी चाहिए। विगत दशक में जो सुरक्षा का घेरा बना है, उसकी वजह से ही हम एक दशक के समय में ग्यारहवीं अर्थव्यवस्था से चौथी पर पहुंच गए हैं। वरना एक दौर था, जब दुनिया के अनेक देशों में भारत न आने के दिशा-निर्देश जारी हुआ करते थे। वह स्थिति फिर नहीं आनी चाहिए।**

दिल्ली के धमाके के बारे में अभी स्पष्ट तो नहीं हुआ है, पर ऐसा लगता है कि बड़े पैमाने पर आमोनिया नाइट्रेट जुटाया गया था। इस घटना को मैं सुरक्षा की नाकामी नहीं मानता हूं। यह गौर करने की बात है कि समय रहते 2,900 किलोग्राम विस्फोटक सामग्री बरामद हुई, हथियार बरामद हुए। इससे यह आशंका तो लगती है कि देश में जगह-जगह धमाके की साजिश थी, पर जब विस्फोटक सामग्री बरामद हो गई, तो साजिशकर्ता निराश हुए। निराशा में ही उन्होंने धमाके को अंजाम दिया। अगर यह फिदायीन हमला था, तो कार में एक अपराधी पर्याप्त होता, पर ऐसा लगता है कि कार में तीन लोग थे। मतलब, उन्हें पता चल गया था कि एजेंसियां पीछे पड़ गई हैं, गिरफ्तारी शुरू हो गई है और बचना मुश्किल है।

अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि दिल्ली-फरीदाबाद की घटना ऑपरेशन सिंदूर से उपजी निराशा से निकलने के लिए हो सकती है। वे हमें यह बताना चाहते हैं कि वे अब भी इस देश में वजूद रखते हैं। उन्होंने अपना तरीका बदला है, पढ़े-लिखों को लेकर गिरोह बनाया है, तो हमारी एजेंसियों को भी मुंहतोड़ जवाब देने के लिए तैयार रहना चाहिए। वैसे, हम सावधान थे और उससे भी ज्यादा सावधानी के साथ हमें आगे बढ़ना है। विस्तार से जांच चल रही है, जल्दी ही साजिश का पूरा पर्दाफाश होगा।

भारत सरकार ऐसी स्थिति से निपटना जानती है। एजेंसियों को पूरी तरह से अलर्ट रहना चाहिए, जितने भी महत्वपूर्ण संस्थान हैं, उनकी सुरक्षा चाक-चौबंद कर लेनी चाहिए। विगत दशक में जो सुरक्षा का घेरा बना है, उसकी वजह से ही हम एक दशक के समय में ग्यारहवीं अर्थव्यवस्था से चौथी पर पहुंच गए हैं। वरना एक दौर था, जब दुनिया के अनेक देशों में भारत न आने के दिशा-निर्देश जारी हुआ करते थे। वह स्थिति फिर नहीं आनी चाहिए।

भूलना नहीं चाहिए कि ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है। मैंने साढ़े सैंतीस साल वर्दी पहनी है, मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि जांच जिस गति से जारी है, उसमें कुछ दिन में ही इस घटना की पूरी सच्चाई सामने आ जाएगी। हमारे विकास के एक-एक दुश्मन की पहचान होगी। यह देश अब किसी भी तरह के धमाके को बर्दाश्त नहीं कर सकता। ऐसी हिंसा के प्रति हमारी शून्य सहिष्णुता की नीति है। जो बादल छाए हैं, जल्दी छंट जाएंगे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन अशांत हो सकता है। पिता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार में कुछ सुस्ती देखने को मिल सकती है। यात्रा लाभप्रद रहेगी।

वृष : आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। माता की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। पिता से आर्थिक सहायता मिल सकती है। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

मिथुन : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। माता की सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है। परिवार का साथ मिलेगा।

कर्क : मन प्रसन्न रहेगा। संतान सुख में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। सम्मान वृद्धि।

सिंह : मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्यक्षेत्र में बदलाव होगा। परिश्रम अधिक रहेगा। सेहत का ध्यान रखें।

कन्या : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक संगीत का कार्यक्रम हो सकता है। माता और परिवार की किसी बुजुर्ग महिला से धन मिल सकता है।

तुला : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। शैक्षिक कार्यों के प्रति सचेत रहें। व्यवधान आ सकते हैं। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक : मन प्रसन्न रहेगा। नौकरी में स्थान परिवर्तन के योग बन रहे हैं। परिवार से दूर भी रहना पड़ सकता है। खर्चों की अधिकता रहेगी। परिवार की सेहत का भी ध्यान रखें।

धनु : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। खर्च की अधिकता रहेगी। कारोबार में भी आय में कमी और खर्च में अधिकता की स्थिति हो सकती है।

मकर : मन प्रसन्न रहेगा। नौकरी के लिए परीक्षा और साक्षात्कारादि कार्यों में सफल रहेंगे। शासन-सत्ता का सहयोग मिलेगा। आय वृद्धि, स्थान परिवर्तन हो सकता है।

कुंभ : नकारात्मक विचारों से बचें। परिवार का साथ मिलेगा। संतान की ओर से सुखद समाचार मिल सकता है। नौकरी में अधिकारों में वृद्धि हो सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा।

मीन : आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे। मन प्रसन्न भी रहेगा, परंतु आलस्य से बचें। कारोबार में परिश्रम अधिक रहेगा, परंतु कुछ सुस्ती भी देखने को मिल सकती है।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

12 नवंबर, बुधवार, **शक संवत्:** 21 कार्तिक (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग:** 27 कार्तिक मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम:** 20, जमादिउल्लावल,1447, **विक्रमी संवत्:** मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी तिथि रात्रि 10.59 मिनट तक आश्लेषा नक्षत्र सायं 06.36 मिनट तक पश्चात मघा नक्षत्र, शुक्ल योग प्रातः 08.03 मिनट तक पश्चात ब्रह्म योग। चंद्रमा कर्क राशि में सायं 06.36 मिनट तक उपरांत सिंह राशि।

सूर्य दक्षिणायन। दोपहर 12 बजे से दोपहर 01.30 मिनट तक राहुकालम्। श्री कालभैरवाष्टमी। भैरव जन्मोत्सव।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि दक्षिण-पश्चिम दिशा में क्या-क्या नहीं होना चाहिए।

-मंदार, रतलाम

- इस दिशा में पूजा घर होने से धार्मिक ऊर्जा और मानसिक शांति कम हो जाती है।
- इस दिशा में स्टडी रूम बनाने से एकाग्रता में कमी आती है। बच्चे आलसी या भ्रमित हो सकते हैं। छोटे बच्चों का कमरा इस दिशा में बनाने से उनमें अनुशासनहीनता बढ़ती है।
- यहां अंडरग्राउंड वाटर टैंक बनाने से परिवार में कलह तथा आर्थिक अस्थिरता आती है।
- अतिथि कक्ष इस दिशा में बनाने से घर के मुखिया का प्रभाव कम होता है। वह दूसरे व्यक्तियों से ज्यादा प्रभावित रहता है।

वर्ग पहेली : 8146

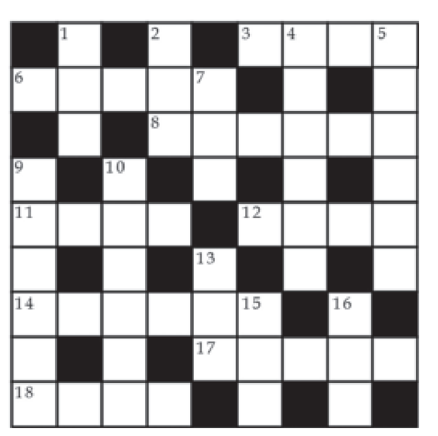

बाएं से दाएं
3. चप्पू; सुकर्ण; नाव खेने की डांड (4)
6. संदेह करना; अनिष्ट से भयभीत होना (2,3)
8. मूर्त रूप देना; सच करना; समक्ष लाना; स्थूल रूप देना (3,3)
11. अप्रसन्नता; रोष (4)
12. एक प्रकार का कसीदा, जिसमें बड़े-बड़े बेल बूटे बने होते हैं; जिसमें शीशे के झाड़ की सजावट हो; झाड़ जैसा; झाड़ वाला; घना; सघन (4)
14. एकाएक गायब हो जाना; चंपत हो जाना; रफूचक्कर हो जाना; लुप्त हो जाना (3,1,2)
17. जिसमें रहस्य हो; गोपनीयता वाला (5)
18. कला का ज्ञाता; चंद्रमा (4)

ऊपर से नीचे
1. रूप; आकृति; डील डौल; बनावट (3)
2. चौड़ा, बड़ा पर पतले कुल्हाड़े जैसा तेजधार का शस्त्र (3)
4. आभा; चमक दमक; शान; सजधज; आडंबर; चटक मटक; भड़कीलापन (3,3)
5. चलता करना; भेजना; विदा करना (3,3)
7. असफल; विफल (3)
9. खिंचाव का कारण; तनाव का कारक; तनाव पैदा करने वाला (6)
10. सचेत रहना; सतर्क रहना; सावधान रहना; चौकस रहना (3,3)
13. विक्रय केंद्र; विपणन स्थल; मंडी; हाट (3)
15. निष्प्रयोजन; फिजूल में; बिना किसी बात के (3)
16. सुख; चैन; आराम; शांति (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली

(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8145

सुडोकू : 8128

* आसान

8	2					4		3
1		6	5				2	
	5				2			
5	1			9	7			
			2	5			6	7
			7				4	
	8				3	6		9
6		7					3	5

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8127

1	7	3	8	2	5	9	6	4
5	6	8	1	4	9	3	7	2
4	2	9	6	3	7	1	5	8
3	4	7	9	8	1	5	2	6
6	8	1	7	5	2	4	9	3
2	9	5	4	6	3	8	1	7
7	5	2	3	9	8	6	4	1
9	3	4	2	1	6	7	8	5
8	1	6	5	7	4	2	3	9

देश में सबसे अधिक प्रदूषित रही दिल्ली

वायु गुणवत्ता प्रबंधन के अनुसार, वाहन से होने वाला प्रदूषण 18.26 फीसदी रहा, पराली जलाने से भी प्रदूषण में बढ़ोतरी

संवाद न्यूज एजेंसी

नई दिल्ली। राजधानी में मंगलवार सुबह हवा की गुणवत्ता गंभीर स्तर पर पहुंच गई। इस कारण केंद्र सरकार ने ग्रेप तीन लागू कर दिया। ऐसे में दिल्ली गैस चैंबर बन गई। यही नहीं, राजधानी समेत एनसीआर में पराली जलाने की घटनाओं व वाहनों से निकलने वाले धुएं ने हवा में पीएम2.5 को घोल दिया है।

दिल्ली में वायु गुणवत्ता प्रबंधन के सहायता प्रणाली के अनुसार, वाहन से होने वाला प्रदूषण 18.26 फीसदी रहा। वहीं, हवा में पराली से होने वाला प्रदूषण 6.58 फीसदी रहा। वहीं, आग जलने की घटनाओं 1.68 और निर्माण गतिविधियों से होने वाला प्रदूषण 2.719 फीसदी रहा। इस दौरान वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 428 दर्ज किया गया। यह हवा की गंभीर श्रेणी है। इस कारण देश में दिल्ली सबसे अधिक प्रदूषित रही।

सुबह की शुरुआत धुंध और हल्के कोहरे से हुई। वहीं, आसमान में कुहासे के साथ स्मॉग की चादर भी दिखाई दी। इस दौरान लोग मास्क पहने नजर आए। साथ ही, सांस के मरीजों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

सीपीसीबी के अनुसार, सफदरजंग हवाई अड्डे पर मंगलवार सुबह 6:30 से 8:30 बजे तक सबसे कम दृश्यता 600 मीटर दर्ज की गई, जो उसके बाद 9 बजे पर 700 मीटर हो गई। पालम हवाई अड्डे पर 8:00 बजे से 9:30 बजे तक सबसे कम दृश्यता 700 मीटर दर्ज की गई, जो उसके बाद 10 बजे पर 800 मीटर हो गई।

एनसीआर में दिल्ली के बाद नोएडा की हवा सबसे अधिक प्रदूषित रही। यहां एक्यूआई 425 दर्ज किया गया, यह गंभीर श्रेणी है। वहीं, गुरुग्राम में 378 और गाजियाबाद में 390 और ग्रेटर नोएडा में 406 एक्यूआई दर्ज किया गया। इसके अलावा, फरीदाबाद की हवा सबसे साफ रही।

प्रदूषण के कारण बाराखंभा इलाके में धुंध। अमर उजाला

कमला मार्केट इलाके में खुलेआम कूड़ा जलाते हुए। अमर उजाला

पीएम10 और पीएम2.5 का स्तर

शाम चार बजे हवा में पीएम10 की मात्रा 403.3 और पीएम2.5 की मात्रा 251.1 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज की गई। सीपीसीबी के अनुसार, राजधानी के कई मॉनिटरिंग स्टेशनों पर हवा गंभीर और बेहद खराब में रिकॉर्ड की गई, जबकि कुछ इलाकों में एक्यूआई मध्यम रहा। दीपावली के बाद से दिल्ली में कई इलाकों में एक्यूआई खराब और बेहद खराब श्रेणी में बना हुआ है, जबकि ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान-2 (ग्रेप-2) के प्रतिबंध अब भी लागू हैं। वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिए निर्णय सहायता प्रणाली के अनुसार, दिल्ली में निर्माण से होने वाले प्रदूषण की 2.66 और पेरिफेरल उद्योग की 3.49 फीसदी की भागीदारी रही।

यहां सूचकांक 298 दर्ज किया गया। यह हवा की खराब श्रेणी है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) का पूर्वानुमान है कि हवा बेहद खराब श्रेणी में पहुंचने की आशंका है। इस कारण सांस के मरीजों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। साथ ही, लोगों को आंखों में जलन जैसी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

प्रदूषण के खिलाफ मिशन मोड में सरकार

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक में दिए सख्त निर्देश

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। राजधानी में प्रदूषण की गंभीर स्थिति को देखते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार को दिल्ली सचिवालय में उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। इसमें मंत्रियों समेत मुख्य सचिव सहित संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण अब मिशन मोड में किया जाएगा और किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी।

मुख्यमंत्री ने तीन प्रमुख प्रदूषण कारणों वाहन उत्सर्जन, बायोमास बर्निंग और धूल प्रदूषण पर चर्चा की और इनसे निपटने के लिए विभागों को ठोस और समयबद्ध कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राजधानी में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुसार ग्रेप चरण-तीन का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाए। नियमों का उल्लंघन करने वाली निर्माण साइटों और अन्य स्रोतों पर तुरंत सीलिंग व जुर्माने की कार्रवाई की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने बताया कि वायु प्रदूषण नियंत्रण के लिए इस वर्ष एनफोर्समेंट टीमों की संख्या बढ़ाकर 2,088 कर दी गई है। ये टीमें प्रदूषण हॉटस्पॉट्स पर तैनात रहेंगी और वाहनों का निरीक्षण कर नियमों का उल्लंघन करने वालों पर त्वरित कार्रवाई करेंगी।

सड़कों को 'वॉल टू वॉल' बनाने के निर्देश : धूल प्रदूषण नियंत्रण को लेकर मुख्यमंत्री ने एमसीडी, पीडब्ल्यूडी और अन्य एजेंसियों को निर्देश दिया कि दिल्ली की सड़कों को 'वॉल टू वॉल' बनाया जाए ताकि किनारों पर धूल का जमाव पूरी तरह खत्म किया जा सके। सड़कों पर मौजूद गड्ढों की पहचान कर उनकी मरम्मत प्राथमिकता से की जाएगी। मुख्यमंत्री ने सभी प्रदूषण हॉटस्पॉट्स पर 30 नवम्बर तक 300 से अधिक मिस्ट स्प्रे सिस्टम लगाने के आदेश दिए ताकि धूल और प्रदूषण के स्तर को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जा सके।

डिविजनल कमिश्नर और जिलाधिकारियों को इन टीमों की निगरानी की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

यमुनापार में ढाबों पर कोयला व लकड़ी से सुलग रही भट्टियां

प्रदूषण लोगों का दम घोंट रहा है। ग्रेडेड रेस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के तहत पाबंदियां लागू हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर इनका पालन होता नहीं दिख रहा। यमुनापार के कई इलाकों में अब भी ढाबों पर कोयला और लकड़ी से भट्टी जलाकर खाना पकाया जा रहा है, जिससे प्रदूषण बढ़ने का खतरा बना हुआ है। मंगलवार को नंद नगरी इलाके में सड़क किनारे एक ढाबे पर खुलेआम लकड़ी की भट्टी में सब्जियां पकाई जा रही थीं। वहीं गुरु अंगद नगर के पास ढाबे में कोयले की भट्टी पर रोटियां और नान सेंकने का काम होता देखा गया। भजनपुरा क्षेत्र में भी कई जगहों पर ढाबे लकड़ी और कोयले की भट्टियां जलाते नजर आए। इन भट्टियों से निकलने वाला घना धुआं न सिर्फ हवा को दूषित कर रहा है, बल्कि आसपास के लोगों के लिए सांस लेना भी मुश्किल बना रहा है। खुरेजी, कल्याणपुरी, त्रिलोकपुरी और कराबल नगर रोड पर इस तरह की भट्टियां उपयोग में लाई जा रही हैं। पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि इस मौसम में कोयला और लकड़ी जलाने से निकलने वाला धुआं हवा में मौजूद प्रदूषक कणों की मात्रा को तेजी से बढ़ा देता है।

मेरी आवाज सुनो...

सड़कों पर पसरा मलबा

कड़कड़ी मोड़ की सड़कों पर कई माह से मलबा पसरा हुआ है। इस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। मलबे की वजह से सड़कों पर कई बार जाम लग जाता है। इससे आवाजाही प्रभावित होती है। साथ ही, हादसे का भी खतरा बना रहता है। इसे लेकर कई बार स्थानीय प्रशासन से शिकायत की गई है लेकिन वह इसे अनदेखा कर रहे हैं। शायद उन्हें किसी हादसे का इंतजार है।

– सुनील, कड़कड़डूमा निवासी

आप भी भेज सकते हैं अपने क्षेत्र की ऐसी किसी समस्या की जानकारी जो लोकहित से जुड़ी हो और जिसकी सुनवाई न हो रही हो।

जानकारी साझा करें

del-citryincharge@del.amarujala.com

व्हाट्सएप करें 9873687563

आज के कार्यक्रम

गजल

- **इंडिया हैबिटेट सेंटर :** शाम 7 बजे से द थियेटर में दिल्ली घराना की तरफ से गजल फेस्टिवल का आयोजन।

अमृत महोत्सव

- **कमानी ऑडिटोरियम :** शाम 6 बजे से कथक धरोहर की तरफ से शंखनाद-गणतंत्र का अमृत महोत्सव।

नृत्य

- **त्रिवेणी कला संगम :** शाम 6 बजे से गुरु कुंदनलाल गंगानी फाउंडेशन की तरफ से संताती नृत्य प्रस्तुति

ऑफलाइन या ऑनलाइन मोड में चला सकते हैं स्कूल

शिक्षा निदेशालय ने सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूलों के लिए जारी किए निर्देश

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। ग्रेप-3 लागू होने के बाद अब पांचवीं तक के स्कूल हाइब्रिड मोड में चलाने का निर्णय लिया गया है। शिक्षा निदेशालय ने हाइब्रिड मोड में कक्षाएं संचालित करने के लिए निर्देश जारी किया है। अगले आदेश तक लागू रहेंगे।

शिक्षा निदेशक वेदिता रेड्डी की ओर से जारी निर्देशों में कहा गया है कि एनडीएमसी, एसीडी, दिल्ली छावनी बोर्ड के सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त व निजी स्कूल पांचवीं तक के स्कूल हाइब्रिड (ऑनलाइन व ऑफलाइन) में चलेंगे। स्कूलों को छूट है कि वो चाहे तो कक्षाएं ऑफलाइन या ऑनलाइन दोनों मोड में चला सकते हैं। जहां भी संभव हो वहां ऑनलाइन कक्षाएं चलाई जाएं। यह निर्देश अगले आदेश तक लागू रहेगा।

निदेशालय की ओर से सभी विद्यालयों के प्रमुखों को यह सूचना छात्रों के अभिभावकों तक तुरंत पहुंचाने का निर्देश दिया गया है। दिल्ली में काफी समय से वायु गुणवत्ता खराब चल रही है। आंखों में जलन, खांसी की शिकायत काफी लोग कर रहे हैं। बिगड़ते वायु इंडेक्स के कारण स्कूल पहले से ही सतर्क हो कर चल रहे थे। कई स्कूलों ने एहतियात बरतते हुए अपने यहां आउटडोर गतिविधियों को पहले ही बंद कर दिया था।

बीते सालों में भी प्रदूषण के खतरनाक श्रेणी में पहुंचने पर स्कूलों में अवकाश घोषित कर दिए गए थे। दमघोंटू हो रही हवा के मद्देनजर स्कूल पहले ही बच्चों के अभिभावकों को एडवायजरी दे चुके हैं कि बच्चों को मास्क लगाकर ही स्कूल में भेजा जाए।

इस सीजन का सबसे ठंडा दिन रहा मंगलवार

लोधी रोड सबसे ठंडा इलाका रहा, यहां न्यूनतम पारा 10.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज

नई दिल्ली। पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी ने राजधानी में ठंडक बढ़ा दी है। ऐसे में लोगों को अब दिन में भी सिहरन महसूस हो रही है। मंगलवार को खिली धूप के बावजूद ठिठुरन बढ़ गई। ऐसे में न्यूनतम के साथ-साथ अब अधिकतम तापमान में भी गिरावट हुई है। इससे मंगलवार सीजन का सबसे ठंडा दिन रहा।

सुबह से ही मौसम में ठंडक बनी हुई थी। जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया, वैसे-वैसे दिन में सूरज की गर्मी का हल्का अहसास हुआ, लेकिन लोगों को दिन में भी ठंड महसूस हो रही थी। इसी बीच अधिकतम तापमान 27.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 1.8 डिग्री कम रहा। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार, न्यूनतम तापमान 10.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया, जो मौसम के औसत से 4.1 डिग्री अधिक है। मंगलवार को लोधी रोड सबसे ठंडा इलाका रहा। यहां न्यूनतम पारा 10.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इसके अलावा, आया नगर में 11.5, पालम में 11.4 और रिज में 10.8 न्यूनतम पारा दर्ज किया गया। आईएमडी का अनुमान है कि बुधवार को सुबह धुंध व कोहरा के साथ आसमान साफ रहेगा।

मौसम विभाग के अनुसार, अगले कुछ दिनों तक दिल्ली-एनसीआर का मौसम मुख्यतः साफ रहेगा, हालांकि सुबह के समय हल्की धुंध और कोहरा छाया रह सकता है। मौसम विभाग के अनुसार, 12 से 17 नवंबर तक अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 9 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। संवाद

कोर्ट डायरी

हत्या के प्रयास के मामले में आरोपी दोषी करार

नई दिल्ली। पटियाला हाउस कोर्ट ने वर्ष 2021 में हत्या के प्रयास मामले में आरोपी रवि विश्वास को दोषी करार दिया है। अदालत ने कहा कि अभियोजन पक्ष यह साबित करने में सफल रहा कि आरोपी ने पीड़ित राजेश पर जानलेवा हमला किया था और उसे गंभीर चोटें पहुंचाई। प्रमुख जिला एवं सत्र न्यायाधीश अंजु बजाज चांदना की अदालत ने कहा कि अभियोजन पक्ष ने आरोपी के खिलाफ आईपीसी की धारा 307 के तहत अपराध साबित कर दिया है। अदालत ने कहा कि पीड़ित और प्रत्यक्षदर्शी के बयान भरोसेमंद हैं और उन्होंने घटना का विस्तृत विवरण दिया। शरीर के अहम हिस्सों पर चोटें लगी थीं, जिससे स्पष्ट हुआ कि आरोपी ने जानबूझकर हमला किया था। यह घटना 19 जनवरी 2021 में दक्षिणी दिल्ली के आरके पुरम इलाके में हुई थी। संवाद

मृतक के परिवार को 28.2 लाख का मुआवजा

नई दिल्ली। मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण ने 2017 में सड़क दुर्घटना में मारे गए 47 वर्षीय व्यक्ति के परिवार को 28.2 लाख रुपये का मुआवजा देने का आदेश दिया है। पीठासीन अधिकारी विक्रम, शहीद अहमद के परिवार द्वारा दायर एक याचिका पर सुनवाई कर रहे थे, जिनकी 8 नवंबर, 2017 को यमुना एक्सप्रेसवे पर बस के दुर्घटनाग्रस्त होने से मृत्यु हो गई थी। अदालत ने कहा कि यह माना जाता है कि दुर्घटना करने वाले वाहन (बस) के चालक की लापरवाही स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अदालत ने कहा कि बस दुर्घटनाग्रस्त इसलिए हुई क्योंकि चालक ने यातायात नियमों का पालन नहीं किया था। इसके बाद ट्रिब्यूनल ने विभिन्न मदों में 28.2 लाख रुपये का मुआवजा देने का आदेश दिया। न्यायाधिकरण ने बीमाकर्ता, नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड को मुआवजा जमा करने का निर्देश दिया। संवाद

बच्ची से यौन उत्पीड़न करने वाला दोषी करार

नई दिल्ली। पटियाला हाउस कोर्ट ने पांच वर्षीय बच्ची से यौन उत्पीड़न करने के आरोप में एक व्यक्ति को दोषी ठहराया है। यह घटना साल 2015 की है। कोर्ट ने कहा कि अभियोजन पक्ष ने साक्ष्यों और गवाही के आधार पर घटनाक्रम की पूरी कड़ी स्पष्ट कर दी है, जिससे आरोपी का दोष साबित होता है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश संदीप गुप्ता ने कहा कि पीड़िता ने कम उम्र के बावजूद साफ और सुसंगत बयान दिया। बच्ची ने बताया कि जब वह पार्क में खेल रही थी, तभी आरोपी मिठाई देने का बहाना बनाकर उसे अपने घर ले गया और उसके साथ गलत काम किया। अदालत ने कहा कि यौन अपराधों के मामलों में मामूली विरोधाभासों के आधार पर पीड़िता की गवाही को खारिज नहीं किया जा सकता। पीड़िता और उसकी मां के बयानों में घटना का स्पष्ट और भरोसेमंद विवरण है। कोर्ट ने आरोपी को अपहरण और पॉक्सो अधिनियम की धारा 10 के तहत दोषी करार दिया। संवाद

केजरीवाल की याचिका सुनवाई योग्य नहीं : हाईकोर्ट

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। हाईकोर्ट ने मंगलवार को मौखिक रूप से टिप्पणी की कि पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया द्वारा विशेषाधिकार समिति के समन के खिलाफ दायर याचिका प्रथम दृष्टया सुनवाई योग्य नहीं है। हालांकि, कोर्ट ने इस मामले की सुनवाई बुधवार के लिए सूचीबद्ध की है।

केजरीवाल और सिसोदिया ने दिल्ली विधानसभा की विशेषाधिकार समिति की ओर से जारी समन को चुनौती दी है। समिति ने उन्हें विधानसभा परिसर में कथित फांसी घर के नवीनीकरण के लिए कथित तौर पर धन के दुरुपयोग के मामले में तलब किया था। न्यायमूर्ति सचिन दत्ता ने संक्षिप्त सुनवाई के दौरान मौखिक रूप से टिप्पणी की कि प्रथम दृष्टया यह याचिका सुनवाई योग्य नहीं है। दिल्ली विधानसभा के वकील, वरिष्ठ अधिवक्ता जयंत मेहता ने कोर्ट से अनुरोध किया कि वह आज व्यस्त होने के कारण मामले को बुधवार के लिए सूचीबद्ध करें। कोर्ट ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया।

दूसरी ओर केजरीवाल और सिसोदिया की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता ने दलील दी कि याचिका सुनवाई योग्य है और वह इसके समर्थन में निर्णय दिखाएंगे। उन्होंने कहा कि इस कोर्ट के तीन निर्णय याचिकाकर्ताओं के पक्ष में हैं। उन्होंने समन पर रोक लगाने के लिए नोटिस जारी करने की भी मांग की, लेकिन कोर्ट ने मामले को अगली सुनवाई के लिए बुधवार को सूचीबद्ध कर दिया। यह भी दावा किया कि जारी किया गया समन अधिकार क्षेत्र से बाहर है। विशेषाधिकार समिति नवीकरण के लिए धन के कथित दुरुपयोग की जांच कर रही है।

अदालत से

फांसी घर विवाद : समन के खिलाफ केजरीवाल ने दाखिल की याचिका

अपमानजनक टिप्पणी करने वाले वकील के खिलाफ मामला बंद

बिना शर्त माफी मांगने के बाद न्यायमूर्ति ने मामले को किया बंद

नई दिल्ली। हाईकोर्ट ने एक वकील के खिलाफ अदालत की अवमानना की कार्यवाही को बंद कर दिया है। आरोपी वकील ने अदालत में यह इशारा किया था कि अभियोजक अदालत को नियंत्रित करता है, न कि न्यायाधीश। न्यायमूर्ति विवेक चौधरी और न्यायमूर्ति मनोज जैन की डिवीजन बेंच ने वकील द्वारा बिना शर्त माफी मांगने के बाद मामला बंद करने का फैसला सुनाया।

कोर्ट ने कहा कि सुनवाई के दौरान अधिवक्ता ने मौखिक माफी मांगी है। उसे सुनने और समग्र तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उसकी बिना शर्त माफी को स्वीकार किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप अवमानना की कार्यवाही बंद करने का निर्देश दिया जाता है। मामला तब शुरू हुआ जब वकील ने दिल्ली की एक अदालत के समक्ष यह इशारा किया कि अभियोजक अदालत पर नियंत्रण रखता है, न कि अध्यक्षीय न्यायाधीश। एडिशनल सेशंस जज ने हाईकोर्ट को अवमानना की कार्यवाही शुरू करने के लिए संदर्भ भेजा। ब्यूरो

हाईकोर्ट में पेश होकर मांगी माफी : अवमानना संदर्भ मिलने पर हाईकोर्ट ने आरोपी वकील को नोटिस जारी किया। उसके बाद वकील हाईकोर्ट के समक्ष शारीरिक रूप से उपस्थित हुआ और बिना शर्त माफी मांगी। उसने कहा कि 12 वर्षों की अपनी प्रैक्टिस में उसने कभी अदालत का अनादर नहीं किया। उसने कहा कि उसकी कानूनी प्रैक्टिस उसके और उसके पूरे परिवार के लिए एकमात्र आजीविका का स्रोत है। कोर्ट ने उसकी माफी स्वीकार कर ली और मामला बंद कर दिया।

हरित कूड़े को निपटाने के लिए विशेष मशीनें लगेंगी : सीएम

सचिवालय में आयोजित बैठक में रेखा गुप्ता ने दिए साफ-सफाई के आदेश

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली सचिवालय में मंगलवार को आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि राजधानी के विभिन्न इलाकों में कूड़े के निपटान के लिए आधुनिक कम्पेक्टर लगाए जा रहे हैं। हरित कूड़े को निपटाने के लिए विशेष मशीनें लगाने का फैसला किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजधानी को साफ-सुथरा बनाकर ही विकसित दिल्ली का सपना पूरा होगा। सड़कों के निर्माण को लेकर संबंधित विभागों की विशेष समिति भी बनाई जा रही है। हमारी प्राथमिकता यह होगी कि लोगों को कूड़ा डालने के लिए आवश्यक स्थान उपलब्ध कराए जाएं ताकि लोग जगह-जगह कूड़ा न डालें। सीएम ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि पूरी दिल्ली में कूड़ेदान लगाने की व्यवस्था की जाए जहां भी टूटे हुए कूड़ेदान हैं उन्हें तुरंत बदला जाए। दिल्ली के विभिन्न इलाकों में जल्द ही अधिक क्षमता वाले कम्पेक्टर लगाए जाएंगे। इसके लिए डीडीए व ठुसिब जमीन मुहैया कराएगा। हरित कूड़े का इस्तेमाल करने के लिए भी आधुनिक मशीनें लगाई जाएंगी।

उन्होंने विभागों को सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने की सलाह दी और कहा कि लोगों तक विभिन्न इलाकों के सफाई से पहले और सफाई के बाद की फोटो अपलोड की जाए। शहरी विकास मंत्री आशीष सूद ने कहा कि रोड कटिंग का मसला दिल्ली के लिए परेशानी बना हुआ है। सड़कों को बनाने के लिए आर्किटेक्ट को भी शामिल किया जाए। बैठक में मुख्य सचिव राजीव वर्मा, निगम आयुक्त अश्विनी कुमार के अलावा डीडीए, पीडब्ल्यूडी के अधिकारी मौजूद रहे।

पीडब्ल्यूडी सचिवालय में बायोमेट्रिक हाजिरी की अनिवार्य

नई दिल्ली। पीडब्ल्यूडी सचिवालय में अब सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए बायोमेट्रिक अटेंडेंस सिस्टम पूरी तरह लागू कर दिया गया है। अतिरिक्त मुख्य सचिव (पीडब्ल्यूडी) की मंजूरी से जारी कार्यालय आदेश में साफ कहा गया है कि सचिवालय के सभी नियमित अधिकारी/कर्मचारी अब रोजाना बायोमेट्रिक सिस्टम से ही उपस्थिति दर्ज करेंगे। सूत्रों के अनुसार, बायोमेट्रिक सिस्टम लागू होने से अब लेट-मार्किंग, हाफ-डे और बिना सूचना अनुपस्थिति पर सख्त निगरानी रखी जाएगी। कई कर्मचारी पहले मैनुअल रजिस्टर में हस्ताक्षर करके भी देर से आते थे। सचिवालय मुख्यालय में इसे 100 फीसदी अनिवार्य कर दिया गया है। ब्यूरो

तीन लापता नाबालिग को परिजनों से मिलवाया

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा पुलिस ने ऑपरेशन मिलाप के तहत 9 वर्षीय, 11 वर्षीय और 8 वर्षीय तीन लापता नाबालिग लड़कों को ढूंढकर परिजन से मिलाया है। आपराध शाखा उपायुक्त पंकज कुमार ने बताया कि 10 नवंबर को तीन नाबालिग लड़कों की नांगलोई थाने में लापता होने की शिकायत मिली थी। पुलिस को सूचना मिली कि तीनों नाबालिग हैं। पुलिस ने तीनों नाबालिगों को ढूंढकर परिजनों को सौंप दिया। तीनों बच्चे खेलते हुए रास्ता भटक गए थे। संवाद

बढ़ई का काम कर चुके युवक ने महिला के घर में की लूटपाट

मॉडल टाउन इलाके की घटना, घर में महिला के अकेले होने का फायदा उठाया

नई दिल्ली। मॉडल टाउन इलाके में बढ़ई का काम कर चुके एक युवक ने महिला के घर में घुसकर लूटपाट की। बदमाश ने नशे की लत को पूरा करने के लिए अपने दो साथियों के साथ वारदात को अंजाम दिया। पुलिस ने मामले की जांच करते हुए तीनों आरोपियों के गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस ने इनके कब्जे से दो लूटी गई सोने की चूड़ियां और एक सोने की अंगूठी बरामद कर ली। उत्तर पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त भीष्म सिंह ने बताया कि गिरफ्तार बदमाशों की पहचान जहांगीरपुरी निवासी मुकेश, अमर और गोविंद के रूप में हुई है। 7 नवंबर को पुलिस को मॉडल टाउन थाना पुलिस को एक मकान में लूटपाट की सूचना मिली। उन्होंने बताया कि मुकेश नाम का युवक उनकी बुआ रीता कोचर के घर में कुछ दिन पहले काम किया था। करीब 4:10 बजे वह दो अन्य साथियों के साथ घर आया और काम करने लगा। कुछ देर बाद उनमें से एक ने पीड़िता को कोई नशीला पदार्थ सुंघा दिया जिससे वह बेहोश हो गई। जब होश आया तो उसने देखा कि उसकी सोने की चूड़ियां और अंगूठी गायब थी। बदमाशों ने उनके हाथ चुन्नी से बांधे हुए थे। पुलिस ने लूटपाट का मामला दर्ज कर लिया है। 9 नवंबर को पुलिस ने बदमाशों को आदर्श नगर स्थित झील वाले फ्लैट्स से गिरफ्तार कर लिया।

मुकेश ने बताया कि वह बढ़ई का काम करता है और पहले पीड़िता के घर पर काम कर चुका था। उसे पता था कि दिन के समय पीड़िता घर पर अकेली रहती है। इस बात का फायदा उठाकर उसने अपने साथियों के साथ मिलकर लूट की योजना बनाई। ब्यूरो

कार ने ई-रिक्शा को मारी टक्कर, 4 घायल

नई दिल्ली। नरेला इलाके में मंगलवार सुबह एक स्कॉर्पियो कार ने ई-रिक्शा को टक्कर मार दी। इसमें चार लोग घायल हो गए। चारों को पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने कार चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाने का मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। बाहरी उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त हरेश्वर वी स्वामी ने बताया कि मंगलवार सुबह पुलिस को सड़क हादसे की जानकारी मिली। संवाद

घरेलू सहायिका की बेटी ने बुजुर्ग के घर से उड़ाए लाखों के गहने

पुलिस ने दोनों आरोपियों को किया गिरफ्तार, 10 लाख के गहने और नकदी बरामद

नई दिल्ली। तिलक नगर इलाके में एक बुजुर्ग महिला के घर से लाखों रुपये के गहने की चोरी में पुलिस ने उनकी घरेलू सहायिका की बेटी और उसके बॉय फ्रेंड को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से करीब दस लाख के गहने और हजारों रुपये नकदी बरामद की है। आरोपी युवती अपनी मां के साथ बुजुर्ग महिला के घर में आती थी।

पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त दराडे शरद भास्कर ने बताया कि 8 नवंबर को तिलक नगर इलाके में एक बुजुर्ग महिला के घर से लाखों के गहने और नकदी चोरी होने की शिकायत मिली। पुलिस ने चोरी का मामला दर्ज कर लिया। पुलिस को दो संदिग्धों के बारे में जानकारी मिली। इस आधार पर पुलिस ने 10 नवंबर को एक महिला समेत दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया। तलाशी लेने पर उनके कब्जे से गहने के करीब 10 लाख के गहने और 17 हजार नकदी बरामद कर ली। गिरफ्तार युवती की पहचान तिलक नगर निवासी खुशी और महेंद्रगढ़ हरियाणा निवासी अनिल के रूप में हुई।

खुशी बुजुर्ग महिला के घर में काम करने वाली घरेलू सहायिका की बेटी है। वह मां के साथ उनके घर में काम करने के लिए जाती थी। वहीं अनिल उसका बॉयफ्रेंड है। उसने अपने बॉयफ्रेंड के साथ मिलकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया। ब्यूरो

राजनीति | बसपा प्रमुख मायावती ने पंजाब-हरियाणा-चंडीगढ़ इकाइयों के नेताओं के साथ की बैठक

संगठनात्मक कार्यों में कमियों को दूर करने के निर्देश

उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री ने लाल किला धमाके की कड़ी निंदा की

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) की राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने मंगलवार को पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ राज्य इकाइयों के पार्टी कार्यों की समीक्षा बैठक की। इससे पहले सात नवंबर को उन्होंने झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडीशा की यूनिटों की बैठक भी की थी। इसमें संगठन की जमीनी मजबूती और सर्वसमाज में बीएसपी के जनाधार को बढ़ाने के लिए पहले दिए गए दिशा-निर्देशों की प्रगति रिपोर्ट ली गई। मायावती ने निर्देश दिए कि जिन राज्यों में संगठनात्मक कार्यों में कमियां हैं, उन्हें शीघ्र दूर किया जाए।

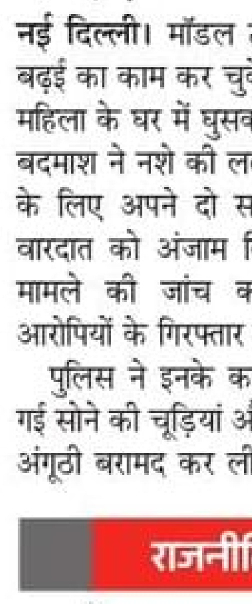

मायावती ने कहा कि देश में व्याप्त अपार गरीबी और बेरोजगारी का सबसे बुरा असर गरीब मेहनतकश बहुजन परिवारों पर पड़ रहा है। उन्होंने केन्द्र और राज्य सरकारों पर आरोप लगाया कि वे इन गंभीर समस्याओं के समाधान के प्रति अपेक्षित गंभीर नहीं हैं और केवल राजनीतिक स्वार्थ की राजनीति में उलझी रहती हैं, जबकि संविधान उन्हें जनता को रोजगार व बुनियादी सुविधाएं देने की जिम्मेदारी सौंपता है।

पूर्वी राज्यों की तरह उन्होंने पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ की सरकारों को भी नसीहत दी कि वे जनकल्याण के प्रति अपने कामों का ईमानदारी से आकलन करें।

समस्याओं से ध्यान भटका रहीं सरकारें : बीएसपी प्रमुख ने आरोप लगाया कि जनता की समस्याओं से ध्यान हटाने के लिए सरकारें साम्प्रदायिक और जातिवादी मुद्दों को हवा देती हैं, जो जनहित और देशहित के खिलाफ है। उन्होंने झारखंड, बंगाल, उड़ीसा, पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ के उन कार्यकर्ताओं की सराहना की जो नौ अक्टूबर को लखनऊ में बीएसपी संस्थापक कांशीराम के परिनिर्वाण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए थे।

मायावती ने कहा कि केवल चुनाव जीत लेना ही लक्ष्य नहीं होना चाहिए। पंजाब में सरकार बदलने के बावजूद हालात नहीं सुधरे, जबकि हरियाणा में सरकार की निरंतरता के बावजूद स्थिति बद से बदतर है।

उन्होंने कहा कि छह दिसंबर को डॉ. भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर पार्टी के निर्देशानुसार कार्यक्रम पूरी मिशनरी भावना के साथ आयोजित करना है। उन्होंने लालकिला मेट्रो स्टेशन के पास सोमवार को हुए धमाके की कड़ी निंदा की है। उन्होंने मरने वालों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की भी कामना की।

आतंकवाद असंभव की मांग करने की रणनीति है, और वह भी बंदूक की नोक पर। - क्रिस्टोफर हिचेन्स

विभिन्न राज्यों में आतंकी संगठनों से जुड़ाव रखने वाले डॉक्टरों के नेटवर्क का भंडाफोड़ और भारी मात्रा में विस्फोटक मिलने के बाद राजधानी दिल्ली में लाल किले के नजदीक कार में हुए विस्फोट के तार जैसे-जैसे खुल रहे हैं, वे एक सुनियोजित साजिश का संकेत देते हैं।

विस्फोट के तार

हाल ही में, देश के अलग-अलग राज्यों में आतंकी संगठनों से जुड़ाव रखने वाले डॉक्टरों के नेटवर्क का भंडाफोड़ और हजारों किलोग्राम विस्फोटक मिलने के बाद अब राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के निकट सोमवार को कार में हुए विस्फोट ने पूरे देश को स्तब्ध तो किया ही है, यह किसी सुनियोजित साजिश की ओर भी इशारा करता है। विस्फोट में मृतकों की संख्या बढ़कर करीब 13 तक पहुंच गई है और जो जानकारियां प्राप्त हो रही हैं, उनके अनुसार, पुलवामा में रहने वाले एक शख्स मोहम्मद उमर नबी, जो खुद एक डॉक्टर है, ने ही सफेद कार में विस्फोटकों के साथ खुद को भी उड़ा लिया। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने डीएनए परीक्षण के लिए पुलवामा में उसके परिवार को हिरासत में लिया है। वहीं फरीदाबाद से हिरासत में ली गई महिला डॉक्टर शाहीन शाहिद को भारत में जैश-ए-मोहम्मद की महिला विंग की प्रमुख बताया जा रहा है। एजेंसियां जिस गति से जांच को आगे बढ़ा रही हैं, उससे उम्मीद है कि जल्द ही दोषियों को शिकंजे में लिया जा सकेगा। हां, यह जरूर है कि फरीदाबाद में विस्फोटकों की भारी बरामदगी के बाद दिल्ली समेत पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में पुलिस तंत्र को अतिरिक्त सतर्कता की मुद्रा में आ जाना चाहिए था। इसके बावजूद, केंद्रीय गृह मंत्री का सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारियों के साथ बैठक में यह कहना आश्वस्त करने वाला है कि हर एक दोषी को कड़ी से कड़ी सजा मिलेगी। गौरतलब है कि हरियाणा, जम्मू-कश्मीर और उत्तर प्रदेश में जिस व्हाइट कॉलर आतंकी मॉड्यूल का पता चला है, वह बेहद चिंतित करने वाला है। इसके तहत, उच्च शिक्षित पेशेवर पाकिस्तान और दूसरे देशों से संचालित हो रहे आतंकी संगठनों के लिए भर्ती, फंडिंग और लॉजिस्टिक्स का काम कर रहे थे। दरअसल, जैश-ए-मोहम्मद जैसे सीमा पार से संचालित हो रहे आतंकी संगठन पारंपरिक लड़ाकों के बजाय अब इन्हीं स्लीपर सेल्स पर अधिक निर्भर हैं, जो समाज में

सम्मानित पदों पर रहते हुए चुपचाप घातक योजनाएं बुनते रहते हैं। ऐसे में, दिल्ली में हुआ हादसा लंबे समय से चली आ रही रणनीति का हिस्सा ही अधिक लगता है। जाहिर है कि इस हादसे का असर केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे देश की एकता व शांति के लिए खतरा है। लेकिन, ऐसी विपत्तियों में ही राष्ट्र की असली ताकत झलकती है। दोषियों को सजा सुनिश्चित करने की दिशा में जांच एजेंसियां और सरकार तो अपना काम कर ही रही हैं, लोगों को भी पूरी तरह सतर्क रहने और संदिग्ध गतिविधियों की सूचना देने के लिए हरदम तैयार रहने की जरूरत है।

यह सिर्फ हिंसा की एक घटना नहीं

जब लश्कर-ए-ताइबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे गैर-राज्य तत्व केवल सीमाओं के पार से नहीं, बल्कि स्थानीय नेटवर्क का उपयोग कर देश के भीतर तक पहुंच बना रहे हों, तब लाल किले के पास हुए विस्फोट को सिर्फ हिंसा की एक घटना मानकर खारिज नहीं किया जा सकता।

10 नवंबर को दिल्ली के लाल किले के पास हुआ विस्फोट एक बार फिर यह याद दिलाता है कि भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में शांति बनाए रखना सतत सतर्कता की मांग करता है। यह सिर्फ हिंसा की घटना नहीं थी, यह एक सुनियोजित संदेश था, उन ताकतों की ओर से, जो भय के माध्यम से अस्थिरता फैलाना चाहती हैं।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए), दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा और राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) की टीमें जांच में जुटी हैं। प्रारंभिक रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि विस्फोट में उपयोग किए गए इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) अत्यंत योजनाबद्ध तरीके से लगाए गए थे। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि हरियाणा और उत्तर प्रदेश में उसी दिन बड़ी मात्रा में विस्फोटक सामग्री जब्त की गई। उसी योजना की एक कड़ी के रूप में ये विस्फोट की घटना प्रतीत होती है। हमारी सुरक्षा एजेंसियों ने एक बड़े ऑपरेशन में बड़े खतरे को टाल दिया। भारत दशकों से आतंकवाद के खतरे से जूझ रहा है, लेकिन इन खतरों का स्वरूप अब बदल गया है। 1980-90 के आसपास पहले पंजाब फिर जम्मू-कश्मीर से शुरू हुआ आतंकवाद का जहर भारत के कई राज्यों और शहरों तक अपनी जड़ें सक्रिय और निष्क्रिय मॉड्यूल के रूप में फैला चुका है। लश्कर-ए-ताइबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे गैर-राज्य तत्व अब केवल सीमाओं के पार से नहीं, बल्कि प्रॉक्सी वॉरफेयर के माध्यम से स्थानीय नेटवर्क, डिजिटल प्लेटफॉर्म और छोटे वित्तीय चैनलों का उपयोग कर देश के भीतर तक पहुंच बना रहे हैं।

सुनील कुमार गुप्ता
पूर्व आईपीएस और सुरक्षा विशेषज्ञ

आज की दुनिया में आतंकवाद सीमाओं तक सीमित नहीं रहा। यूरोप, मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया में हम देख रहे हैं कि प्रॉक्सी युद्ध न्यू नॉर्मल बन गया है, जहां विचारधारा, दुष्प्रचार और तकनीक को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। भारत, जो इस अस्थिर क्षेत्र के मध्य में स्थित है, को इस बहुस्तरीय चुनौती का प्रतिदिन सामना करना पड़ता है। दिल्ली के लाल किले के पास हुआ यह हमला केवल जानमाल की हानि के लिए नहीं है, अपितु यह देश के प्रतीकों और जनसुरक्षा पर भरोसे को चोट

पहुंचाने की कोशिश है। आतंक के वित्तपोषण, अवैध हथियारों के नेटवर्क, कट्टरपंथी सामग्री और साइबर अपराध जैसे वैश्विक खतरों ने देशों को आत्मसुरक्षा एवं अपने-अपने राष्ट्रीय हितों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर किया है। भारत की आंतरिक सुरक्षा नीति भी इसी बदलाव को दर्शाती है। बीते दो दशकों में देश ने एकीकृत सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली विकसित की है। राज्य पुलिस बलों, केंद्रीय एजेंसियों और अर्धसैनिक संगठनों के बीच आज सूचनाओं का त्वरित आदान-प्रदान और स्पष्ट कमांड संरचना मौजूद है। लाल किले की घटना के बाद हुई त्वरित प्रतिक्रिया, फॉरेंसिक टीमों की तैनाती और उनके बीच समन्वय यह दर्शाता है कि भारत की सुरक्षा संरचना कितनी विकसित हो चुकी है।

एनआईए, मल्टी एजेंसी सेंटर (एमएसी) और नेशनल इंटेलिजेंस ग्रिड (नैटग्रिड) जैसी संस्थाओं की स्थापना ने इस परिवर्तन की रीढ़ तैयार की। विशेष रूप से नैटग्रिड ने कई मंत्रालयों, जैसे आव्रजन, बैंकिंग, दूरसंचार और परिवहन के आंकड़ों को जोड़कर खुफिया एजेंसियों को संदिग्ध गतिविधियों का डिजिटल ट्रेल कुछ ही मिनटों में उपलब्ध कराने की क्षमता विकसित की है। हरियाणा और यूपी में एक दिन में अभी तक की विस्फोटक सामग्री की जब्ती इस प्रणाली की सफलता का प्रमाण है। हर राज्य में क्विक आतंकवाद निरोधक दस्ता (एटीएस), रिएक्शन टीम्स, फॉरेंसिक जांच ढांचा और बम निष्क्रियकरण ढांचा और अन्य वैज्ञानिक उपकरण उपलब्ध हैं। जांच अधिकारियों को मोबाइल फॉरेंसिक उपकरण, प्रशिक्षण और नियमित मॉक ड्रिल के माध्यम से तैयार किया जा रहा है। विशेषकर दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात एवं उत्तर प्रदेश ने आतंक निरोधी व्यवस्था में खुद को बार-बार साबित किया है। हालांकि, लाल किले का यह विस्फोट याद दिलाता है कि सुरक्षा का अर्थ केवल प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि पूर्वानुमान भी है। आधुनिक आतंकी संगठन अब कम लागत, घरेलू सामग्री और अप्रत्याशित समय का उपयोग करता है। पुलिस और खुफिया तंत्र के लिए असली चुनौती ऐसे पैटर्न को पहले ही पहचान लेना है, चाहे वह वित्तीय लेन-देन में असामान्यता हो, रैडिकलाइजेशन हो, ऑनलाइन कट्टरपंथीकरण हो या विस्फोटक सामग्री की असामान्य खरीद। हमें अमेरिका जैसे मजबूत एवं उन्नत राष्ट्रों से भी बहुत कुछ सीखने की जरूरत है, जिसने 9/11 की घटना के बाद न केवल बाह्य, अपितु आंतरिक सुरक्षा के स्तर को इतना सुदृढ़ किया कि वहां ऐसी किसी बड़ी घटना की पुनरावृत्ति नहीं हुई। जनता की भूमिका भी अहम है। कई महत्वपूर्ण आतंकी मामलों में स्थानीय सूचनाओं और नागरिक सतर्कता ने निर्णायक योगदान दिया है। अब सामुदायिक सहयोग आंतरिक सुरक्षा का अनिवार्य अंग बन चुका है।

हर घटना सीख देती है, और इन शिक्षाओं को संस्थागत रूप देना आवश्यक है। जांच के बाद की समीक्षा रिपोर्टें प्रशिक्षण, शहरी सुरक्षा मानचित्रण और खुफिया तंत्रों को बेहतर बना सकती हैं। अब समय है कि ध्यान पूर्वानुमान आधारित पुलिसिंग (प्रेडिक्टिव पुलिसिंग) पर केंद्रित किया जाए, न कि केवल जांच तक सीमित रहा जाए। तकनीक इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ड्रोन निगरानी और डिजिटल फॉरेंसिक जैसे उपकरण पुलिसिंग को नई दिशा दे रहे हैं। नैटग्रिड का अगला चरण, जिसमें राज्यों के डाटा नेटवर्क को भी जोड़ा जाएगा, इस संरचना को और सशक्त बनाएगा। लेकिन अंततः सबसे अहम मानव तत्व है। जमीनी स्तर पर तैनात अधिकारियों की सतर्कता, जांचकर्ताओं की सूझबूझ और एजेंसियों के बीच तालमेल ही किसी आपदा को रोक सकते हैं। तकनीक सहायता करती है, लेकिन काम मनुष्य ही करता है।

लाल किले के पास धमाके की जांच जारी है तथा आने वाले दिनों में सुरक्षा एजेंसियां इसके कारणों एवं सूत्रधारों का खुलासा करेंगी। आंतरिक सुरक्षा ढांचा पहले से कहीं अधिक सक्षम है, पर खतरे भी उतनी ही तेजी से बदल रहे हैं, तथा आतंकी संगठन अब और संगठित, आधुनिक तकनीक से लैस, एवं संसाधन युक्त हो रहे हैं। पुलिस आधुनिकीकरण, फॉरेंसिक साइंस और खुफिया साझेदारी में निवेश को दीर्घकालिक राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया जाना चाहिए। सुरक्षा के क्षेत्र में आत्मसंतोष का कोई स्थान नहीं। भारत की सुरक्षा प्रणाली आज प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि सहनशीलता और आत्मविश्वास की प्रतीक बन चुकी है। लाल किला सदियों से अनेक संकटों का साक्षी रहा है, और हर बार राष्ट्र पहले से अधिक सशक्त होकर उभरा है। इस बार भी ऐसा ही होगा।

-साथ में अक्षिता गुप्ता, शोधार्थी

जीवन धारा

प्लूटार्क

मन तो एक जीवंत अग्नि है, जिसे जिज्ञासा, चिंतन और सत्य के प्रेम से सदैव प्रज्वलित रखना चाहिए। यह दिव्य ज्योति हमारे भीतर ही बसती है, बस जरुरत है उसे पहचानने की।

मन कोई पात्र नहीं जिसे भरा जाए

मन किसी पात्र की तरह नहीं है, जिसे तथ्यों, मतों या उधार की बुद्धि से ठूंस दिया जाए। यह ऐसा खाली बर्तन भी नहीं, जिसे शिक्षकों, परंपराओं या संस्कृतियों द्वारा अनावश्यक रूप से भरा जाए। मन तो एक जीवंत अग्नि है, जिसे जिज्ञासा, चिंतन और सत्य के प्रेम से सदैव प्रज्वलित रखना चाहिए। मन की कल्पना एक सूखी लकड़ी के टुकड़े के रूप में करें। बिना चिंगारी के उस पर और लकड़ियां डालने से केवल एक ढेर ही प्राप्त होगा। लेकिन जब एक चिंगारी उस लकड़ी को छूती है, तो वह आग पकड़ लेती है, गर्मी फैलाती है और प्रकाश उत्पन्न करती है। इसी प्रकार मन को भी जिज्ञासा, जुनून और खोज की ज्वाला से प्रज्वलित होना चाहिए।

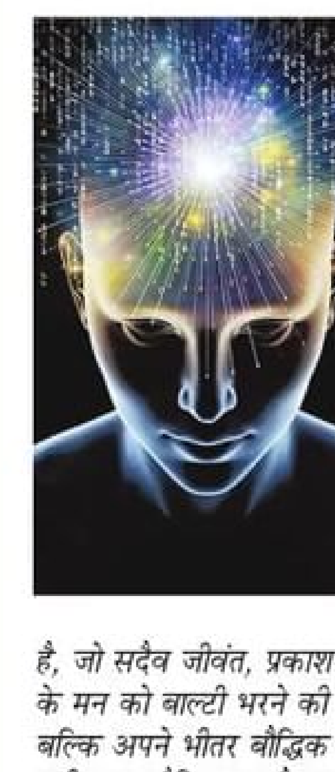

ज्ञान की खोज का अर्थ खाली बर्तन में अनाज की तरह सूखे तथ्यों का संग्रह करना नहीं है, बल्कि एक ऐसी ज्वाला प्रज्वलित करना है, जो रचनात्मकता को पोषित करे, खोज को प्रेरित करे और मौलिक विचारों को जगाए। किसी पात्र को भरना मतलब उसकी सीमा तय कर देना है। एक बार भर जाने के बाद वह अपने भीतर किसी और चीज को समाहित नहीं कर सकता है। लेकिन जब आप किसी अग्नि को प्रज्वलित करते हैं, तो आप उसे अनंत बना देते हैं, वह फैलती है, दूसरों को ऊष्मा देती है, और अंधकार को प्रकाशित करती है।

इसी प्रकार, ज्ञान जब केवल तथ्यों का संग्रह बनकर जाता है, तो वह बोझिल, निष्क्रिय और निर्जीव हो जाता है। पर जब वही ज्ञान समझ को जन्म देता है, तो वह बुद्धि का रूप ले लेता है, जो सदैव जीवंत, प्रकाशमान और अनंत रहता है। वास्तविक शिक्षा किसी इन्सान के मन को बाल्टी भरने की तरह तथ्यों से जबरन भरने का प्रयास नहीं करती, बल्कि अपने भीतर बौद्धिक आग को प्रज्वलित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यही आग मौलिकता और सत्य की खोज को प्रज्वलित करती है। जीवन की परीक्षाओं में भी, व्यक्ति इस सत्य को पाता है। जुनून और उद्देश्य से प्रज्वलित मन बाधाओं को पार कर जाता है। जैसे अग्नि लकड़ी को जलाकर उसे दीप्तिमान ऊर्जा में बदल देती है, वैसे ही एक प्रेरित मन चुनौतियों को सीढ़ी बना देता है और अंधकार को प्रकाश में बदल देता है। ऐसा मन किसी मत या भय का दास नहीं होता, क्योंकि वह भीतर की स्पष्टता और विश्वास से प्रकाशित होता है।

हर महान खोज, हर साहसिक कार्य, हर नई कल्पना किसी भरे हुए पात्र से नहीं, बल्कि किसी जलती हुई ज्वाला से जन्मी है। चाहे वह सुकरात का प्रश्न पूछता साहस हो, गैलीलियो का अंधकार से युद्ध हो या गांधी का जनचेतना जगाना, ये सब जलते हुए मनों की देन हैं, न कि भरे हुए दिमागों की। इसलिए, अपनी आंतरिक अग्नि को संजोएं। उसे अच्छे विचारों, सच्चे कर्मों और उच्च आदर्शों से पोषित करें। उसे भ्रम और नकारात्मकता की हवाओं से बचाएं। मन कोई पात्र नहीं जिसे भरा जाए, बल्कि एक अग्नि है, जिसे प्रज्वलित किया जाना चाहिए। यह दिव्य ज्योति हमारे भीतर ही बसती है, बस जरूरत है उसे पहचानने की।

ज्ञान को बोझ न बनने दें

सूत्र

मन को फिजूल की चीजों से भरने की नहीं, बल्कि उसे प्रज्वलित करने की आवश्यकता है। जब भीतर की जिज्ञासा, चिंतन और सत्य की लौ जल उठती है, तब ज्ञान बोझ नहीं, प्रकाश बन जाता है। यही चिंगारी रचनात्मकता, साहस और उद्देश्य का प्रमुख स्रोत है। असली शिक्षा दूसरों की नकल करना नहीं, स्वयं की खोज करना है।

दूसरा पहलू

जंगल बुक जैसी अमर रचना देने वाले लेखक रुडयार्ड किपलिंग का संबंध आगरा की ऐतिहासिक जमजमा तोप से भी है।

रुडयार्ड किपलिंग और ऐतिहासिक जमजमा तोप

इतिहास की भूल-भुलैया भी अजीब होती है, जो कई कालखंडों को पार कर सहसा जीवंत हो उठती है। यह विश्वास करना कठिन है कि *जंगल बुक* जैसी अमर रचना देने वाले ब्रिटिश लेखक रुडयार्ड किपलिंग का संबंध कभी मुगलों की राजधानी रहे आगरा और लाहौर की एक ऐसी तोप से होगा, जिसकी ऐतिहासिक विरासत अनोखी है। किपलिंग को 1907 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार उनकी जिन रचनाओं के लिए मिला, उनमें किम भी शामिल है। किम की कहानी ग्रेट गेम पर आधारित है, यानी 18वीं सदी के अंत में ब्रिटेन और रूस के बीच मध्य एशिया पर वर्चस्व के लिए चली कूटनीतिक चालें।

भूपेंद्र कुमार

अब आते हैं ऐतिहासिक जमजमा तोप पर। जमजमा फारसी शब्द है, जिसका अर्थ है गर्जना। यह वही तोप है, जो 14 जनवरी, 1761 को पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों के खिलाफ पहली बार दागी गई थी। उस समय अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली ने पंजाब में मुगलों के जीर्ण-शीर्ण शासन को ध्वस्त करना शुरू कर दिया था। 1759 में अब्दाली ने दो ताकतवर तोपें बनाने का आदेश दिया। धातु की कमी होने पर लाहौर के सूबेदार वली खान ने हिंदुओं पर जजिया लगाया और घरों से तांबे-पीतल के बर्तन इकट्ठे करवाए। लाहौर के कारीगर शाह नजीर ने इन तोपों को तैयार किया।

जमजमा का अर्थ है गर्जना। यह वही तोप है, जो 14 जनवरी, 1761 को पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों के खिलाफ पहली बार दागी गई थी।

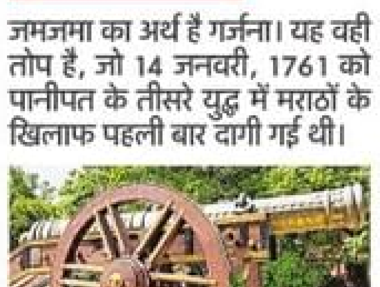

युद्ध में इनका जलवा देखकर अब्दाली उन्हें काबुल ले जाना चाहता था, पर चिनाब नदी पार करते समय एक तोप डूब गई, तो उसने इरादा छोड़ दिया। बची हुई तोप लाहौर में ही रह गई।

इतिहासकार जेजे डफ ने *हिस्ट्री ऑफ मराठा* में लिखा कि इस युद्ध में एक लाख से अधिक सैनिक मारे गए, जिनमें लगभग 40 हजार को जंग के बाद इन्हीं तोपों से बांधकर उड़ा दिया गया था। इन विशाल तोपों में 36 किलो का गोला भरा जाता था और हर तोप का वजन लगभग 4.5 टन था। युद्ध में इनका जलवा देखकर अब्दाली उन्हें काबुल ले जाना चाहता था, पर चिनाब नदी पार करते समय एक तोप डूब गई, तो उसने इरादा छोड़ दिया। बची हुई तोप लाहौर में रह गई। 1802 में यह तोप महाराजा रणजीत सिंह के हाथ लगी, जिन्होंने मुल्तान और वजीराबाद के अभियानों में इसका इस्तेमाल किया। बाद में यह जीर्ण-शीर्ण होती गई और 1870 ईस्वी में लाहौर म्यूजियम में रखी गई। दिलचस्प यह है कि पहले यह तोप लाहौर शहर के दिल्ली गेट पर रखी गई थी। वहीं से किपलिंग के किशोर चरित्र किम की कहानी शुरू होती है।

किम के कारण यह किम्ज गन (किम की तोप) कहलाने लगी। इसमें आगरा का भी जिक्र है, जहां किम कोटा से ग्वालियर होते हुए पहुंचता है, बाजार में उसकी लड़ाई होती है और जासूसी की शह-मात शुरू होती है। ताजमहल को किपलिंग ने संगमरमर का द्वार बताया है, जिससे सपनों को रास्ता मिलता है।

आंकड़े

विकास दर और हम

वैश्विक विकास दर 2026 में 3.1 फीसदी रहने का अनुमान है। भारत सबसे तेज गति (6.6 फीसदी) से विकास करेगा।

चीन	4.8
सऊदी अरब	4.0
नाइजीरिया	3.9
ब्राजील	2.4
अमेरिका	2.0

आंकड़े देशों की विकास दर के, प्रतिशत में। | स्रोत : वर्ल्ड इकनॉमिक आउटलुक रिपोर्ट

वृद्धा ने कहा, 'यदि तुम्हारी भूख रोटियों से मिटती, तो तुम अपना घर व देश छोड़कर यहां संपत्ति लूटने क्यों आते?' वृद्धा के शब्दों ने सिकंदर को झकझोर दिया।

वृद्धा की सीख

सिकंदर की महत्वाकांक्षा थी कि वह विश्व विजेता बने। उसने सेना के बल पर कई छोटे-छोटे देशों को युद्ध की चुनौती दे डाली। रक्तपात करके उसने कई देशों पर कब्जा कर लिया। लोग सिकंदर को क्रूर और खूनी समझकर उसके नाम से कांप उठते थे। एक वृद्धा ने सिकंदर की क्रूरता के बारे में सुनकर कहा कि दूसरे का खून बहाकर इकट्ठा की गई संपत्ति से कभी सुख-शांति नहीं मिलती। कोई सिकंदर को यह बात क्यों नहीं बताता?

एक दिन सिकंदर ने एक नगर को चारों तरफ से घेर लिया। जब उसे भूख लगी, तो उसने एक मकान का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा एक वृद्धा ने खोला। सैनिक वेष में खड़े व्यक्ति को देखकर ही वह समझ गई कि यह सिकंदर है। सिकंदर ने कहा, 'मां, मैं भूखा हूं, कुछ खाने को दो।' वृद्धा अंदर गई और कपड़े से ढकी थाली लेकर लौटी। सिकंदर ने कपड़ा हटाया, तो भोजन की जगह सोने के जेवरात देख बोला, 'मैंने खाना मांगा था। क्या ये मेरी भूख मिटा सकते हैं?'

अंतर्यात्रा
संकलित

वृद्धा ने निर्भीकता से कहा, 'यदि तुम्हारी भूख रोटियों से मिटती, तो तुम अपना घर व देश छोड़कर यहां संपत्ति लूटने क्यों आते? मेरे जीवन की कमाई का यह सोना ले जाओ, पर मेरे नगर पर चढ़ाई न करो।'

वृद्धा के शब्दों ने सिकंदर को झकझोर दिया। वह उनके चरणों में झुक गया। वृद्धा ने प्रेम से उसे भरपेट भोजन कराया। सिकंदर उस नगर को जीते बिना ही वापस लौट गया।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 12 नवंबर, 1949

21 राष्ट्रवादी विमान कम्युनिस्टों से जा मिले

२१ राष्ट्रवादी विमान कम्यूनिस्टों से जामिले

कश्मीर कमीशन के सदस्यों में भारी मतभेद पैदा हो गया है। राष्ट्रवादी चीन के कई हवाई जहाज कल अचानक कम्युनिस्टों से जा मिले। वे गंतव्य तक पहुंच गए हैं। हवाई कंपनी का जनरल मैनेजर इन विमानों के साथ गया है।

जेन जी और बदलाव के नए सूत्र

इन दिनों, इंस्टाग्राम को ध्यान में रखकर होटलों के बाथरूम्स बनाए जा रहे हैं, क्योंकि जेन जी ने इन्हें ही फोटो स्टूडियो बना दिया है।

क्षमा शर्मा | मुद्दा

इन दिनों जेन जी वह पीढ़ी है, जो किसी के व्यापार को चमका सकती है और गिरा भी सकती है। यही वह पीढ़ी है, जिसकी जेब में पैसा है। इसलिए इसे खुश करने के तरह-तरह के उपाय खोजे जा रहे हैं।

इस पीढ़ी के बारे में यह भी कहा जाता है कि यह इंस्टाग्राम या इंस्टा पीढ़ी है। यानी कि जो कुछ भी इसके जीवन में चल रहा है, उसके फोटो खींचकर इसे इंस्टाग्राम और फेसबुक पर लगाने हैं। किसी छोटी-से छोटी घटना को भी फोटो के रूप में कैद करके वाहवाही लूटनी है।

इस पीढ़ी को बाहर खाने का भी बहुत शौक है। मशहूर होटल हों, रेस्त्रां हों, पब हों, काम के बाद शाम के घंटों में इस पीढ़ी के अधिकांश लोग यहीं पाए जाते हैं। खाते-पीते, होटल में खड़े, कॉफी का कप थामते फोटो खींचना है, खिंचवाना है और लगाना है।

व्यवसायियों को जल्दी से जल्दी लोकप्रिय होने का यह तरीका समझ में आ गया है, जहां पब्लिसिटी पर उनका

कुछ खर्च नहीं होना है। हां, उनके होटल या रेस्त्रां के फोटो अच्छे होने चाहिए। ये युवा गूगल पर अक्सर सर्च भी करते रहते हैं कि इंस्टा के लिए लंदन में, वाशिंगटन में, दुबई आदि में कौन-से होटल या रेस्त्रां अच्छे हैं। होटल मालिकों ने इस बात को समझ लिया है। इसे समझने से पहले उन्होंने इस बात का पता लगाया कि कहां फोटो अच्छे आ सकते हैं। जहां ज्यादा भीड़-भाड़ न हो। लड़के-लड़कियां आराम से फोटो खींच सकें।

ये ट्रेंड कोविड के बाद ज्यादा बढ़ा। बस करना यह है कि किसी खाद्य पदार्थ की आकर्षक तस्वीर खींचें, उसे खाते दिखें और लोगों को बताएं कि यहां आकर किस-किस खाद्य पदार्थ को खाया जा सकता है। इस रेस्त्रां या होटल की खासियत क्या है। इस फोटो को खींचने में तरह-तरह के रंगों, रोशनियों और फिल्टर का इस्तेमाल भी किया गया हो। जब ये इंस्टा पर आता है, तो देखते-देखते छा जाता है। लोग उस स्थान की तरफ दौड़ पड़ते हैं, जहां ये खाद्य पदार्थ मिल रहे हैं। होटल भी हिट और फोटो लगाने वाला भी। दिलचस्प यह है कि अच्छा खाना पृष्ठभूमि में चला गया है, प्राथमिकता अच्छे फोटोज की है।

इसीलिए, अब लोग अच्छे खाने के मुकाबले गूगल से यह पूछते हैं कि अमुक शहर में इंस्टाग्राम के लिए फोटो खींचने के लिए अच्छे होटल या रेस्त्रां कौन-कौन से हैं। और एक लंबी-चौड़ी लिस्ट सामने आ जाती है। ऐसे बहुत से ग्रुप्स हैं, जो इस तरह की लिस्ट लगातार जारी करते रहते हैं। क्रेब कम्युनिकेशंस के टॉम रोजर्स का कहना है कि इन दिनों इंस्टाग्राम को ध्यान में रखकर ही होटल बनाए जा रहे हैं। उनकी साज-सज्जा की जा रही है। बाथरूम्स पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उनमें बहुत-सी सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। तरह-तरह की लाइट्स लगाई जा रही हैं। उम्मीद की जाती है कि इन बाथरूम्स में ज्यादा से ज्यादा लोग आएंगे। यहां आकर अपने फोटो खींचेंगे और सोशल मीडिया पर लगाएंगे। इन दिनों बाथरूम्स इंस्टाग्राम के लिए फोटो खींचने के लिए फेवरेट लोकेशंस हैं।

एक अध्ययन में पाया गया कि सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स एक रेस्त्रां में अपने तरह-तरह के अनुभवों को जल्दी से जल्दी शेयर करना चाहते हैं। वे बाथरूम्स या रेस्टरूम्स में जाकर सबसे ज्यादा तस्वीरें खींचते हैं। इसी अध्ययन में पता चला कि इंस्टा पर इन रेस्टरूम्स की हजारों, लाखों की संख्या में फोटोज मौजूद हैं। इन फोटोज में चमकते हुए सिंक, बड़े-बड़े शीशे, छत पर लटकी लाइट्स, दमकती हुई टाइल्स, साफ-सुथरे तौलिए, खुशबूदार बड़े ब्रांड्स के साबुन आदि दिखाई देते हैं।

इन दिनों तो यहां तरह-तरह के कार्टून्स और पेंटिंग्स आदि भी दिखाई देती हैं। रेस्टरूम्स की सज्जा पर मालिकान बहुत पैसे खर्च कर रहे हैं, जिससे कि होटल या रेस्त्रां की ब्रांड वैल्यू बढ़ सके। जेन जी को बाथरूम्स के भी सौंदर्य को महसूस कर लोगों को दिखाना है।

कई मालिकों का कहना है कि खाना चाहे जितना अच्छा हो, अगर बाथरूम्स या रेस्टरूम्स में सुविधाएं नहीं हैं, वे साफ-सुथरे और आकर्षक नहीं हैं, और लोग सोशल मीडिया पर असुविधाजनक, अनाकर्षक बाथरूम्स को दिखाने लगें, तो उनका इंप्रेशन खराब हो सकता है। सोचा जा सकता है कि अगर बाथरूम्स इतने गंदे हैं, तो किचन भी इतना ही गंदा होगा।

निष्कर्ष यह कि गंदे किचन में पका खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यदि किसी खान-पान के स्थान के सोशल मीडिया पर नकारात्मक रिव्यूज हों, तो उसे बंद होने में कितनी देर लगेगी। जबकि इसके उलट एक साफ-सुथरे बाथरूम के इंप्रेशन और लग्जरी को युवा पीढ़ी याद रखती है। इसीलिए कहा जा रहा है कि जेन जी के लिए नया महत्वपूर्ण कमरा बाथरूम है।

edit@amarujala.com

एजुकेशन & कॅरिअर

गलतियां वास्तव में सीखने की सीढ़ियां होती हैं।

अमर उजाला Job Alert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

बैंक ऑफ बड़ौदा में निकली भर्ती

अप्रेंटिसशिप के लिए करें आवेदन

2700 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 01 दिसंबर, 2025
स्टाइपेंड : रुपये 15,000 प्रतिमाह निर्धारित
यहां आवेदन करें : bankofbaroda.bank.in

इंटेलिजेंस ब्यूरो में संभावनाएं ■ 258 पद

एसीआईओ ग्रेड-II व तकनीकी पदों पर रिक्तियां
आवेदन की अंतिम तिथि
16 नवंबर, 2025
पात्रताएं
बीई, बीटेक व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें
mha.gov.in

डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन ■ 32 पद

असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर व अन्य पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि
26 नवंबर, 2025
योग्यताएं
बीएससी, एमएससी व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
negd.gov.in

आईपीपीबी में नौकरी के मौके ■ 309 पद

जूनियर एसोसिएट व असिस्टेंट मैनेजर के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि : 01 दिसंबर, 2025
आयु-सीमा : न्यूनतम 20 वर्ष व अधिकतम 32 व 35 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें : ippbonline.bank.in

बीईएल ने जारी किया विज्ञापन ■ 52 पद

प्रोजेक्ट इंजीनियर के पदों पर निकली भर्ती
आवेदन की अंतिम तिथि
20 नवंबर, 2025
वेतनमान
रुपये 40,000 से लेकर रुपये 55,000 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें
bel-india.in

एलिम्को में रोजगार की संभावनाएं ■ 10 पद

अप्रेंटिसशिप के लिए करें अप्लाई
आवेदन की अंतिम तिथि
12 दिसंबर, 2025
पात्रताएं
दसवीं, बारहवीं, आईटीआई व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें
alimco.in

विभिन्न पदों के लिए आवेदन आमंत्रित...

- राष्ट्रीय आवास बैंक : उप-महाप्रबंधक, मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी व अन्य पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 28 नवंबर, 2025
- nhb.org.in
- भारतीय प्रबंधन संस्थान, तिरुचिरापल्ली : प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर आदि पदों पर मौके।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 21 नवंबर, 2025
- iimtrichy.ac.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

निर्णय लेना भी एक कला है

रोजमर्रा की जिंदगी में हर कोई निर्णय लेता है, लेकिन जब पेशेवर फैसले लेने की बात हो, तो यह काम चुनौतीपूर्ण हो जाता है

लेडा स्टॉनिच्को
सहायक प्रोफेसर
माउंट रॉयल विश्वविद्यालय

आप हर दिन कई छोटे-बड़े निर्णय लेते हैं। यह आपके लिए सामान्य बात हो सकती है, लेकिन जब पेशेवर फैसले लेने की बात आती है, तो काम चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इसका कारण यह है कि एक गलत निर्णय आपके भविष्य और कॅरिअर को प्रभावित कर सकता है, खासकर तब जब आप पेशेवर दुनिया में नए हों। आपके निर्णय आपके सहकर्मियों और प्रबंधकों पर भी असर डालते हैं, इसलिए आप हर कदम बहुत सोच-समझकर उठाना चाहते हैं। इसी तरह से कई बार आप आत्मविश्वास के साथ अपने विचार साझा करने में हिचकिचाते हैं। ऐसे में प्रभावी निर्णय लेने के लिए अपने अंतर्मन को समझने और सुनने की क्षमता विकसित करना जरूरी है। याद रखें, निर्णय लेना आवेग का काम नहीं है, बल्कि तर्क, अनुभव और समझ पर आधारित फैसले ही आपका सच्चा आत्मविश्वास दिखाते हैं।

■ निर्णयों के फर्क को समझें

अच्छे पेशेवर इसलिए अलग दिखते हैं, क्योंकि वे ऐसे फैसले लेना जानते हैं जो संगठन की सफलता बढ़ाते हैं। सफल लीडर यह समझते हैं कि परिचालन निर्णय रोजमर्रा के कामों से जुड़े होते हैं, जबकि रणनीतिक निर्णय बड़े लक्ष्यों और भविष्य की दिशा को तय करते हैं। रणनीतिक फैसले कठिन होते हैं, क्योंकि इनके लिए व्यापक सोच की जरूरत होती है और यही फैसले संगठन के विकास की नींव बनाते हैं।

■ फाइव डब्ल्यू फ्रेमवर्क

अगर आप कॅरिअर की शुरुआत में हैं, तो अपने निर्णय बेहतर बनाने के लिए 'फाइव डब्ल्यू' फ्रेमवर्क जैसे-कौन?, क्या?, कब?, क्यों? और कैसे? का उपयोग करना बहुत मददगार होता है। यह तरीका आपको सोचने का एक स्पष्ट ढांचा देता है, जिससे आप किसी भी फैसले को सभी जरूरी पहलुओं से समझ पाते हैं। इस फ्रेमवर्क को अपनाने से आप आत्मविश्वास के साथ अपने विचार दूसरों तक पहुंचा सकते हैं और निर्णय लेने में हिचकिचाहट कम हो जाती है। इस तरह आप अधिक सोच-समझकर, मजबूत और प्रभावी फैसले ले सकेंगे।

■ मूल्यों को समझें

जब आप अपने महत्वपूर्ण मूल्यों को अच्छी तरह समझ लेते हैं, तो निर्णय लेना स्वाभाविक रूप से आसान और अधिक नैतिक हो जाता है। इसलिए किसी भी पेशेवर फैसले से पहले यह पता करना जरूरी है कि आपके लिए वास्तव में क्या सबसे महत्वपूर्ण है। अपने पुराने निर्णयों पर नजर डालें, जैसे कि कौन-से सही थे, कौन-से गलत, इससे आपको अपनी सोच की दिशा स्पष्ट दिखने लगती है। इसके साथ ही, अपने निर्णयों में पारदर्शिता रखना भी जरूरी है। जब लोग देखते हैं कि आपके फैसले ईमानदारी और स्पष्ट सोच पर आधारित हैं, तो वे आप पर ज्यादा भरोसा करते हैं और आपको एक विश्वसनीय पेशेवर मानते हैं।

■ विचारों पर खुलकर चर्चा करें

अच्छे फैसले लेने की आदत कार्यस्थल पर नेतृत्व क्षमता बढ़ाने में मददगार हो सकती है। जब आप अपने सहयोगियों के साथ अपने विचारों पर खुलकर चर्चा करते हैं, तो आपको नए दृष्टिकोण और सुझाव मिलते हैं। यह न केवल आपके निर्णय लेने के कौशल को मजबूत करता है, बल्कि आपकी सोच को भी व्यापक बनाता है। - द कन्वर्सेशन

फेलोशिप अलर्ट

एचएससीएसटी फेलोशिप प्रोग्राम

एचएससीएसटी फेलोशिप प्रोग्राम-2025 हरियाणा राज्य विज्ञान, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा एमएससी या समकक्ष डिग्री वाले छात्रों के लिए शुरू किया गया है, जिसका उद्देश्य पृथ्वी विज्ञान, गणित, रसायन, भौतिकी और जीवन विज्ञान के क्षेत्रों में शोध करने वाले छात्रों को आर्थिक सहायता देना है। चयनित फेलो को हरियाणा के किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या संस्थान में पूर्णकालिक पीएचडी करने के लिए अधिकतम प्रतिमाह रुपये 35,000 तक वजीफा मिलेगा। इसके लिए उम्मीदवार की उम्र एक जनवरी, 2024 तक 28 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदन करने के लिए जरूरी है कि उम्मीदवारों के पास एमएससी में कम से कम 55 प्रतिशत अंक होने चाहिए। उम्मीदवार आधिकारिक लिंक tinyurl.com/mw6m2ehu पर जाकर 28 नवंबर, 2025 तक ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

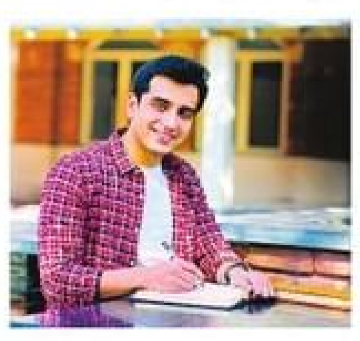

आवेदन आमंत्रित

एब्नॉर्मल साइकोलॉजी ऑनलाइन कोर्स

इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेज यूनिवर्सिटी, हैदराबाद की ओर से एब्नॉर्मल साइकोलॉजी कोर्स का आयोजन किया जा रहा है। इस कोर्स के माध्यम से छात्रों को असामान्यता की अवधारणा, उसके वर्गीकरण और मनोवैज्ञानिक विकारों के बारे में बुनियादी समझ से लेकर विस्तार तक बताया जाएगा। इन विकारों के कारण क्या-क्या समस्या आती है और उनसे कैसे निपटा जाए, साथ ही इसमें सहायक मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेपों पर भी चर्चा की जाएगी। इस कोर्स को करने के लिए जरूरी है कि छात्रों के पास अंग्रेजी भाषा की समझ हो। कोर्स करने के बाद छात्रों को मनोविज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने और अपना कॅरिअर बनाने में मदद मिलेगी। 12 सप्ताह इस कोर्स की समाप्ति के बाद छात्रों को कोर्स सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा। इसकी शुरुआत 12 जनवरी, 2026 से की जाएगी, जो कि 30 अप्रैल, 2026 तक चलेगी। आप आधिकारिक लिंक tinyurl.com/3jw34zj6 पर जाकर 28 फरवरी, 2026 तक इस कोर्स में दाखिला ले सकते हैं।

प्रवेश अलर्ट — हफ्ते की परीक्षाएं

यूपीएसएसएससी ड्राफ्ट्समैन और कार्टोग्राफर परीक्षा

- **परीक्षा की तिथि :** 16 नवंबर, 2025
- इस परीक्षा में ड्राइंग उपकरण और सॉफ्टवेयर, गणना और चित्रण, विभिन्न ट्रेड, वास्तुकला तथा उत्तर प्रदेश से जुड़ी सामान्य जानकारी से 100 अंकों के कुल 100 प्रश्न पूछे जाएंगे।
- **यहां से परीक्षा केंद्र का विवरण देखें** tinyurl.com/3jbutncc

एसएससी सीपीओ एसआई परीक्षा

- **परीक्षा की तिथि :** 17 से 21 नवंबर, 2025
- यह परीक्षा पेपर-I और पेपर-II में आयोजित की जाएगी। पेपर-I में सामान्य बुद्धि व तर्कशक्ति, सामान्य ज्ञान व जागरूकता, मात्रात्मक योग्यता और इंग्लिश कॉम्प्रिहेंशन से 200 अंकों के 200 प्रश्न पूछे जाएंगे। पेपर-II में इंग्लिश लैंग्वेज और कॉम्प्रिहेंशन से 200 अंकों के 200 प्रश्न शामिल होंगे।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें** ssc.gov.in

खुद को परखें

1. किस मंत्रालय ने रियलक्राफ्ट पोर्टल विकसित किया है?
   (a) कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
   (b) मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय
   (c) पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
   (d) वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
2. कोरगा जनजाति मुख्यतः किन राज्यों में पाई जाती है?
   (a) बिहार और झारखंड
   (b) कर्नाटक और केरल
   (c) आंध्र प्रदेश और ओडिशा
   (d) उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश
3. क्रिसमस द्वीप किस महासागर में स्थित है?
   (a) उत्तरी अटलांटिक महासागर
   (b) दक्षिणी अटलांटिक महासागर
   (c) प्रशांत महासागर
   (d) हिंद महासागर

उत्तर : 1.b, 2.b, 3.d

सामान्य ज्ञान

कोपरनिकस सेंटिनल-1डी

■ क्या है

यह सेंटिनल-1 मिशन की पहली पीढ़ी का चौथा व आखिरी उपग्रह है।

■ चर्चा में क्यों

ईएसए और एरियनस्पेस ने फ्रेंच गुयाना से एरियन-6 रॉकेट के जरिये इस उपग्रह को पृथ्वी की निचली कक्षा में भेजा।

■ इसका उद्देश्य

इसका लक्ष्य पर्यावरण की निगरानी करना, बाढ़-भूकंप जैसी आपदाओं में मदद करना, समुद्र में तेल रिसाव तथा जहाजों पर नजर रखना और शहरों की जमीन व ढांचे की स्थिति को समझना है। इसमें सी-बैंड रडार लगा है, जो खराब मौसम या रात में भी पृथ्वी की साफ तस्वीरें ले सकता है।

■ कम समय में पृथ्वी को करता कवर

इस उपग्रह का वजन करीब 2,300 किलो है और यह 693 किमी की ऊंचाई पर घूमता है। इसका एसएआर रडार लगभग 5 से 25 मीटर तक की साफ तस्वीरें लेता है और स्वचालित पहचान प्रणाली जहाजों पर तुरंत नजर रख सकती है। यह छह दिनों से भी कम समय में पूरी पृथ्वी को कवर करता है और कम से कम सात साल तक काम करने के लिए बनाया गया है।

टेक-टॉक

Gadgets Ai Technology

एआई रोकेगा जंगल की आग

वैज्ञानिकों ने एआई से संचालित एक ऐसा ड्रोन विकसित किया है, जो धुएं और राख के जरिये अनुमान लगाकर आग को फैलने से रोकने में मदद करेगा।

जलवायु परिवर्तन के कारण आज जंगलों में आग लगने की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। ऐसी आग पर काबू पाना इन्सानों के लिए बेहद कठिन होता है। इसी चुनौती से निपटने के लिए मिनेसोटा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक विशेष एआई-संचालित ड्रोन विकसित किया है, जो आग से उठते धुएं और राख के कणों का विश्लेषण कर उनकी गति और दिशा का अनुमान लगा सकता है।

ये ड्रोन हवा में मौजूद सूक्ष्म कणों का डेटा एकत्र करते हैं और तुरंत जमीन पर स्थित कंप्यूटर को भेजते हैं। कंप्यूटर उस डाटा से यह समझने की कोशिश करता है कि आग किस दिशा में फैल सकती है और धुआं कहां तक जा सकता है। प्रोफेसर कृष्णकुमार के अनुसार, "हम यह जानना चाहते हैं कि धुएं के सूक्ष्म कण कितनी दूर तक जा सकते हैं और किस ऊंचाई पर ठहरते हैं। यही समझ भविष्य में आग के फैलाव को रोकने में मदद करेगी।"

■ संघर्ष से सफलता तक

यह ड्रोन परियोजना कई असफल प्रयासों के बाद सफल हुई है। प्रारंभिक ड्रोन कई बार दुर्घटनाग्रस्त हुए, लेकिन टीम ने बेहतर सेंसर, बड़े प्रोपेलर और शक्तिशाली मोटर लगाकर नई पीढ़ी के ड्रोन विकसित किए। अब ये 150 फीट की ऊंचाई तक उड़ान भरते हुए लगभग 25 मिनट तक लगातार डेटा एकत्र कर सकते हैं। शोधकर्ता युए वेंग कहते हैं, "धुएं और राख के कणों का व्यवहार समझना कठिन होता है, लेकिन इन्हें जानकर हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि आग आगे किस दिशा में बढ़ सकती है।"

■ स्वचालित भविष्य की ओर

परियोजना का नेतृत्व कर रहे प्रोफेसर जियारोंग हांग के अनुसार, भविष्य में ऐसे ड्रोन बड़े पैमाने पर जंगलों की निगरानी करेंगे। इसके लिए कई ड्रोन एक साथ तैनात किए जाते हैं- एक केंद्रीय ड्रोन बाकी चार को नियंत्रित करता है। हवा की दिशा बदलते ही वे अपने रास्ते खुद तय कर लेते हैं। यह तकनीक केवल आपात स्थितियों में ही नहीं, बल्कि 'नियंत्रित आग' जैसी प्रक्रियाओं को भी सुरक्षित बनाने में सहायक हो सकती है। पिछले कुछ सालों में अनेक नियंत्रित आग नियंत्रण से बाहर होकर हादसों में बदल चुकी हैं।

■ उज्जवल हैं संभावनाएं

फिलहाल यह प्रयोग सीमित स्तर पर है, पर इसका महत्व बहुत बड़ा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि जब ये ड्रोन अधिक समय तक उड़ान भरने और बेहतर डेटा एकत्र करने में सक्षम हो जाएंगे, तब इन्हें जंगल की वास्तविक आग से निपटने में सीधे तौर पर तैनात किया जा सकेगा।

मिनेसोटा विश्वविद्यालय की टीम पहली बार धुएं के कणों की आकृति और संरचना को वास्तविक वातावरण में मापने में सफल हुई है। यदि यह तकनीक व्यापक रूप से अपनाई जाए, तो यह न केवल वन विभागों, बल्कि पूरी मानवता के लिए राहत की नई किरण साबित हो सकती है-जब धुएं को पहचानने वाले ड्रोन आग से जूझते जंगलों की निगरानी करेंगे।

लिंक्डइन के जरिये पहुंच सकेंगे बड़े वर्ग तक

लिंक्डइन ने अपनी सामुदायिक नीतियों को अपडेट किया है। इससे प्लेटफॉर्म पर चर्चा और जुड़ाव में वृद्धि होगी। पहले की तुलना में अब लिंक्डइन उपयोगकर्ताओं को विभिन्न प्रकार के अपडेट साझा करने, लेख प्रकाशित करने और अन्य लेखों को फिर से साझा करने के लिए अधिक सुविधा प्रदान करता है। अब आप फोटो, वीडियो और दस्तावेज सहित विभिन्न प्रकार के अपडेट साझा कर सकते हैं। व्यावसायिक रूप से प्रासंगिक सामग्री को लिंक्डइन के नेटवर्क के माध्यम से बड़े पैमाने पर साझा किया जाएगा, जिससे व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुंचना संभव होगा। ये बदलाव लिंक्डइन की सामुदायिक नीतियों में एक अपडेट का हिस्सा हैं।

'टाइम मैनेजमेंट' करेगा स्क्रीन टाइम कम

थ्रेड्स ने अपने एप में एक नया विकल्प 'टाइम मैनेजमेंट' जोड़ा है, जो उपयोगकर्ताओं को उनके दैनिक उपयोग पर नजर रखने, दैनिक समय सीमा निर्धारित करने और स्लीप मोड सेट करने की अनुमति देता है। यह नया फीचर अकाउंट सेटिंग्स में उपलब्ध है और इसका उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को थ्रेड्स पर बिताए गए समय को नियंत्रित करने में मदद करना है। यह विकल्प आपको यह दिखाता है कि आप प्रतिदिन थ्रेड्स पर कितना समय बिताते हैं। इस विकल्प के जरिये आप एक दैनिक समय सीमा सेट कर सकते हैं, जिसे पूरा करने पर आपको सूचित किया जाएगा। आप स्लीप मोड भी सेट कर सकते हैं, जो एक समय के बाद एप को अस्थायी रूप से अक्षम कर देता है।

आने वाली है

जल्द आएगी बीएमडब्ल्यू की इलेक्ट्रिक एसयूवी

भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों का बाजार तेजी से बढ़ रहा है और अब लग्जरी कार निर्माता कंपनियां भी इसमें खुलकर उतर चुकी हैं। इसी बीच बीएमडब्ल्यू अपनी प्रीमियम इलेक्ट्रिक एसयूवी का नया वर्जन बीएमडब्ल्यू आईएक्स 2025 भारत में इसी महीने लॉन्च कर सकती है। कंपनी ने इस नई एसयूवी को एक फ्यूचरिस्टिक डिजाइन, बेहतरीन इलेक्ट्रिक परफॉर्मेंस और लक्सरी फीचर्स के साथ तैयार किया है, जिससे यह आने वाले समय में भारतीय ईवी मार्केट में एक गेम-चेंजर साबित हो सकती है। नई बीएमडब्ल्यू आईएक्स 2025 में 402 बीएचपी की शक्तिशाली इलेक्ट्रिक मोटर दी गई है, जो जबरदस्त परफॉर्मेंस देने में सक्षम है।

आने वाली है

नए साल में यामाहा वाईजेडएफ-आर 7

यामाहा वाईजेडएफ-आर 7 के इस साल के अंत या नए साल में लॉन्च होने की उम्मीद है। वाईजेडएफ- आर 7 में कई नए अपडेट्स हो सकते हैं, जिनमें एक उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स सूट, संशोधित चेसिस और नए राइडिंग मोड्स और क्विकशिफ्टर जैसी सुविधाएं शामिल हैं। इसमें स्मार्टफोन कनेक्टिविटी और एक अधिक आक्रामक फ्रंट-एंड डिजाइन जैसे फीचर्स भी दिए जा सकते हैं। एक नई 5-इंच की कलर टीएफटी डिस्प्ले, जिसमें स्मार्टफोन कनेक्टिविटी और ऐप के माध्यम से नोटिफिकेशन प्राप्त करने की सुविधा दी जा सकती है।

आज का दिन

12 नवंबर, 1847

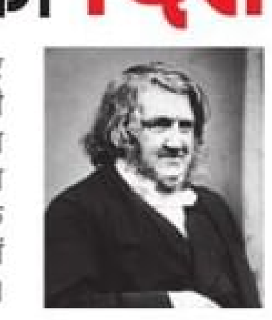

ब्रिटेन के चिकित्सक सर जेम्स यंग सिंपसन ने बेहोशी की दवा क्लोरोफॉर्म का पहला सफल प्रयोग किया था। इस खोज ने आधुनिक एनेस्थीसिया के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- 1930 : भारतीय संविधान पर विचार के लिए लंदन में पहला गोलमेज सम्मेलन शुरू हुआ।
- 1946 : पं. मदन मोहन मालवीय का निधन हुआ था।
- 1980 : अमेरिकी अंतरिक्ष यान वॉयेजर 1 शनि ग्रह पर पहुंचा।
- 1990 : जापान में सम्राट आकिहितो का परंपरागत राज्याभिषेक हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष अष्टमी।
कल : हेमंत ऋतु, सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोले।
राहुकाल : दिन में 13.30 से 15.00 तक।

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2082, 22 कार्तिक मास शक 1947, कार्तिक मास 28 प्रविष्टे, 21 जमादिउलअवल हिजरी 1447, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष नवमी 23.33 तक उपरांत दशमी, मघा नक्षत्र 19.37 तक उपरांत पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, ब्रह्म योग 06.57 तक उपरांत ऐंद्र योग 30.26 तक तदोपरांत वैधृति योग, तैतिल करण 11.15 तक उपरांत गर करण, चंद्रमा सिंह राशि में दिन-रात।

■ सूर्योदय : 06.46
■ सूर्यास्त : 17.25
(भारतीय मानक समयानुसार)

राशिफल

amarujala.com/astrology
■ पं. विनोद त्यागी

मेष : स्वजन सहयोग मिलेगा। कार्य क्षेत्र में व्यस्त रहेंगे। संपत्ति संबंधी मामलों में विलंब होगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

वृष : मनोत्साह बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य के निष्पादन में व्यस्त रहेंगे। नौकरी में सम्मान बढ़ेगा।

मिथुन : मानसिक उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। नौकरी में स्थिति यथावत रहेगी। आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी।

कर्क : मन में आशा का संचार होगा। नौकरी में अधिकार वृद्धि हो सकती है। राजकाज में सफलता मिलेगी।

सिंह : भाग्य सहायक रहेगा। अटके कार्य सफल होंगे। नौकरी में सम्मान बना रहेगा। अनैतिक कार्य से बचें।

कन्या : सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी। कार्यक्षेत्र में वर्चस्व बढ़ेगा। योजना में सफलता मिलेगी।

तुला : आत्मबल बनाए रखें। राजकाज में सफलता मिलेगी। पूर्व निवेशित धन मिल सकता है। व्यापार में सावधानी बरतें।

वृश्चिक : व्यक्तिगत संबंध सहायक रहेंगे। सरकारी क्षेत्र में आंशिक सफलता मिलेगी। नौकरी में सावधानी बरतें।

धनु : सहोदरों से मनमुटाव रहेगा। नौकरी में स्थानांतरण हो सकता है। आर्थिक क्षेत्र में सावधानी बरतें।

मकर : मानसिक चिन्तन बना रहेगा। कार्य क्षेत्र में मन नहीं लगेगा। नए कार्य का प्रस्ताव आ सकता है।

कुंभ : आत्मबल बना रहेगा। नौकरी में स्थिति अनुकूल रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य में सफलता मिलेगी।

मीन : मानसिक दुविधा बनी रहेगी। कार्यक्षेत्र में स्थिति अनुकूल रहेगी। संतान पक्ष से निराशा होगी। यात्रा संभव है।

जन्मदिन

श्वेता साल्वे, अभिनेत्री

इस वर्ष भाग्य सहायक रहेगा। अटकी योजनाओं में सफलता से उत्साहित रहेंगे। चली आ रही परेशानियों से मुक्ति मिलेगी। राजनीतिक संबंध सहायक रहेंगे। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। जमीन-जायदाद के अटके मामले सुलझेंगे। व्यावसायिक विस्तार एवं लाभ से मन प्रसन्न रहेगा। जमा पूंजी में वृद्धि होगी।

सुडोकू

			1		3		6	
				5		1	8	
2						4	3	
1		2			6	5		8
9	5		7		2		4	3
4		6	5			2		1
	4	3						7
	9	1		4				
	2		9		7			

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

5	8	4	1	9	3	7	6	2
3	6	7	2	5	4	1	8	9
2	1	9	6	7	8	4	3	5
1	7	2	4	3	6	5	9	8
9	5	8	7	1	2	6	4	3
4	3	6	5	8	9	2	7	1
6	4	3	8	2	1	9	5	7
7	9	1	3	4	5	8	2	6
8	2	5	9	6	7	3	1	4

डेली हेल्थ कैप्सूल

हीटिंग पैड कितना जरूरी है?

सर्दियों में अक्सर पुराने दर्द उभर जाते हैं। इसे कम करने के लिए हीटिंग पैड का उपयोग करना कितना सही है।

सर्दियां आने के साथ लोगों की सेहत से जुड़ी समस्याएं बढ़ जाती हैं। सबसे ज्यादा लोग जोड़ों में दर्द की शिकायत करते हैं और पुराने जोड़ों के दर्द वाले सबसे ज्यादा प्रभावित रहते हैं। दरअसल, सर्दियों में हवा सर्द होने की वजह से ब्लड सर्कुलेशन धीमा पड़ जाता है। इसके अलावा हड्डियों में गर्माहट की कमी होती है जिससे अकड़न की समस्या होती है। खराब ब्लड सर्कुलेशन की वजह से जोड़ों में तनाव बढ़ता है जिससे हड्डियों का दर्द बढ़ता जाता है। ऐसी स्थिति में दवाओं के साथ अगर आप कुछ घरेलू उपचारों की मदद लें तो दिक्कत कम की जा सकती है। पुरानी मांसपेशियों की अकड़न, पीठ दर्द, या अन्य दीर्घकालिक दर्द के लिए हीटिंग पैड चुनें, जिसके लिए लगातार स्थिर गर्मी की आवश्यकता होती है और इस स्थिति में ये कारगर है। हीटिंग पैड और गर्म सेंक पुराने जोड़ों के दर्द से राहत पाने के लिए वरदान साबित हो सकते हैं, लेकिन सुरक्षा कुछ कारकों पर निर्भर करती है। हीट थेरेपी मांसपेशियों को आराम दे सकती है, रक्त प्रवाह बढ़ा सकती है और अकड़न कम कर सकती है। इससे जोड़ों में दर्द से राहत मिल सकती है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

हीटिंग पैड प्राकृतिक चिकित्सा का एक सरल, प्रभावी और सुरक्षित उपकरण है। सावधानीपूर्वक इसका उपयोग करने से दर्द, जकड़न और वातजन्य रोगों में बहुत लाभ मिलता है। -डॉ. नवदीप जोशी, प्राकृतिक चिकित्सक

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 12-11-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH08 User: cci Time: 11-11-2025 23:52 Color:

GRAP-3 की बंदिशों में जीने को हो जाएं तैयार

428 के गंभीर स्तर पर पहुंचा AQI सीज़न में पहली बार

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

राजधानी में प्रदूषण का स्तर गंभीर हो गया है। इसके साथ ही GRAP-3 भी दिल्ली-एनसीआर में लागू कर दिया गया है। सोमवार और मंगलवार को केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) की वेबसाइट और ऐप ने भी धोखा दिया। साइट और वेबसाइट पर एक्यूआई का डेटा सोमवार दोपहर 12 बजे के बाद अपडेट ही नहीं हुआ।

रात करीब 10 बजे के बाद डेटा अपडेट किया गया, लेकिन इसके कुछ घंटे बाद फिर से डेटा गायब हो गया। इस बीच जब लोगों की नींद खुली तो उन्हें स्मॉग की मोटी परत नजर आई। 7 बजे राजधानी का एक्यूआई 425 रहा। इसके बाद इसे सीएक्यूएम की सब कमिटी ने इमरजेंसी मीटिंग कर दिल्ली एनसीआर में GRAP-3 लागू करने की घोषणा की।

सीपीसीबी के एयर बुलेटिन के अनुसार मंगलवार को राजधानी का एक्यूआई 428 रहा। दोपहर 4 बजे यह 430 रहा था। इसके बाद इसमें थोड़ी कमी आई। दिल्ली के अलावा फरीदाबाद का एक्यूआई 298, गाजियाबाद का 390, ग्रेटर नोएडा का 406, गुरुग्राम का 378 और नोएडा का 425 रहा।

कई जगहों पर प्रदूषण की इमरजेंसी: राजधानी की सबसे प्रदूषित जगहों में आनंद विहार का एक्यूआई 453, अशोक विहार का 454, बवाना का 464, चांदनी चौक का 462, मथुरा रोड का 457, द्वारका सेक्टर-8 का 454, जहांगीरपुरी का 455, मुंडका का 465, नेहरू नगर का 457, पटपड़गंज का 453, पंजाबी बाग का 460, आर के पुरम का 458, रोहिणी का 454, सीरीफोर्ट का 456, विवेक विहार का 450 और वजीरपुर का 466 रहा। एनएसआईटी द्वारका का एक्यूआई 233 रहा। यह इकलौता स्टेशन रहा, जहां का एक्यूआई 300 से नीचे रहा। लोदी रोड का एक्यूआई 303, डीटीयू का 379 और दिलशाद गार्डन का 316 रहा।

कई दिनों तक रहेगा प्रदूषण बेहद खराब: पूर्वानुमान के अनुसार 12 से 14 नवंबर के बीच प्रदूषण का स्तर बेहद खराब रहेगा। इसके बाद अगले 6 दिनों तक भी इसका स्तर बेहद खराब रह सकता है। मंगलवार को हवाओं की गति 10 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे रही। यह बुधवार को 12 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे, गुरुवार को 10 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे और शुक्रवार को 8 से 15 किलोमीटर प्रति घंटे तक रह सकती है।

3-4 दिन में बढ़ेगी सर्दी

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** राजधानी में अब दिन के समय भी हल्की ठंड महसूस होने लगेगी। मौसम विभाग के अनुसार अगले तीन से चार दिनों में अधिकतम तापमान में दो से तीन डिग्री की गिरावट आएगी। वहीं, न्यूनतम तापमान भी फिसलकर 10 डिग्री से नीचे जा सकता है। इस समय सुबह के वक्त काफी ठंड महसूस हो रही है, जबकि दोपहर में मौसम थोड़ा आरामदायक बना रहता है। मंगलवार को अधिकतम तापमान 27.7 डिग्री दर्ज किया गया। यह सामान्य से 1.8 डिग्री कम रहा। वहीं, न्यूनतम तापमान सामान्य से 4.1 डिग्री कम होकर 10.2 डिग्री तक पहुंच गया। यह इस सीजन की सबसे ठंडी सुबह रही।

सीएम ने की समीक्षा बैठक

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने राजधानी में बढ़ते प्रदूषण को लेकर मंगलवार को समीक्षा बैठक की। बैठक में प्रदूषण से निपटने के उपायों पर चर्चा के साथ प्रदूषण फैलाने वालों पर कार्रवाई तेज करने का निर्देश दिया है। बैठक में प्रदूषण पर कार्रवाई करने वाली एनफोर्समेंट टीम को बढ़ाने का फैसला किया है। अब दिल्ली में 2088 एनफोर्समेंट टीमें काम करेंगी।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने प्रदूषण ज्यादा होने के कारण पांचवीं तक स्कूल बंद करने का भी निर्देश दिया है। प्रदूषण को रोकने के लिए 300 मिस्ट स्प्रे सिस्टम लगाने के निर्देश दिए गए।

अब हाइब्रिड मोड में चलेंगी 5वीं तक की क्लासें

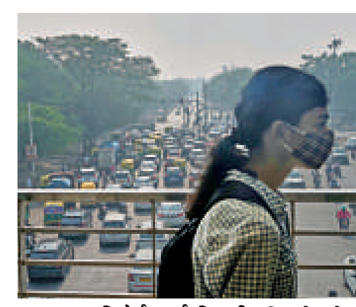

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** दिल्ली की हवा की क्वॉलिटी गंभीर है और इसे देखते हुए दिल्ली के सभी स्कूलों में क्लास 5 तक की क्लासें हाइब्रिड मोड में रखी जाएंगी यानी फिजिकल के साथ-साथ ऑनलाइन क्लासों का ऑप्शन स्टूडेंट्स को मिलेगा। मंगलवार को एयर क्वॉलिटी इंडेक्स (AQI) 400 पार हुआ और इसके साथ GRAP 3 लागू हुआ, जिसके बाद बच्चों की सेहत का ख्याल रखते हुए स्कूलों को हाइब्रिड मोड पर जाना होगा।

AQI 400 पार होने के बाद स्कूलों में अलर्ट

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार को घोषणा की कि राजधानी में प्रदूषण के मौजूदा स्तर को देखते हुए क्लास 5 तक के सभी स्कूल अस्थायी रूप से हाइब्रिड मोड में चलेंगे। इन क्लासों में ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों से पढ़ाई कराई जाएगी। दिल्ली के एजुकेशन डायरेक्टर वेदिता रेड्डी ने मंगलवार सुबह कमिशन फॉर एयर क्वॉलिटी इंडेक्स (CAQM) के आदेश का हवाला देते हुए सभी स्कूलों के नाम सर्कुलर जारी कर कहा है कि इसकी जानकारी पैरंट्स, स्टूडेंट्स को तुरंत दी जाए।

GRAP-3 इन चीज़ों पर रोक (401-450 AQI पर)

- निर्माण संबंधी गतिविधियों पर शर्तों के साथ रहेगी रोक
- दिल्ली के अलावा गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर में बीएस-4 डीजल और बीएस-3 पेट्रोल की गाड़ियों पर रोक, दिव्यांगों को छूट है
- दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर में 5वीं तक स्कूल हाइब्रिड मोड पर चलेंगे। एनसीआर के अन्य शहर भी इस बारे में विचार कर सकते हैं
- दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर में पब्लिक ऑफिस और मुनसिपल बॉडी के ऑफिस के टाइमिंग अलग-अलग होंगे
- एनसीआर के स्टोन क्रशर जोन बंद रहेंगे, एनसीआर में माइनिंग से जुड़ी गतिविधियां बंद रहेंगी

GRAP-4 क्या-क्या पाबंदियां (AQI 450 से अधिक पर)

- जरूरी सामानों को छोड़कर अन्य ट्रकों की दिल्ली में एंट्री पर प्रतिबंध
- लाइनर पब्लिक प्रोजेक्ट के निर्माण पर भी बैन
- दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर में पहली से छठीं और 11वीं कक्षाएं हाइब्रिड मोड पर
- सरकारी स्कूलों में 50 प्रतिशत कर्मियों को वर्क फ्रॉम होम

सिटिज़न चार्टर

- बच्चे, बुजुर्ग और सांस और दिल की बीमारी से जूझ रहे लोग घरों में रहें। बाहरी गतिविधि न करें।

इन कामों पर रहेगी रोक

- निर्माण गतिविधियों में बोरिंग, ड्रिलिंग, पाइलिंग, तोड़फोड़ पर रोक है। ओपन ट्रेंच सिस्टम से सीवर लाइन, वॉटर लाइन, ड्रेनेज, इलेक्ट्रिक केबल आदि पर रोक रहेगी।
- बडे. वेल्डिंग और गैस कटिंग ऑपरेशन के अलावा मिकैनिकल, इलेक्ट्रिकल और प्लंबिंग में होने वाले छोटे वेल्डिंग वर्क को किया जा सकता है।
- पेंटिंग, पॉलिशिंग और वेनिशिंग के कामों पर रोक है।
- सीमेंट, प्लास्टर और अन्य कोटिंग के कामों पर रोक, हालांकि छोटे इंडोर काम किए जा सकते हैं।
- कटिंग, ग्राइंडिंग, टाइल्स लगाने, स्टोन और फ्लोर के काम पर रोक है, छोटे इंडोर वर्क किए जा सकते हैं।
- सड़कों का निर्माण और बडे. रिपेयर वर्क पर रोक है।
- सीमेंट, फ्लाई एश, ईंट, सेंड, क्रस्ड स्टोन की लोडिंग अनलोडिंग सिर्फ प्रोजक्ट साइड के अंदर हो सकती है।

निर्माण के कौन से काम जारी रहेंगे

- रेलवे सर्विस और स्टेशन से जुडे. प्रोजेक्ट, मेट्रो सर्विस और स्टेशन से जुडे. प्रोजक्ट
- एयरपोर्ट और आईएसबीटी से जुडे. काम, नैशनल सिक्युरिटी, डिफेंस से जुड़ी गतिविधियां, राष्ट्रीय महत्व के प्रोजेक्ट, अस्पताल और हेल्थ केयर फेसिलिटी, लाइनर प्रोजेक्ट्स जैसे हाइवे, सड़कें, फ्लाईओवर, ओवरब्रिज, पावर ट्रांसमिशन, डिस्ट्रिब्यूशन, पाइपलाइंस, टेल कम्युनिकेशन सर्विस आदि, सफाई से जुडे. प्रोजक्ट जैसे एसटीपी, वॉटर सप्लाई के प्रोजेक्ट आदि के काम जारी रहेंगे।

निर्माण संबंधित पाबंदियों में न हों कन्फ्यूज

GRAP-3 आते ही लोगों में सबसे अधिक कन्फ्यूजन निर्माण और तोड़फोड़ संबंधित गतिविधियों को लेकर रहती है। यही वजह है कि सीएक्यूएम ने निर्माण को लेकर पूरी डीटेल बंदिशों की रोक जारी की है।

सिटिज़न चार्टर

- छोटी दूरी के लिए लोग पैदल जाएं या साइकल का इस्तेमाल करें
- स्वच्छ ईंधन पर यात्रा करें, पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करें और काम पर जाते समय राइड शेयर करें
- जो लोग वर्क फ्रॉम होम कर सकते हैं, वह इसी मोड पर काम करें
- गर्माहट के लिए कोयला या लकड़ी न जलाएं
- लोग अपने सिक्युरिटी गार्ड और अन्य स्टाफ को इलेक्ट्रिक हीटर दें

अपनी गाड़ियों की कर लें जांच

अब अपनी गाड़ियों को निकालने से पहले यह देख लें कि उस गाड़ी पर कहीं GRAP (ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान) के तहत रोक तो नहीं है। GRAP-3 में बीएस-4 डीजल और बीएस-3 पेट्रोल गाड़ियों पर रोक रहती है। अगर यह गाड़ियां सड़कों पर चलते पाई जाती हैं तो नियमों के तहत इन पर करीब 20 हजार रुपये का चालान होता है। यह रोक दिल्ली के अलावा गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर में है।

प्रदूषण संबंधित याचिका पर तत्काल सुनवाई से SC का इनकार

NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण से निपटने के लिए डब्ल्यूएचओ की वायु गुणवत्ता दिशानिर्देशों (WHO Air Quality Guidelines - AQG) को तत्काल चरण बद्ध तरीके से लागू करने की मांग करने वाली एक याचिका को तत्काल लिस्ट करने से इनकार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बीआर गवई की अगुवाई वाली बेंच में याची वकील ने बताया कि दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण से संबंधित चल रहे मामले में एक अंतरिम आवेदन दाखिल करने की मांग की गई थी, जिसमें डब्ल्यूएचओ के उपायों को तुरंत अपनाने और चरणबद्ध रूप से लागू करने का अनुरोध किया गया था। चीफ जस्टिस के ये आवेदन किसने दाखिल किया के सवाल पर वकील ने बताया कि आवेदक एक अधिवक्ता हैं, जिन्हें पर्यावरण कानून में विशेषज्ञ हैं। इस पर चीफ जस्टिस ने कहा कि हमारे सामने पहले से ही पर्यावरण कानून में पर्याप्त विशेषज्ञ वकील मौजूद हैं।

स्कूल हुए हाइब्रिड मगर ऑनलाइन पढ़ाना मुश्किल

Katyayani.Upreti@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली :** दिल्ली के सभी स्कूल 5वीं क्लास तक के लिए हाइब्रिड मोड में जरूर कर दिए गए हैं, मगर स्कूलों का मानना है कि ज्यादातर स्टूडेंट्स स्कूल आकर ही पढ़ाई करेंगे। कई स्कूलों का कहना है कि ज्यादातर पैरंट्स ऑनलाइन लर्निंग के पक्ष में नहीं हैं। वहीं, कई पैरंट्स का कहना है कि स्कूल फिजिकल क्लासों को ही तवज्जो देते हैं, ऐसे में मजबूरन बच्चों को स्कूल भेजना ही पड़ता है।

दिल्ली गवर्नमेंट स्कूल्स प्रिंसिपल्स और वाइस प्रिंसिपल्स एसोसिएशन के प्रेजिडेंट सुखबीर सिंह यादव कहते हैं, हमने हाइब्रिड मोड के ऑप्शन की जानकारी पैरंट्स को भिजवा दी है मगर पहले भी इसके लिए पैरंट्स से अच्छा रिस्पॉन्स नहीं मिला है। वहीं, आरटीएल पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल सुधा आचार्य कहती हैं, हाइब्रिड, ऑनलाइन मोड या छुट्टी हल है ही नहीं। वहीं, रामजस इंटरनैशनल स्कूल, आरकेपुरम की प्रिंसिपल ऋचा शर्मा कहती हैं, जो पैरंट्स ऑनलाइन क्लासें चाहते हैं, वो हमें जानकारी देंगे, जिसके बाद हम उन्हें ऑनलाइन क्लासों का शेड्यूल भेज देंगे। एवरग्रीन पब्लिक स्कूल, वसुंधरा एन्क्लेव की प्रिंसिपल प्रियंका गुलाटी कहती हैं, हमने करीब 10 दिन से आउडडोर एक्टिविटी बंद कर दी है। पटेल नगर में रहने वाले अश्विन कपूर कहते हैं बेटे को सांस की दिक्कत है, तो तबियत के हिसाब से ही फैसला लेंगे। आरकेपुरम में रहने वालीं सिद्धि जोशी कहती हैं, मेरी बेटी क्लास 4 में है, हम दोनों वर्किंग हैं, तो बच्चे को किस भरोसे छोड़ेंगे।

स्कूलों का कहना, ज्यादातर पैरंट्स भेजना चाहते हैं स्कूल

कूड़े की निगरानी के लिए अधिकारी रोज़ाना फील्ड में उतरें: CM

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

दिल्ली में सफाई व्यवस्था को लेकर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता असंतुष्ट नजर आईं। मंगलवार को उन्होंने इस पर एक विशेष बैठक बुलाई। सीएम ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे रोजाना कम से कम एक बार दफ्तर छोड़कर फील्ड में उतरें और कूड़े की निगरानी करें।

सीएम ने कहा कि सफाई के मामले में किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में दिल्ली के विभिन्न इलाकों में कूड़े के निपटान के लिए आधुनिक कम्पेक्टर लगाने और ग्रीन कचरे के प्रबंधन के लिए विशेष मशीनें स्थापित करने का निर्णय लिया गया। बैठक में शहरी विकास मंत्री अशीष सूद, मुख्य सचिव राजीव वर्मा, एमसीडी आयुक्त, डीडीए और पीडब्ल्यूडी के अधिकारी मौजूद रहे।

File

- रेखा गुप्ता ने दिल्ली की सफाई को लेकर बुलाई विशेष बैठक
- ग्रीन कूड़े के प्रोसेस के लिए सिस्टम बनाने के भी निर्देश दिए

सीएम रेखा गुप्ता ने बताया कि दिल्ली को स्वच्छ राजधानी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं। अधिक क्षमता वाले कूड़े के कम्पेक्टर लगाए जाएंगे, जिनके लिए डीडीए और डूसिब जमीन उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने कहा कि राजधानी में हरियाली अधिक होने के कारण ग्रीन कचरे की मात्रा भी काफी है। इस ग्रीन कूड़े के उपयोग के लिए आधुनिक मशीनें लगाई जाएंगी। साथ ही, उन्होंने पूरे शहर में टूटे हुए डस्टबिन बदलने का आदेश भी दिया।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि अधिकारी रोजाना अपने क्षेत्र की सड़कों, गलियों और बाजारों का निरीक्षण करें तथा सफाई की स्थिति का आकलन करें। उन्होंने विभागों को यह भी सलाह दी कि सफाई से पहले और बाद की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा करें, ताकि जनता में सफाई के प्रति जागरूकता और गंभीरता बढ़े।

सड़क निर्माण के लिए बने विशेष समिति

बैठक में शहरी विकास मंत्री अशीष सूद ने सड़कों की गुणवत्ता और डिजाइन का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि रोड कटिंग की समस्या दिल्ली के लिए बड़ी चुनौती बन चुकी है, इसलिए इसके लिए एक समग्र नीति बनाई जानी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि सड़क निर्माण प्रक्रिया में आर्किटेक्ट्स को भी शामिल किया जाए। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि सड़क निर्माण से जुड़े विभागों के अधिकारियों को लेकर एक विशेष समिति गठित की जाए।

हर सांस के साथ शरीर में पहुंच रहे प्लास्टिक के बारीक कण

Hemwati.Rajaura1@timesofindia.com

AI Image

■**नई दिल्ली :** दिल्ली की हवा में अब सिर्फ धूल और धुआं नहीं है, बल्कि उसमें बेहद बारीक प्लास्टिक के कण भी तैर रहे हैं, जिन्हें हम हर सांस के साथ फेफड़ों में खींच रहे हैं। नई स्टडी में खुलासा हुआ है कि दिल्ली के बाजारों और भीड़भाड़ वाली जगहों पर हवा में इनहेलेबल माइक्रोप्लास्टिक्स की मात्रा 14.18 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर (g/m) पाई गई है।

यह प्लास्टिक इतना सूक्ष्म है कि आंखों से दिखता नहीं, लेकिन हर सांस के साथ शरीर में पहुंचकर फेफड़ों में जमा होता रहता है। स्टडी के मुताबिक, हवा के एक क्यूबिक मीटर में औसतन 38 प्लास्टिक के कण मौजूद हैं। यह खतरा सर्दियों में और भी बढ़ जाता है, क्योंकि सर्दियों में हवा सतह के पास रुक जाती है। सिंथेटिक कपड़ों का उपयोग बढ़ जाता है और बाजारों में भीड़ और गाड़ियों की आवाजाही तेज रहती है। इसी कारण सर्दियों में माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण 14 से 71 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। यह खुलासा कोलकाता के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (IISER) और एम्स कल्याणी के वैज्ञानिकों ने किया है।

यह रिसर्च 2 नवंबर को अंतरराष्ट्रीय जर्नल एनवायरमेंटल इंटरनेशनल में प्रकाशित हुई। इसके प्रमुख लेखक अभिषेक बिस्वास और एसोसिएट प्रोफेसर गोपाल कृष्ण दर्भा हैं। भारत के चार बड़े शहरों दिल्ली, कोलकाता, चेन्नै और मुंबई के भीड़भाड़ वाले बाजार के इलाकों में सैंपल लिए। नतीजों के मुताबिक कोलकाता में माइक्रोप्लाटिक 14.23 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर मिला, जबकि दिल्ली की हवा में यह 14.18, चेन्नै में 4 और मुंबई में 2.65 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर माइक्रो प्लास्टिक मिला।

बैक्टीरिया और फंगस भी शरीर में जा रहे

वैज्ञानिकों ने यह भी पाया कि ये माइक्रोप्लास्टिक अकेले नहीं आते। यह अपने साथ जहरीले रसायन, डाई, कार्बन और यहां तक कि ऐसे बैक्टीरिया और फंगस भी लेकर चलते हैं, जिनमें एंटीबायोटिक रेसिस्टेंस जीन मौजूद होते हैं। इसका मतलब यह है कि ऐसे रोगाणुओं से शरीर को होने वाला संक्रमण सामान्य दवाओं से ठीक होना मुश्किल हो सकता है। विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि यह समस्या लंबे समय में फेफड़ों की सूजन, सांस संबंधी बीमारियों, हार्मोन गड़बड़ी और कुछ प्रकार के कैंसर तक के जोखिम को बढ़ा सकती है।

‘जीवन में परोपकार ही सबसे बड़ा धर्म’

■ NBT न्यूज, नई दिल्ली

स्पीकिंग ट्री धर्म कर्म

परम तपस्वी महासाध्वी श्रेष्ठाजी और चंदनाजी महाराज ठाणे-5 के सान्निध्य में भगवान महावीर सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल के कार्यालय श्री महावीर भवन, अशोक विहार में आयोजित धर्मसभा में मंगल पाठ का आयोजन किया गया।

साध्वी जी ने कहा कि परोपकार ही सबसे बड़ा धर्म है, जीवन में परोपकार का छोटा सा कार्य भी कल्याण का कारण बन जाता है। अस्पताल के अध्यक्ष सुभाष जैन ओसवाल ने बताया कि 500 करोड़ की लागत से 300 बेड का यह अस्पताल शीघ्र ही तैयार होने वाला है। मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ. नागेश जैन ने अस्पताल की जनकल्याणकारी गतिविधियों की जानकारी दी। पूर्व केंद्रीय मंत्री सत्यनारायण जटिया ने साध्वियों को विनयांजलि अर्पित की।

इस मौके पर संजय जैन, सुधीर जैन, प्रदुमन जैन, भूपेंद्र जैन और पदम पटवा आदि भी मौजूद रहे।

सत्संग: सिद्ध शक्तिपीठ बालाजी धाम मंदिर, त्रिनगर में मंगलवारीय यज्ञ अनुष्ठान के मौके पर महंत प्रमोद महाराज ने कहा कि साधना का एकमात्र उद्देश्य परमात्मा की प्राप्ति है। बस, हमारा सारा पुरुषार्थ उसी के लिए होना चाहिए।

वहीं सीनियर सिटीजंस काउंसिल आफ दिल्ली द्वारा डीयर पार्क हौजखास सत्संग में पंडित महेश मिश्र (भोपाल) ने कहा कि भगवान हम सबके हृदय में विराजमान हैं। बस उन्हे खोजने की जरूरत है। सत्संग 15 नवंबर तक चलेगा।

TIMES TRIBUTE
PAYING HOMAGE TO THE DEPARTED SOUL
To book your ad
Logon to: ads.timesofindia.com
or Call: 18001205474 (Toll Free)
Scan QR Code

REMEMBRANCE
SHARING MEMORIES

SH. S. K. GARG
5.10.1949 - 12.11.2005
You will always remain in our hearts and thoughts. He was a great source of inspiration, love and affection. Every moment is remembered by: Sushma Garg, Deepali & Amit Garg, Jayati & Vishal Garg, Sarthak & Aaina (Pari), Toasha Agencies, Toasha Vaccines Southend. +91-9999049360

TO BOOK AN OBITUARY AD PLEASE CONTACT
VINOD : 99589 92088
PANKAJ : 81306 04727
TO BOOK ONLINE LOG ON TO
Ads.timesofindia.com

"HONOUR. COURAGE. BRAVERY. Three words that you taught us. Three words that help us cope with your loss".

The silent joy of remembering a loved one.
The moments you shared together.
Little moments that make life beautiful.

Share them. With Friends. Relatives. Neighbours. Colleagues. With all those whose lives the departed Soul has touched. Because while life goes on, when you share memories, they stay on forever.

Publications	Total Outlay
The Times of India Delhi/NCR	5,600
TOI+NBT (Delhi/NCR)	8,800
TOI+ET (Delhi/NCR)	6,600

Maximum 10 lines

SPACE FOR PHOTO 2x3 cms
In loving memory of Sh. .... (dd/mm/yyyy-dd/mm/yyyy) You left us on this day 3 years ago but will always live on in our hearts. Deeply missed by .... and ....
Text here ... text here ... Text here ... text here ...
Text here ... text here ... Text here ... text here ...

REMEMBRANCE
SHARING MEMORIES
For any information call
Vinod : 9958992088
Pankaj : 8130604727

TIMES TRIBUTES
RATE CARD

Rates effective 5th June 2019

Publications	Rates per sq. cms
TOID Capital + NBT (Delhi+NCR)	1295
TOID Full Run ## + NBT (Delhi+NCR)	1360
THE TIMES OF INDIA (Delhi+NCR)	780
THE TIMES OF INDIA (Delhi) Full Run##	900
NAVBHARAT TIMES (Delhi+NCR)	595
THE ECONOMIC TIMES (Delhi+NCR)	715
SANDHYA TIMES (Delhi)	100

▶ *Placement on specified obit pages only. ▶ This rate benefit is extended up till the size of 320 sq. cm only. ▶ ## Full run includes Delhi City + NCR (Including Gurgaon + Noida) + Chandigarh + Western U.P. + Uttarakhand ▶ TOI Capital (Delhi & NCR) Includes TOI Gurgaon & TOI Noida.

To place an Obituary announcement or Remembrance message please call
Vinod: 9958992088
Pankaj : 8130604727

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 12-11-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH14 User: dilip.lal Time: 11-11-2025 21:46 Color:

> सैनिक तो आदेश का पालन करता है, लेकिन देश की सुरक्षा नागरिकों की भावना और राजनीतिक इच्छाशक्ति पर निर्भर करती है। – *जनरल सैम मानेकशॉ*

दोषियों को सज़ा मिले

दिल्ली में लाल किले के पास हुए धमाके को लेकर कई जानकारियां सामने आ रही हैं। हालांकि अभी तक सरकार ने इसकी पुष्टि नहीं की है कि यह आतंकी वारदात है, लेकिन संकेत ऐसे ही हैं। क्या यह देश को अस्थिर करने की कोई साजिश है? अगर यह साजिश है, तो NIA को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई गुनहगार न बचे। एजेंसी को मंगलवार को इस वारदात की जांच सौंपी गई।

पुलवामा का संदिग्ध । जानकारियों के मुताबिक, इस घटना का लिंक कथित तौर पर पुलवामा से जुड़ रहा है। गौर करने वाली बात है कि धमाके से पहले सुरक्षा एजेंसियों ने एक टेरर मॉड्यूल का खुलासा किया था, जिसकी शुरुआत जम्मू-कश्मीर से हुई थी और फिर हरियाणा और यूपी तक तार जुड़ते चले गए। अभी यही माना जा रहा है कि दिल्ली धमाकों का मुख्य संदिग्ध पुलवामा निवासी उमर मोहम्मद है। वह उसी कार को ड्राइव कर रहा था, जिसमें धमाका हुआ।

NIA के पास जांच

टेरर मॉड्यूल । सरकार इस मामले में बेहद सावधानी से आगे बढ़ रही है और राष्ट्रीय सुरक्षा व संवेदनशीलता को देखते हुए यह जरूरी भी है। सामान्य धारणा है कि आतंकी समूह कम पढ़े-लिखे और समाज से कटे युवाओं को निशाना बनाते हैं, क्योंकि उन्हें बरगलाना आसान होता है। लेकिन, टेरर मॉड्यूल में डॉक्टरों की गिरफ्तारी होना खतरनाक ट्रेंड है।

इंटेलिजेंस की नाकामी । अभी दिल्ली ब्लास्ट और पहले की हुई गिरफ्तारियों में कोई सीधा संबंध मिलना बाकी है, लेकिन इससे इंटेलिजेंस पर सवाल तो खड़े ही होते हैं। जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े लोग राजधानी के पास रहकर साजिश रचते रहे, 2900 किलो विस्फोटक जमा कर लिया और भनक तक नहीं लगी! अगर इस खुलासे में और देर हो जाती, तो क्या पता देश एक बड़ी त्रासदी से गुजर रहा होता।

सतर्कता जरूरी । दिल्ली में आखिरी बड़ा आतंकी हमला सितंबर 2011 में हुआ था, जब हाई कोर्ट के बाहर हुए बम विस्फोट में 11 मौतें हुई थीं और बड़ी संख्या में लोग घायल हुए थे। इसके बाद छिटपुट घटनाएं हुईं, पर जान का नुकसान नहीं हुआ। वहीं, जम्मू-कश्मीर को छोड़कर देश के बाकी हिस्सों में भी आतंकी गतिविधियों में कमी आई है। Global Terrorism Index भी बताता है कि भारत में हालात बेहतर हुए हैं, जबकि आतंकी गतिविधियों में पड़ोसी पाकिस्तान दुनिया में दूसरे नंबर पर है। लेकिन, यह शांति तभी बनी रह सकती है, जब एजेंसियां लगातार अलर्ट मोड में रहें। आतंकवाद को फिर से पनपने का मौका नहीं देना चाहिए। साथ ही, खुफिया तंत्र को भी इस तरह से काम करना चाहिए कि ऐसे अपराध न हो सकें।

नाभि में तीर

टेंशन में EVM

एक बार फिर EVM टेंशन में दिखाई दे रही है। ज्यों-ज्यों बिहार के चुनाव परिणाम का दिन नजदीक आ रहा है, उसकी टेंशन बढ़ती जा रही है। 14 नवंबर के दिन सुबह से ही गिनती शुरू हो जाएगी। गिनती शुरू होने के कुछ ही समय के बाद रुझान आने शुरू हो जाएंगे। हार-जीत का रोचक खेल सांप-सीढ़ी की शक्ल ले लेगा। सुनिश्चित मानी जाने वाली जीत कई जगह हार में बदल जाएगी। हारते-हारते भी जीत गए उम्मीदवार का जश्न देखने लायक होगा। जीतते-जीतते भी धराशाई हो गए कैंडिडेट का दुख देखा नहीं जाएगा। कोई एक झटके में जीरो से हीरो बन जाएगा, तो कोई अर्श से फर्श पर गिरेगा-धड़ाम। किसी की लाइफ बन जाएगी, तो कोई बर्बाद हो जाएगा।

हरि मृदुल

लेकिन ऐसा तो जमाने से होता आया है। यह कोई नई बात नहीं। चुनावों में हार-जीत लगी रहती है। कई लोग तो सिर्फ हारने के लिए ही चुनाव लड़ते हैं और ले-देकर अपना इहलोक सुधारते हैं। फिर क्यों EVM के माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा जा रही हैं। कनपटी का पसीना पोंछते-पोंछते भी छलका जा रहा है। चुनाव परिणाम जो भी हो, उससे EVM को क्या मतलब। वह तो पूरी तरह निरपेक्ष है। न कोई अपना, न कोई पराया। कोउ नृप होय उसे का हानी। जैसा बटन दबेगा, वैसा ही परिणाम मिलेगा। किसी की हार में उसका क्या दोष। लेकिन इधर देखा गया है कि हारने वाली पार्टी या उम्मीदवार उसके सिर पर ही ठीकरा फोड़ते हैं - 'EVM से हुई छेड़छाड़!' यह ठीकरा इतनी जोरों से फोड़ा जाता है कि सिर लहूलुहान हो जाता है। कई बार से ऐसा हो रहा है। इस बार भी हो सकता है। इसी बात की टेंशन है EVM को।

लेकिन यह सवाल तो बनता ही है कि क्या सचमुच छेड़छाड़ की जाती है? दबी जुबान स्वीकार करती है EVM कि मौका मिलने पर बड़े-बड़े चरित्रवान चौका लगाने से नहीं चूकते, तो यहां कैसे चूक सकते हैं! परंतु लोकतंत्र के पहरुओं की सतर्कता कम नहीं, सो मनचले हाथ मलते रह जाते हैं। EVM ने इशारों ही इशारों में यह जानकारी भी दी।

एकदा

संकलन : **उमा**

तुकाराम की भक्ति

17वीं सदी में महाराष्ट्र में एक महान संत हुए, तुकाराम। एक बार वह तीर्थयात्रा पर गए थे। इस बीच उनके घर की दुकान लूट ली गई। पत्नी जीजाबाई ने उन्हें कुछ गहने दिए और कहा कि इन्हें गिरवी रखकर दुकान फिर से शुरू करें। लेकिन रास्ते में भजन गाते-मांगते कुछ भिक्षुओं को देखकर उनका हृदय पिघल गया। उन्होंने सारा धन दान कर दिया और खाली हाथ लौट आए। जीजाबाई ने घर की हालत देखकर स्वयं मजदूरी शुरू की। एक दिन तुकाराम ने पूछा, 'कहां जा रही हो?' उन्होंने उत्तर दिया, 'घर चलाने के लिए काम तो करना पड़ेगा।' यह सुनकर तुकाराम ने भी काम करने का निश्चय किया। एक गांव में उन्हें खेत की रखवाली का काम मिल गया। लेकिन उनकी भक्ति ऐसी थी कि वह पक्षियों और जानवरों को भगाने के बजाय उन्हें भगवान विट्ठल का रूप समझकर पूजने लगे। दो महीने बाद खेत उजड़ गया। किसान ने गुस्से में हर्जाना मांगा और शिवाजी महाराज से शिकायत करने की बात कही। तुकाराम ने क्षमा मांगी और कहा कि राजा शिवाजी से शिकायत न करें, क्योंकि वह उनके शिष्य हैं। किसान यह सुनकर दंग रह गया।

Subrata Dhar

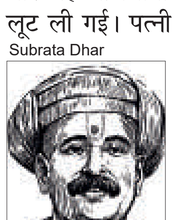

ट्रंप के ऊटपटांग बयानों के बावजूद भारत-अमेरिका के संबंध पटरी पर

ये रिश्ता क्या कहलाता है

भारत और अमेरिका के रिश्तों का सबसे मजबूत स्तंभ है रक्षा साझेदारी। पिछले दो दशकों में हुई हथियारों की खरीद, तकनीकी हस्तांतरण और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ते तालमेल से यह बात साबित होती है।

हर्ष वी. पंत

ट्रंप फैक्टर । इसके बावजूद अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में एक के बाद एक कई ऐसी घटनाएं हुईं, जिनसे आपसी संबंधों में प्रॉग्रेस और परसेप्शन के बीच दूरी कम होने के बजाय बढ़ गई। हालांकि आपसी रिश्तों में आशा जगाने वाली प्रगति जारी थी। फिर भी ट्रंप की खास नाटकीयता के कारण सोच बनी कि दोनों देशों के बीच सबकुछ ठीक नहीं है। इस सोच और सचाई में इसी फर्क को दिखाने वाला ताजा उदाहरण है रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके अमेरिकी समकक्ष पीट हेगसेथ के बीच 31 अक्टूबर को हुआ डिफेंस फ्रेमवर्क एग्रीमेंट।

समझौते की अहमियत । नए डिफेंस फ्रेमवर्क एग्रीमेंट को बेहद अहम माना जा रहा है। इसकी कम से कम चार बड़ी वजहें हैं। पहली, यह समझौता ऐसे समय हुआ है जब ट्रंप ने भारत पर सबसे ज्यादा टैरिफ लाद रखे हैं। दूसरी बात यह है कि भारत-अमेरिका रिश्तों में रक्षा और व्यापार का चोली-दामन जैसा साथ रहा है। ऐसे में यह दीर्घकालिक रक्षा समझौता काफी हद तक आश्वस्त कर देता है कि व्यापार समझौते को लेकर चल रही बातचीत भी देर-सबेर पटरी पर आ ही जाएगी।

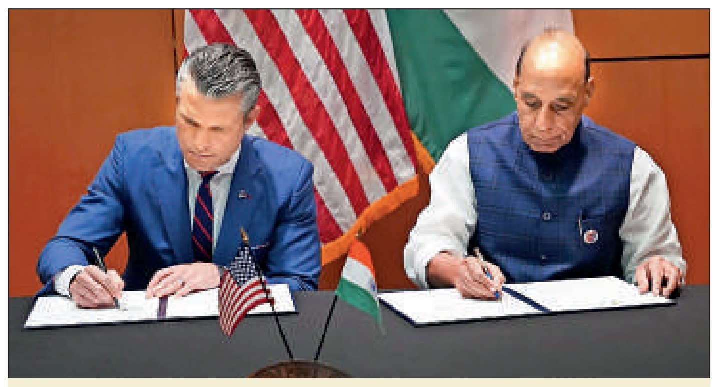

नया डिफेंस फ्रेमवर्क एग्रीमेंट > 1995 से ही हो रहा है फ्रेमवर्क एग्रीमेंट | हर दस साल पर होता है रीन्यू | अब बनेगा 2035 तक का रोडमैप

पुराना सिलसिला । एक और बात यह है कि फ्रेमवर्क एग्रीमेंट न केवल भारत को अहम रक्षा उपकरणों की तेजी से सप्लाई सुनिश्चित कर सकता है बल्कि तकनीकी सहयोग और उसके हस्तांतरण की भी राह आसान बना सकता है। आखिर में, सबसे बड़ी वजह यह है कि दशकों से दोनों देशों के बीच जो डिफेंस पार्टनरशिप थी, इस एग्रीमेंट से वह रीन्यू हो गई है। डिफेंस पार्टनरशिप 1995 में शुरू हुई। इसे 2005 में तत्कालीन रक्षा मंत्री प्रणव मुखर्जी और उनके अमेरिकी समकक्ष डॉनल्ड रम्सफेल्ड ने बढ़ाया, जब भारत-अमेरिका रक्षा संबंधों के नए फ्रेमवर्क पर हस्ताक्षर हुए। जून 2015 में तत्कालीन भारतीय रक्षा मंत्री मनोहर पार्रिकर और अमेरिकी रक्षा मंत्री ऐश कार्टर ने नए डिफेंस फ्रेमवर्क एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए थे।

सामरिक नजरिया । भारत-अमेरिका रक्षा और सुरक्षा रिश्तों के लिहाज से 2025 फ्रेमवर्क से एक नया रोडमैप तैयार होगा। वह भी ऐसे वक्त में, जब तकनीक ही नहीं युद्ध का स्वरूप भी तेजी से बदल रहा है। इस समझौते को खास तौर पर क्षेत्रीय स्थिरता, प्रतिरोध, तकनीकी सहयोग और सूचनाओं के लेन-देन के लिहाज से खास माना जा रहा है। डिफेंस क्षेत्र में फायदों के अलावा यह समझौता हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता को लेकर दीर्घकालिक सामरिक नजरिया अपनाता है। इसमें मुक्त, खुले और नियम आधारित हिंद-प्रशांत पर जोर दिया गया है। इससे ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में क्षेत्रीय सुरक्षा को लेकर घटते भरोसे को इससे थोड़ी मजबूती मिलती है।

क्वॉड समझदारी पर खतरा । फिर भी, हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा को लेकर अमेरिका की घोषित प्रतिबद्धता और चीन के साथ आर्थिक समझौते पर पहुंचने की उसकी बेकरारी में विरोधाभास दिखता है। आसियान शिखर बैठक के दौरान हाल में हुए अमेरिका-चीन आर्थिक समझौते ने अमेरिकी कंपनियों को राहत भले पहुंचाई हो, इसने क्वॉड फ्रेमवर्क के तहत भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे क्षेत्रीय साझेदारों द्वारा बनाए गए तालमेल के लिए चिंता भी बढ़ाई है।

बायर-सेलर मॉडल । ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के दौरान निवेश बढ़ाने के लिए डाले जा रहे राजनीतिक और कूटनीतिक दबावों को देखते हुए खतरा यह भी है कि भारत-अमेरिका रिश्तों का स्वरूप बायर-सेलर मॉडल में ढलने न लग जाए। यह ऐसा मॉडल है, जिससे आगे बढ़ने का फैसला दोनों पक्ष 2015 के समझौते में ही कर चुके हैं। सच पूछें तो दोनों ही देशों को नए दशकीय समझौते को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ना चाहिए। दोनों यह भी सुनिश्चित करें कि यह साझेदारी साझा नवाचार, आपसी भरोसे और रणनीतिक गहराई से ताकत पाती रहे।

आगे की यात्रा । 2035 में एग्रीमेंट फिर से रीन्यू होना चाहिए। वहां तक की यात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि दोनों ही पक्ष इस रास्ते पर चलते हुए कितना सहयोग, सामंजस्य और समन्वय बनाए रख पाते हैं। सुरक्षा और रक्षा संबंधों का नया अध्याय भी इसी से तय होगा।

(लेखक इंग्लैंड के किंग्स कॉलेज में प्रफेसर हैं)

भारत की आत्मा का ध्रुवतारा है पूर्वोत्तर

पूर्वोत्तर भारत मेरे लिए केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं बल्कि एक जीवंत अनुभूति है, भारत की आत्मा का वह कोना है जहां संस्कृति, संवेदना और संकल्प साथ-साथ सांस लेते हैं।

ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया

जीवित जड़ों का पुल । असम और मेघालय की मेरी हालिया यात्राओं ने यह अनुभव कराया कि पूर्वोत्तर केवल भौगोलिक विस्तार नहीं, बल्कि भारत की जीवंत आत्मा का प्रतिबिंब है। मेघालय के रंगथ्यलियांग में जीवित जड़ों के पुल पर चलना मेरे लिए समय और प्रकृति के बीच संवाद जैसा था। मैंने जिस पुल को पार किया, वह लगभग 175 फीट लंबा और 6 फीट चौड़ा था और पूरी तरह से प्राचीन रबर के पेड़ों की जड़ों से बुना हुआ।

पृथ्वी की आत्मा । इसी तरह जब मैं 4200 वर्ष पुरानी मेघालयन एज की मावमलूह गुफा में पहुंचा तो लगभग तीन किलोमीटर की यात्रा ने मुझे गहन मौन और शांति का अनुभव कराया। 4,503 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह गुफा पृथ्वी की आत्मा का साक्षात्कार कराती है। 18 वर्ष की आयु से गुफाओं में जा रहे हमारे गाइड बॉब रायन की आयु आज 81 वर्ष हो चुकी है और उनके अनुभव ने यह सिखाया कि ज्ञान और जीवन का संतुलन उम्र नहीं देखता है।

दो मित्रों का सपना । पूर्वोत्तर की मोहक और आश्चर्यचकित करने वाली प्रकृति को निहारते हुए मैं सोहरा (चेरापूंजी) पहुंचा, जहां पीएम-डिवाइन के अंतर्गत 233 करोड़ की इंटीग्रेटेड टूरिज्म सर्किट परियोजना का शिलान्यास करते समय मेरे मन में विचार था कि विकास का अर्थ केवल निर्माण नहीं, बल्कि संरक्षण और संवर्धन भी है। यह सपना मैंने और मेरे मित्र, मुख्यमंत्री कॉनराड संगमा ने मिलकर देखा और इसे हकीकत में बदलने के लिए साथ मिलकर इसे संवारा है।

कॉमन रूम

केवल उपमा नहीं । प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पूर्वोत्तर विकास मंत्रालय एक्ट ईस्ट, एक्ट फास्ट और एक्ट फर्स्ट को ध्येय वाक्य मानकर भारत के उत्तरपूर्वी क्षेत्र में लगातार विकास, रोजगार, पर्यटन और ट्रेड के नए आयाम स्थापित कर रहा है। पूर्वोत्तर की संस्कृति इसकी सबसे बड़ी ताकत है। प्रधानमंत्री पूर्वोत्तर को 'अष्टलक्ष्मी' कहते हैं, तो यह केवल उपमा नहीं, बल्कि आठ राज्यों का सम्मान है, जो भारत की प्रगति के आठ दीप हैं।

भविष्य का ध्रुवतारा । पूर्वोत्तर भविष्य का ध्रुवतारा है। जब अरुणाचल में पहली सूर्योदय की किरण उगती है, वह पूरे देश को आलोकित करती है। जब नगालैंड की ठंडी हवा चलती है, या मेघालय में एबोड ऑफ क्लाउड्स का अनुभव होता है, तो ऐसा लगता है जैसे स्वर्ग में कदम रखा हो। यही अनुभव हमें याद दिलाता है कि यहां का हर प्रयास, हर सपना और हर उपलब्धि हमें याद दिलाती है कि भारत का उज्ज्वल भविष्य इसी क्षेत्र के ध्रुवतारे में चमक रहा है।

(लेखक पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मामलों के केंद्रीय मंत्री हैं)

कांटे की बात

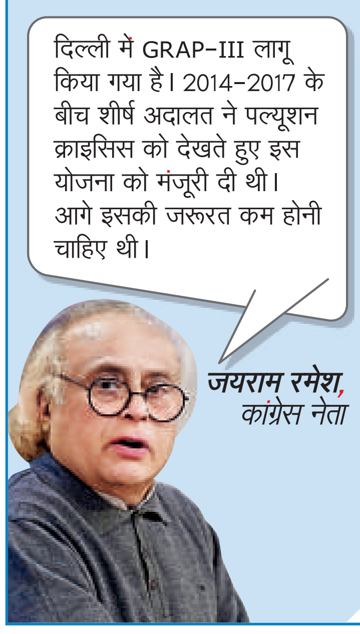

जयराम रमेश, कांग्रेस नेता

छोटी सोच, बड़ा फ़र्क़

शराब और सोना नहीं, फिर बढ़ेगी परंपरा की चमक

भारत में शादियां बेहद खर्चीली होती हैं। उत्तराखंड के कुछ गांवों ने तय किया है कि शादी-मुंडन समारोह में महिलाएं केवल तीन गोल्ड जूलरी पहनेंगी और शराब को कोई हाथ भी नहीं लगाएगा।

AI Image

जुर्माना और सामाजिक बहिष्कार

चकराता और उत्तरकाशी जिले के डुंडा ब्लॉक के गांवों ने यह फैसला लिया है। पंचायत ने नियम बना दिया है कि आदेश का उल्लंघन करने वालों पर 50 हजार जुर्माना लगाया जाएगा और उनका सामाजिक बहिष्कार भी होगा। खर्च बचाने के अलावा इस कदम का मकसद दिखावा बंद करना, समानता की भावना लाना और परंपरा की ओर लौटना है। स्थानीय लोगों का कहना है कि शराब को ही एंजॉयमेंट समझने की सोच बदलनी होगी।

सेहत और जेब का घाटा

दुनिया के टॉप देशों के मुकाबले भारत में प्रति व्यक्ति शराब की खपत कम है - करीब 5 लीटर प्रति वर्ष। उत्तराखंड की बात करें तो नैशनल फैमिली हेल्थ सर्वे 2021 के मुताबिक, राज्य के लगभग 32% पुरुष शराब पीते हैं। गोल्ड पर आएं, तो मसला यह है कि दाम बढ़ने के बावजूद आयात बिल लगातार बढ़ रहा है। पिछले साल भारत ने 802.8 टन सोना बाहर से खरीदा था।

छोटे दल तय कर सकते हैं अगली सरकार

हेमंत राजौरा

बिहार में सत्ता की चाबी अक्सर उन दलों के पास चली जाती है, जिनकी विधानसभा में सीटें भले कम हों, लेकिन उनके पास ठोस सामाजिक आधार और स्थानीय प्रभाव होता है। इस चुनाव में यह तस्वीर एऔर स्पष्ट होती दिख रही है। NDA और महागठबंधन के अलावा कई छोटे दल भी जमीन पर सक्रिय हैं और उन्हें भरोसा है कि इस बार सरकार बनाने की कुंजी उनके हाथों में होगी।

वोट प्रतिशत बताता है प्रभाव

2020 के विधानसभा चुनाव में NDA ने 125 सीटें जीती थीं, जबकि महागठबंधन को 110 सीटें मिली थीं। परिणाम करीबी था और यहीं छोटे दलों की अहमियत उभरकर सामने आई। NDA की जीत में मुकेश सहनी की VIP और जीतन राम मांझी की हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा की भूमिका निर्णायक रही थी। दोनों दलों के चार-चार विधायक जीते थे। इसी तरह महागठबंधन में वाम दलों की हिस्सेदारी प्रभावशाली रही थी। सीपीआई-एमएल ने 12 सीटों पर जीत दर्ज की थी, जबकि CPI और CPM को दो-दो सीटें मिली थीं।

छोटे दलों का महत्व सिर्फ सीटों से नहीं, बल्कि वोटों के बंटवारे से भी समझा जा सकता है। 2020 में RJD को 23.5%, BJP को 19.8%, कांग्रेस को 9.4% और वाम दलों को 4.7% वोट मिले थे। यह कुल मिलाकर करीब 57% होता है। शेष 43% वोट NDA और महागठबंधन के अन्य सहयोगी दलों, अलग चुनाव लड़ रहे छोटे दलों व निर्दलीयों के खाते में गए थे।

विशुद्ध राजनीति

कसौटी

इस चुनाव में छोटे दलों का दायरा और क्षमता, दोनों बढ़े हैं। NDA में चिराग पासवान की LJP (R) वापसी कर चुकी है। पिछली बार LJP (R) ने अलग राह अपनाकर 134 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे। भले उसे तब जीत कम सीटों पर मिली, लेकिन उसने JDU को बड़ा नुकसान पहुंचाया था। पार्टी को NDA ने 29 सीटें दी हैं। इसी तरह उपेंद्र कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक मोर्चा को 6 सीटें मिली हैं।

महागठबंधन की ओर देखें तो मुकेश सहनी ने पाला बदल लिया है और उनकी पार्टी को 15 सीटें दी गई हैं। वाम दलों की सीटें भी इस बार बढ़ी हैं। गठबंधन के भीतर इस बंटवारे का असर बड़े दलों पर दिख रहा है। NDA में BJP पिछली बार के मुकाबले 9 कम सीटों पर चुनाव लड़ रही है, जबकि JDU 14 कम सीटों पर। महागठबंधन में कांग्रेस की 9 सीटें और RJD की एक सीट कम हुई है।

इस चुनाव में प्रशांत किशोर की जन सुराज पहली बार मजबूत तरीके से मैदान में है। PK ने गांव-गांव पैदल यात्राएं की हैं और युवा व ग्रामीण वोटों में पैठ बनाने की कोशिश की है। दूसरी तरफ आम आदमी पार्टी भी बिहार में अपनी राजनीतिक जमीन तलाश रही है। हालांकि उसका प्रभाव इतना नहीं दिखता कि चुनावी नतीजे पर असर डाले। सीमांचल में ओवैसी की AIMIM पहले ही असर दिखा चुकी है। 2020 में उन्होंने पांच सीटें जीती थीं।

निर्णायक भूमिका में भी

बिहार की राजनीति जातियों के सामाजिक संतुलन पर आधारित है। VIP का निषाद समुदाय पर प्रभाव, HAM का दलित-महादलित समूहों में आधार, LJP (R) का पासवान मतदाताओं पर असर, RLM का पिछड़ों में नेटवर्क और सीपीआई-एमएल पर ग्रामीण मजदूर तबकों का विश्वास - यही जीत की निर्णायक कुंजी है। यह चुनाव बताता है कि छोटे दल अब केवल गठबंधन की शोभा नहीं, निर्णायक भूमिका में हैं। अगर परिणाम बराबरी का रहा तो सत्ता का ताला उन्हीं की चाबी से खुलेगा।

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

www.speakingtree.nbt.in

भीतर की शांति से शुरू होती है युद्ध से बुद्ध तक की यात्रा

सुरक्षित गोस्वामी

जब से मानव सभ्यता पृथ्वी पर आई है, तब से लेकर आज तक ऐसा कोई युग नहीं हुआ जब मनुष्य आपस में न लड़ा हो। कभी यह संघर्ष व्यक्तिगत स्तर पर होता है, और कभी व्यापक स्तर पर, जिसे हम 'युद्ध' के नाम से जानते हैं। रामायण काल, महाभारत काल और उससे भी पहले से युद्ध मानव इतिहास से जुड़ा हुआ है। आज भी जब हम चारों ओर देखते हैं, तो अनेक देश, समाज और समुदाय किसी न किसी रूप में युद्ध की तैयारी या इच्छा में लगे हैं। मानो हिंसा मनुष्य के स्वभाव का ही एक गहरा अंग बन चुकी हो।

वास्तव में युद्ध केवल सीमाओं पर लड़ा जाने वाला संघर्ष भर नहीं, यह तो हर मन, हर घर और हर संबंध में भी बना रहता है। कभी यह युद्ध गहरी चुप में रहता है, तो कभी आक्रामक होकर बाहर प्रकट हो जाता है। जब तक मनुष्य का मन हिंसा की दिशा में गति करता रहेगा, वह 'बुद्ध' नहीं बन सकता। बुद्धत्व की प्राप्ति तभी संभव है, जब व्यक्ति अपने भीतर के युद्ध को समाप्त कर दे। शांति बाहर से नहीं बल्कि भीतर से आती है। जब मनुष्य अपने मन में मौन, एकांत और ध्यान का भाव जगाता है, तभी वह चारों दिशाओं में व्याप्त शांति का अनुभव कर सकता है।

AI Image

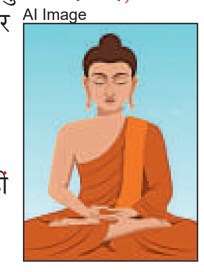

बाहरी युद्धों को समाप्त कर देना ही शांति की स्थापना नहीं है। हमारे भीतर जो क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष की आग सुलगती रहती है, वही बाहरी युद्धों का कारण बनती है। जब तक मनुष्य इन भावनाओं पर विजय नहीं पाएगा, तब तक दुनिया में शांति की कल्पना अधूरी ही रहेगी।

महर्षि पतंजलि ने चित्त की प्रसन्नता बनाए रखने के लिए उपेक्षा का उपाय बताया है, यानी जो व्यक्ति या विषय आपके मन की शांति को भंग करे, उससे दूरी बना लेनी चाहिए। यही आंतरिक शांति की पहली सीढ़ी है। हमारे ऋषि-मुनियों ने 'शांतिपाठ' की रचना की, ताकि हर व्यक्ति शांति का अनुभव करे और उसका विस्तार संसार में करे। जब प्रत्येक मनुष्य अपने भीतर के युद्ध को शांत कर देगा, तब बाहरी युद्ध भी स्वयं समाप्त हो जाएंगे।

Poli-tickle

R PRASAD

जब वोटर्स अपने काम पर लौट जाएंगे और मीडिया वाले वापस दिल्ली तो डिवेलपमेंटल जर्नलिस्ट के साथ मैं अकेला रह जाऊंगा

रीडर्स मेल

www.edit.nbt.in

एकजुटता जरूरी

11 नवंबर का संपादकीय 'भरोसा बनाए रखें' पढ़ा। लाल किले के पास हुए धमाके ने सोचने पर मजबूर किया है कि दिल्ली सुरक्षा के लिहाज से कितनी संवेदनशील है। यह घटना बताती है कि आतंकी ताकतें किसी न किसी रूप में हमेशा सक्रिय रहती हैं। लिहाजा हमें हमेशा सजग रहने की जरूरत है। संपादकीय में संयम बरतने और सुरक्षा एजेंसियों पर भरोसा बनाए रखने की जो बात कही गई है, वह भी बिलकुल उचित है। हालांकि कुछ आंकड़े बताते हैं कि आतंकी गतिविधियों में कमी आई है, पर खतरा पूरी तरह टला नहीं है। एकजुट रहकर ही हम ऐसे नापाक इरादों को कुचल सकते हैं।

धर्मेंद्र सिंह, ईमेल से

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

आर.एन.आई. नं. 510/57 © सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्सः 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु.; रविवार : नेपाली 6 रु.
संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

जान गंवाने वाले परिजनों को 10 लाख मुआवजा देगी दिल्ली सरकार

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): लालकिला के पास हुए विस्फोट से प्रभावित परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मृतकों के परिवारों और घायलों के लिए मुआवजे की घोषणा की है। मुख्यमंत्री ने विस्फोट में मारे गए प्रत्येक व्यक्ति के परिजन को 10 लाख रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि घायलों को समुचित उपचार और वित्तीय सहायता शीघ्र उपलब्ध कराई जाए, ताकि कोई भी पीड़ित व्यक्ति इलाज के अभाव में पीड़ा न सहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि विस्फोट में स्थायी रूप से अशक्त हुए पीड़ित को 5 लाख रुपए का मुआवजा दिया जाएगा। इसके अलावा गंभीर रूप से घायल व्यक्ति

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता

को 2 लाख रुपये और साधारण घायल हुए व्यक्ति को 20 हजार रुपये की सहायता दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह हादसा बेहद दुखद और हृदयविदारक है। मुख्यमंत्री के अनुसार किसी भी व्यक्ति का यूं असमय चले जाना परिवार के लिए अपूर्णीय क्षति है, जिसे कोई भी भर

स्थायी रूप से अशक्त पीड़ित को 5 लाख, गंभीर रूप से घायलों को 2 लाख, मामूली रूप से घायलों को 20 हजार रुपए देगी सहायता

नहीं सकता। दिल्ली सरकार इस कठिन घड़ी में हर पीड़ित परिवार के साथ मजबूती से खड़ी है। रेखा गुप्ता ने कहा कि यह हादसा न केवल प्रभावित परिवारों के लिए, बल्कि पूरी दिल्ली के लिए एक गहरा आघात है। उन्होंने कहा कि हम सभी दिल्लीवासी इस दुख की घड़ी में एकजुट हैं। सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि किसी भी परिवार को अकेला महसूस न हो। मुख्यमंत्री के अनुसार संबंधित विभाग को निर्देश दिया है कि राहत वितरण की प्रक्रिया को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाए।

मणिपुर में महिला समेत तीन उग्रवादी गिरफ्तार

इंफाल, (भाषा): मणिपुर के अलग-अलग जिलों से विभिन्न प्रतिबंधित संगठनों से जुड़ी एक महिला समेत तीन उग्रवादियों को जनता से वसूली करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। सुरक्षा बलों ने रविवार को काकचिंग जिले के लामजाओ माखा लेइकाई से प्रतिबंधित यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट (के) संगठन के एक सक्रिय कैडर को गिरफ्तार किया। उसकी पहचान 40 वर्षीय निंगथौजम इनाओचा के रूप में हुई है। उसके पास से एक .32 पिस्तौल, मैगजीन और तीन कारतूस तथा 41,200 रुपये नकद बरामद किए गए हैं। पुलिस ने रविवार को इंफाल पश्चिम जिले के खुम्बोंग बाज़ार से प्रतिबंधित कांगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी (पीपुल्स वार ग्रुप) की एक सक्रिय महिला कार्यकर्ता को भी गिरफ्तार किया।

अहमदाबाद इन्वेस्टर कनेक्ट में छत्तीसगढ़ को मिले 33321 करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव

अहमदाबाद, रायपुर, आशीष शर्मा (पंजाब केसरी): अहमदाबाद में चल रहे इन्वेस्टर कनेक्ट में छत्तीसगढ़ को निवेश के बड़े प्रस्ताव मिल रहे हैं। छत्तीसगढ़ को अब तक लगभग 33321 करोड़ से ज्यादा के निवेश के प्रस्ताव मिल चुके हैं. इनमें ही 14900 से अधिक लोगों को रोजगार का रास्ता भी खुल गया है।

गुजरात और छत्तीसगढ़ मिलकर अब विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इन्वेस्टर कनेक्ट में यह दावे किए। मुख्यमंत्री ने थर्मल पावर प्लांट, ग्रीन स्टील मैन्युफैक्चरिंग, सोलर सेल, फार्मास्यूटिकल उत्पाद और मेडिकल फूड सप्लीमेंट जैसे क्षेत्रों की बड़ी कंपनियां को निवेश प्रस्ताव

पत्र सौंपा हैं। इनमें छत्तीसगढ़ को अब तक मिले निवेश के प्रस्ताव से 14000 से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलना तय हो गया है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अहमदाबाद में आयोजित इन्वेस्टर कनेक्ट मीट में देश के टॉप उद्योगपतियों और बिजनेस लीडर्स से राज्य में निवेश की संभावनाओं पर मंथन किया। इस दौरान उन्होंने उद्योग, निवेश और नवाचार की धरती गुजरात में आकर बेहद उत्साहित होने की बात कही है। मुख्यमंत्री ने लगातार दोहराया कि छत्तीसगढ़ और गुजरात मिलकर विकसित भारत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहे हैं। इस तरह से गुजरात ने देश और दुनिया की अर्थव्यवस्था को गति दी है। इसी तरह छत्तीसगढ़ भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। इन्वेस्टर कनेक्ट मीट में देश की प्रतिष्ठित वाडीलाल समूह ने भी खाद्य प्रसंस्करण उद्योग लगाने में रुचि दिखाई है। इसके आलावा वेलस्पन समूह और अहमदाबाद टेक्सटाइल ऐसोसिएशन ने भी कपड़ा उद्योग में निवेश को लेकर अपनी दिलचस्पी दिखाई है।

- मुख्यमंत्री विष्णु देव से मिलकर बड़े उद्योग समूहों ने दिखाई दिलचस्पी, 14900 से ज्यादा रोजगार का रास्ता खुला

अल-फलाह यूनिवर्सिटी पर छापा, 13 हिरासत में, 4 जमातियों की व्हाट्सएप चैट डिलीट मिली

फरीदाबाद, महावीर गोयल (पंजाब केसरी): दिल्ली में हुए भीषण कार ब्लास्ट और फरीदाबाद के धौज एवं फतेहपुर तगा स्थित किराए के घरों से भारी मात्रा में विस्फोटक (2900 किलोग्राम तक) बरामद होने के बाद जांच एजेंसियों ने मंगलवार को फरीदाबाद की अल-फलाह यूनिवर्सिटी पर बड़ी कार्रवाई की। पुलिस सूत्रों के अनुसार, यूनिवर्सिटी कैंपस से 13 लोगों को हिरासत में लिया गया है, जिनमें 7 डॉक्टर, 5 स्टूडेंट और एक युवती शामिल है। यह युवती मुख्य आरोपी डॉ. मुजम्मिल शकील की कार का इस्तेमाल करती थी। विस्फोटक मामले के मुख्य आरोपी डॉ. मुजम्मिल शकील के

दिल्ली धमाके के बाद पुलिस का सर्च अभियान तेज

फतेहपुर तगा और धौज स्थित ठिकानों की जांच के बाद, पुलिस की टीमें यूनिवर्सिटी परिसर पहुँची। सूत्रों के मुताबिक, हिरासत में लिए गए 13 लोगों में 7 डॉक्टर, 5 छात्र और एक महिला शामिल है, जिसका सीधा कनेक्शन डॉ. मुजम्मिल से बताया जा रहा है क्योंकि वह उसकी कार चलाती थी। इस केस में अब तक तीन डॉक्टरों की गिरफ्तारी हो चुकी है, जिनके तार सीधे अल-फलाह यूनिवर्सिटी से जुड़े हैं, डॉ. आदिल अहमद राठर, डॉ. मुजम्मिल, अहमद गनई उर्फ मुजम्मिल शकील, डॉ. शाहीन शाहिद (लेडी डॉक्टर) यूनिवर्सिटी की भूमिका इस मामले में जांच के दायरे में है। हालाँकि घटना के बाद से अभी तक यूनिवर्सिटी प्रबंधन की ओर से कोई भी सार्वजनिक बयान जारी नहीं किया गया है। जांच में यह भी खुलासा हुआ है कि दिल्ली में हुए ब्लास्ट का आरोपी मोहम्मद उमर नबी भी इसी यूनिवर्सिटी में पढ़ाता था। उमर नबी 7 मई 2024 को यूनिवर्सिटी में पढ़ाने आया था। वह 30 अक्टूबर के बाद से पढ़ाने नहीं आया। सबसे गंभीर बात यह है कि 10 नवंबर को दिल्ली ब्लास्ट वाले दिन उमर यूनिवर्सिटी से ही एक i20 कार लेकर निकला था। बाद में, लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास इसी कार में ब्लास्ट हुआ था।

एनआईए ने गुरुग्राम से तीन लोगों को हिरासत में लिया

सोहना, उमेश गुप्ता(पंजाब केसरी): राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में लालकिला के समीप मेट्रो स्टेशन के पास हुए धमाके वाले मामले में इस्तेमाल की गई कार के तार गुरुग्राम के सोहना से जुड़ते नजर आ रहे है। मंगलवार को सोहना के गांव धुनेला स्थित एक सोसायटी में आज उस वक्त अफरातफरी का माहौल बन गया, जब किसी

जांच एजेंसी टीम यहां आई और सिग्नेचर ग्लोबल सोसायटी में रहने वाले एक व्यक्ति को पूछताछ के नाम पर तुरत-फुरत में गाड़ी में बैठाकर अपने साथ ले गई। इसी तरह से एनआइए टीम ने यहां की एक सोसाएटी से भी दो लोगों को भी हिरासत में लिया है। गोपनीय सूत्रों के मुताबिक पुलिस ने धमाके में प्रयुक्त आई-20 कार एचआर26 नंबरी को जैसे ही गुरूग्राम वाहन अथॉरिटी में पंजीकृत पाया तो वाहन अथॉरिटी से पंजीकरण के आधार पर कार के मूल मालिक मोहम्मद सलमान तक पहुंच गई। अब जांच में लगे अधिकारी इस मामले में मोहम्मद सलमान द्वारा सौंपे गए दस्तावेज, साक्ष्यों और जानकारियों को लेने के बाद देविन्द्र तक पहुंच गए।

TATHASTU I

लाइसेंस संख्या-189 वर्ष 2022 दिनांक-16.11.2022
हरेरा पंजीकरण संख्या-RC/REP/HARERA/GGM/676/408/2023/20 दिनांक: 30.01.2023

सूचना

"तथास्तु I" अफोर्डेबल हाउसिंग प्रोजेक्ट सेक्टर-5 सोहना, हरियाणा के सभी सफल आवेदकों को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित सफल आवेदकों ने अपने आवंटित फ्लैट की आवंटन राशि का भुगतान नियत तिथि तक नहीं किया है, जिसकी सूचना उन्हें स्पीड पोस्ट के माध्यम से भी दी जा चुकी है। अतः निम्नलिखित आवेदकों और आवंटियों को इस समाचार पत्र के माध्यम से पुनः अनुरोध किया जाता है कि अपनी आवंटन राशि / किस्त राशि का भुगतान इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से अगले 15 दिन के अंदर कर दें। अन्यथा उनका आवंटन रद्द माना जायेगा व जो फ्लैट इनको आवंटित थे उनको रद्द कर पुनः आवंटन की प्रकिया के लिए नियमानुसार (हरियाणा अफोर्डेबल हाउसिंग पॉलिसी 2013) अपेक्षित कार्यवाही की जाएगी।

S.No.	Customer ID	Applicant Name	S.No.	Customer ID	Applicant Name
1	86964	MR. TRILOK	7	83625	MISS. RAJBALA KATARIA
2	83206	MR. SHASHI ANAND	8	85059	MR. AMIT BHARDWAJ
3	83980	MISS. JYOTI	9	85203	MISS. SUSHILA DEVI
4	84007	MR. KARAN SIKKA	10	85999	MR. RAKESH KUMAR YADAV
5	84163	MR. BHARAT KUMAR PUROHIT	11	85819	MISS. RAJNI YADAV
6	86733	MISS. SUMAN VERMA			

देसी कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड
वाटिका टॉवर, दसवीं मंजिल, टावर बी, सेक्टर-54 गोल्फ कोर्स रोड, गुरुग्राम, हरियाणा, 122011
कॉल करें +91 999 065 0650 | विजिट करें www.tathastu.co

केंद्र ने दिल्ली-एनसीआर राज्यों से प्रदूषण नियंत्रण प्रयासों पर रिपोर्ट देने को कहा

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने दिल्ली-एनसीआर के सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश के अधिकारियों को वायु प्रदूषण नियंत्रण प्रयासों पर ठोस कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है।

दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में वायु प्रदूषण पर एक उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए यादव ने पराली जलाने, सड़कों की धूल और अपशिष्ट जलाने पर अंकुश लगाने के लिए समन्वित तथा वर्ष भर उपाय करने की आवश्यकता पर बल दिया। यह इस सीजन की चौथी समीक्षा बैठक थी। उन्होंने अधिकारियों से ज़िलेवार फसल अवशेष प्रबंधन योजनाएं बनाने, फसल अवशेष प्रबंधन मशीनों के संचालन के लिए क्षमता निर्माण सुनिश्चित करने और पराली

जलाने के मामलों पर निरंतर निगरानी रखने को कहा। बैठक में दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा भी शामिल हुए। केंद्रीय मंत्री ने नगर निकाय के ठोस कचरे को खुले में जलाने पर पूरी तरह से रोक लगाने पर ज़ोर दिया और नगर निकायों को निर्देश दिया कि वे कचरे के प्रबंधन में मौजूद कमियों को दूर करने और उसकी तेजी से सफाई सुनिश्चित करने के लिए सख्त समय-सीमा तय करें। उन्होंने अधिकारियों से आग्रह किया कि वे अलग-अलग काम करने के बजाय अपशिष्ट प्रबंधन पर सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करें। यादव ने एनसीआर की सभी 'रेड कैटेगरी' (अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाली) औद्योगिक इकाइयों में, मिशन मोड पर, ऑनलाइन सतत उत्सर्जन निगरानी प्रणाली और वायु प्रदूषण नियंत्रण उपकरण लगाने की अपील की। सड़क पुनर्विकास परियोजनाओं की समीक्षा करते हुए, उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे कार्यों को समय पर और गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा करें, ताकि धूल प्रदूषण को कम किया जा सके और निर्माण एवं ध्वस्तीकरण के मलबे के प्रबंधन में मौजूद कमियों को पाटा जा सके। उन्होंने दिल्ली यातायात पुलिस से भीड़भाड़ वाले स्थानों (हॉटस्पॉट) के लिए यातायात प्रबंधन योजना तैयार करने और वाहनों से होने वाले उत्सर्जन को कम करने के लिए 'इंटेलिजेंट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम' के कार्यान्वयन में तेजी लाने का भी आग्रह किया।

भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA
www.rbi.org.in

भारत सरकार 14 नवंबर 2025 को ₹28,000 करोड़ के लिए प्रतिभूतियों की बिक्री की घोषणा

भारत सरकार ने निम्नलिखित दिनांकित प्रतिभूतियों की बिक्री (पुनर्निर्गम) की घोषणा की है :

क्र. सं.	प्रतिभूतियों के नाम	अधिसूचित राशि सांकेतिक (₹ करोड़ में)	खुदरा निवेशकों के लिए निर्धारित* (₹ करोड़ में)
1.	6.68% सरकारी प्रतिभूति 2040	16,000	800
2.	6.90% सरकारी प्रतिभूति 2065	12,000	600

स्टॉक की बिक्री 26 मार्च 2025 को जारी सामान्य अधिसूचना एफ.स.4(2)- बी (डब्ल्यूएंडएम)/2018 और इस संबंध में जारी विशिष्ट अधिसूचना में निर्दिष्ट नियम और शर्तों के अनुसार भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई कार्यालय, फोर्ट, मुंबई – 400001 के माध्यम से की जाएगी।

यह नीलामी **विविध मूल्य पद्धति** का प्रयोग करके **14 नवंबर 2025 (शुक्रवार)** को आयोजित की जाएगी। परिणाम उसी दिन घोषित किया जाएगा और सफल बोली लगाने वालों को **17 नवंबर 2025 (सोमवार)** को भुगतान करना होगा।

खुदरा निवेशक गैर-प्रतिस्पर्धी बोली सुविधा योजना के अनुसार गैर-प्रतिस्पर्धी आधार पर नीलामी में भाग ले सकते हैं। व्यक्तिगत निवेशक रिटेल डायरेक्ट पोर्टल (https://rbiretaildirect.org.in) के माध्यम से भी बोलियाँ लगा सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट (www.rbi.org.in) पर जारी दिनांक **10 नवंबर 2025** की प्रेस प्रकाशनी देखें।

सरकारी प्रतिभूतियां सुरक्षा, चलनिधि तथा दीर्घावधि के लिए आकर्षक प्रतिफल प्रदान करती हैं।
''पैसे का वादा करने वाले ई-मेल/एसएमएस/टेलीफोन द्वारा धोखा न खाएं''

TATHASTU II

लाइसेंस संख्या-188 वर्ष 2022 दिनांक-16.11.2022
हरेरा पंजीकरण संख्या-RC/REP/HARERA/GGM/677/409/2023/21 दिनांक: 30.01.2023

सूचना

"तथास्तु II" अफोर्डेबल हाउसिंग प्रोजेक्ट सेक्टर-5 सोहना, हरियाणा के सभी सफल आवेदकों को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित सफल आवेदकों ने अपने आवंटित फ्लैट की आवंटन राशि का भुगतान नियत तिथि तक नहीं किया है, जिसकी सूचना उन्हें स्पीड पोस्ट के माध्यम से भी दी जा चुकी है। अतः निम्नलिखित आवेदकों और आवंटियों को इस समाचार पत्र के माध्यम से पुनः अनुरोध किया जाता है कि अपनी आवंटन राशि / किस्त राशि का भुगतान इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से अगले 15 दिन के अंदर कर दें। अन्यथा उनका आवंटन रद्द माना जायेगा व जो फ्लैट इनको आवंटित थे उनको रद्द कर पुनः आवंटन की प्रकिया के लिए नियमानुसार (हरियाणा अफोर्डेबल हाउसिंग पॉलिसी 2013) अपेक्षित कार्यवाही की जाएगी।

S.No.	Customer ID	Applicant Name	S.No.	Customer ID	Applicant Name
1	84450	MISS. DEVYANI CHOUDHARY	9	85132	MR. AMARJIT SINGH
2	84266	MISS. KOMAL TANWANI	10	83317	MR. HITESH SAINI
3	85030	MISS. KRISHNA DEVI SHARMA	11	84351	MR. LALIT NARAYAN MISHRA
4	85759	MISS. RADHIKA MAHESWARI	12	84245	MR. NARAYAN DAS
5	82988	MISS. VIJAY LAXMI	13	85366	MR. SUNIL KUMAR
6	87397	MR. AMIT GAUTAM	14	86937	MR. ANKIT SHARMA
7	86207	MR. ANIL KUMAR	15	84827	MR. ANKUR NIGAM
8	87100	MR. GAURAV KUMAR			

देसी कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड
वाटिका टॉवर, दसवीं मंजिल, टावर बी, सेक्टर-54 गोल्फ कोर्स रोड, गुरुग्राम, हरियाणा, 122011
कॉल करें +91 999 065 0650 | विजिट करें www.tathastu.co

ट्रंप का ऐलान,'घटा देंगे भारत पर टैरिफ

वाशिंगटन, (एजेंसी): अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि भारत के साथ व्यापार समझौता लगभग तैयार है और जल्द ही उस पर हस्ताक्षर हो सकते हैं। ट्रंप ने यह टिप्पणी भारत में

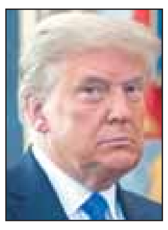

अमेरिका के अगले राजदूत सर्जियो गोर के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान की। उन्होंने कहा, हम भारत के साथ एक नया समझौता कर रहे हैं, जो पहले से अलग होगा। इस बार दोनों देशों को बराबरी का लाभ मिलेगा। समझौते पर बात लगभग पूरी हो चुकी है और यह दोनों देशों के लिए फायदेमंद रहेगा। ट्रंप ने यह भी कहा वे भारत पर टैरिफ को आधा यानी 50% कम करेंगे। ट्रंप की ओर से ये भी साफ किया गया कि रूसी तेल खरीद ही वो बड़ा कारण था, जिसके चलते भारत पर लगा टैरिफ बढ़ाकर डबल किया गया था। ट्रंप ने कहा कि 'फिलहाल रूस के तेल की वजह से भारत पर टैरिफ बहुत ज्यादा है। लेकिन उन्होंने अब रूसी तेल की अपनी खरीदारी कम कर दी है। इस वजह से अब हम भी भारत पर लगाए गए टैरिफ को कम करेंगे। ट्रंप ने भारत की तारीफ करते हुए कहा कि भारत तेज़ी से आगे बढ़ रही अर्थव्यवस्था है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सुरक्षा साझेदार है। ट्रंप ने कहा कि उनकी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आपस में बहुत अच्छी समझ है। उन्होंने भारत को अमेरिका का बेहद महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय साझेदार बताया। ट्रंप ने कहा, हम उम्मीद करते हैं कि सर्जियो गोर भारत और अमेरिका के रिश्तों को और मजबूत करेंगे।

भारत दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक का घर है, दुनिया का सबसे बड़ा देश... हमारे प्रधानमंत्री मोदी के साथ शानदार संबंध हैं और सर्जियो ने इसे और भी बेहतर बनाया है, क्योंकि वह पहले से ही प्रधानमंत्री के साथ दोस्ताना संबंध बना चुके हैं। सर्जियो गोर को उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने शपथ दिलाई। इस मौके पर विदेश मंत्री मार्को रुबियो और वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट भी मौजूद थे।

विदेश मंत्री जयशंकर जी-7 बैठक में भाग लेने कल कनाडा जाएंगे

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): विदेश मंत्री एस जयशंकर द्विपक्षीय संबंधों को सामान्य बनाने की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए जी-7 के सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए बुधवार को कनाडा का दौरा करेंगे।

विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि जयशंकर अपनी कनाडाई समकक्ष अनीता आनंद के निमंत्रण पर ओंटारियो में विदेश मंत्रियों की बैठक के एक संपर्क सत्र में शामिल होंगे। मंत्रालय ने कहा, ''जी7 विदेश मंत्रियों की बैठक में विदेश मंत्री की भागीदारी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर 'ग्लोबल साउथ' की आवाज को मजबूत करने के लिए अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ

काम करने की भारत की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है।'' जयशंकर के जी7 बैठक के इतर आनंद के साथ द्विपक्षीय बैठकें करने की भी उम्मीद है। कनाडा ने जी7 बैठक के लिए जिन सहभागी देशों को आमंत्रित किया है उनमें ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, भारत, सऊदी अरब, मैक्सिको, दक्षिण कोरिया, दक्षिण अफ्रीका और यूक्रेन शामिल हैं। कनाडा ने पिछले हफ्ते कहा था कि जी-7 सम्मेलन में वैश्विक आर्थिक और सुरक्षा चुनौतियों पर चर्चा होगी, जिनमें समुद्री सुरक्षा और समृद्धि, आर्थिक लचीलापन, ऊर्जा सुरक्षा और महत्वपूर्ण खनिज शामिल हैं। जयशंकर की कनाडा यात्रा आनंद की भारत यात्रा के एक महीने बाद हो रही है, जहां दोनों पक्षों ने व्यापार, महत्वपूर्ण खनिजों और ऊर्जा क्षेत्रों में संबंधों को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वाकांक्षी प्रारूप का अनावरण किया था। अपनी बैठक में दोनों विदेश मंत्रियों ने वैश्विक आर्थिक वास्तविकताओं और एक-दूसरे की 'रणनीतिक प्राथमिकताओं' को ध्यान में रखते हुए द्विपक्षीय व्यापार और निवेश पर जल्द ही मंत्री-स्तरीय चर्चा शुरू करने पर सहमति व्यक्त की थी।

हडको hudco A NAVRATNA CPSE

एकीकृत लक्ष्य
समावेशी इंफ्रास्ट्रक्चर
नवोन्मेषी वित्तपोषण

ऋण संवितरण > ₹ 25,838 करोड़ 19% वर्ष दर वर्ष की वृद्धि
ऋण स्वीकृतियां > ₹ 92,985 करोड़ 22% वर्ष दर वर्ष की वृद्धि
प्रचालन से राजस्व > ₹ 6,156 करोड़ 31% वर्ष दर वर्ष की वृद्धि
कर उपरांत लाभ > ₹ 1,340 करोड़ 7.5% वर्ष दर वर्ष की वृद्धि

विकसित भारत के लिए परिसंपत्ति वित्तपोषण | एनबीएफसी - आईएफसी

30 सितंबर, 2025 को समाप्त तिमाही/समाप्त छमाही के अलेखापरीक्षित वित्तीय परिणामों (एकल तथा समेकित) का सार (₹ करोड़ में)

विवरण	एकल					समेकित				
	समाप्त तिमाही		समाप्त छमाही		समाप्त वर्ष	समाप्त तिमाही		समाप्त छमाही		समाप्त वर्ष
	30/09/25 (अलेखापरीक्षित)	30/09/24 (अलेखापरीक्षित)	30/09/25 (अलेखापरीक्षित)	30/09/24 (अलेखापरीक्षित)	31/03/25 (लेखापरीक्षित)	30/09/25 (अलेखापरीक्षित)	30/09/24 (अलेखापरीक्षित)	30/09/25 (अलेखापरीक्षित)	30/09/24 (अलेखापरीक्षित)	31/03/25 (लेखापरीक्षित)
प्रचालनों से कुल आय (शुद्ध)	3,219.03	2,517.72	6,156.34	4,706.07	10,311.29	3,219.03	2,517.72	6,156.34	4,706.07	10,311.29
अवधि का शुद्ध लाभ (कर एवं अपवादात्मक मदों से पूर्व)	954.71	1,000.04	1,811.94	1,684.74	3,636.66	954.71	1,000.04	1,811.94	1,684.74	3,636.66
अवधि का कर पूर्व शुद्ध लाभ (अपवादात्मक मदों के उपरांत)	954.71	1,000.04	1,811.94	1,684.74	3,636.66	954.71	1,000.04	1,811.94	1,684.74	3,636.66
अवधि का कर उपरांत शुद्ध लाभ (अपवादात्मक मदों के उपरांत)	709.83	688.62	1,340.06	1,246.37	2,709.14	709.83	688.62	1,340.06	1,246.37	2,709.14
अवधि की कुल समेकित आय (अवधि का लाभ (कर उपरांत) तथा अन्य समेकित आय (कर उपरांत) को मिलाकर)	823.09	537.03	509.23	1,075.72	2,544.34	823.09	537.03	509.23	1,075.72	2,544.34
प्रदत्त साम्य शेयर पूंजी (अंकित मूल्य 10/-रू प्रति)	2,001.90	2,001.90	2,001.90	2,001.90	2,001.90	2,001.90	2,001.90	2,001.90	2,001.90	2,001.90
अन्य साम्य (पुनर्मूल्यांकन रिजर्व को छोड़ कर)	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	15,967.89	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	15,966.15
प्रतिभूति प्रीमियम खाता	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	1.26	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	1.26
निवल मूल्य	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	17,969.79	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	17,968.05
प्रदत्त उधार पूंजी/बकाया उधार*	-	-	-	-	107,280.61	-	-	-	-	107,280.61
उधार साम्य अनुपात	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	5.72	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	5.72
प्रति शेयर अर्जन (अंकित मूल्य 10/-रू प्रति) (तिमाही/ छमाही का ईपीएस वार्षिकक्रत नहीं)										
i) बेसिक	3.55	3.44	6.69	6.23	13.53	3.55	3.44	6.69	6.23	13.53
ii) डायल्यूटिड	3.55	3.44	6.69	6.23	13.53	3.55	3.44	6.69	6.23	13.53
डिबेंचर रिडेम्पशन रिज़र्व ** (वर्ष के अंत में)	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	2,965.69	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं	2,965.69

*इन्ड एएस समायोजन को छोड़कर बकाया उधार ** क्रमशः 31 मार्च, 2025 को डिबेंचर रिडेम्पशन रिज़र्व

1. कंपनी के उपर्युक्त वित्तीय परिणामों की समीक्षा लेखापरीक्षा समिति द्वारा 10 नवम्बर, 2025 को की गई है, इसके पश्चात् इसी तिथि पर आयोजित निदेशक मंडल की बैठक में इसे अनुमोदित किया गया है। यह वित्तीय परिणाम कंपनी के मेसर्स एस ए आर सी एंड एसोसिएट्स, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स, वैधानिक लेखा परीक्षकों द्वारा भी समीक्षित हैं।
2. कंपनी के बोर्ड ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए ₹ 10 प्रति शेयर पर ₹ 1 की दर से दूसरे अंतरिम लाभांश को मंजूरी दी। दूसरे अंतरिम लाभांश की प्राप्ति के लिए शेयरधारकों की पात्रता निर्धारित करने हेतु रिकॉर्ड तिथि 19 नवम्बर, 2025 निर्धारित की गई है। लाभांश का भुगतान घोषणा के 30 दिनों के भीतर किया जाएगा।
3. उपर्युक्त विवरण सेबी (सूचीकरण दायित्व एवं प्रकटन अर्हता) विनियमावली, 2015 के विनियम 33 तथा 52 (4) के अंतर्गत, स्टॉक एक्सचेंज में दर्ज किये गये तिमाही/छमाही के वित्तीय परिणामों के विस्तृत प्रपत्र का सार है। वित्तीय परिणामों का पूर्ण प्रपत्र बीएसई लिमिटेड (URL:WWW.bseindia.com/ corporates), नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (URL:WWW.nseindia.com/ corporates), तथा कंपनी की वेबसाइट (URL:WWW.hudco.org.in) पर भी उपलब्ध है।
4. लिस्टिंग विनियमन के विनियमन 52(4) में संदर्भित अन्य क्रमिक मदों की उचित जानकारी बीएसई लिमिटेड (URL:WWW.bseindia.com/ corporates), नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (URL:WWW.nseindia.com/ corporates), की वेबसाइट पर दी गई है तथा यह कंपनी की वेबसाइट (URL:WWW.hudco.org.in) पर भी उपलब्ध है।
5. तिमाही/छमाही के दौरान लेखांकन नीति में कोई बदलाव नहीं हुआ है अतः शुद्ध लाभ/हानि, कुल समेकित आय या कोई अन्य संबंधित वित्तीय मद(ओं) पर लेखांकन नीतियों में परिवर्तन (ओं) के कारण कोई वित्तीय प्रभाव नहीं पड़ा है।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 10/11/2025

उत्पाद और सेवाएं | वित्तपोषण | परामर्श सेवा | क्षमता निर्माण

निदेशक मंडल के लिए और उनकी ओर से
हस्ता/-
संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको)
(भारत सरकार का उपक्रम)
पंजीकृत कार्यालय: हडको भवन, कोर 7ए, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
CIN: L74899DL1970GOI005276 | GSTIN: 07AAACH0632A1ZF | www.hudco.org.in | फॉलो करें :

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्

भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

पंजाब केसरी संपादकीय

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

आदित्य नारायण चोपड़ा

adityachopra@punjabkesari.com

बिहार में बम्पर वोटिंग

लोकतन्त्र में जन बल के समक्ष सभी बल कमजोर होते हैं क्योंकि इस व्यवस्था में केवल जनता की शक्ति ही स्वयंभू होती है और इसी के आदेश पर किसी भी लोकतन्त्र में सरकारें बनती और बिगड़ती हैं। बिहार में सम्पन्न हुए विधानसभा चुनावों में किस पार्टी या गठबन्धन की सरकार बनेगी, इसका फैसला आज जनता ने ईवीएम मशीनों में कैद कर दिया है, जिसका पता आगामी 14 नवम्बर को चलेगा जिस दिन वोटों की गिनती की जायेगी परन्तु इतना निश्चित माना जा रहा है कि जिस उत्साह से दूसरे चरण के मतदान में लोगों ने अपने मताधिकार का उपयोग करके बम्पर वोटिंग की है उससे लोकतन्त्र और मजबूत हुआ है। बिहार के लोग राजनीतिक रूप से बहुत सजग व जागरूक माने जाते हैं अत: उनके द्वारा की गई बम्पर वोटिंग के मायने भी क्रान्तिकारी हो सकते हैं। पिछली 6 नवम्बर की तारीख को जब पहले चरण का मतदान हुआ था तो इसका प्रतिशत 65 से ऊपर था जो कि बिहार के पिछले 75 वर्ष के इतिहास में सर्वाधिक था। दूसरे चरण के मतदान में पिछला पहले चरण का कीर्तिमान भी टूट गया है और मतदान 70 प्रतिशत के करीब रहा है। इससे पता चलता है कि लोगों के मन में कुछ नया करने की ख्वाहिश है।

पिछले 20 सालों से राज्य में एनडीए गठबन्धन की नीतीश सरकार ही चल रही है (केवल कुछ समय को छोड़ कर) अत: कुछ विश्लेषक मान रहे हैं कि यह बदलाव के लिए वोट है। लोकतन्त्र की एक खूबी और भी होती है कि यह ठहराव के विरुद्ध होता है मगर कभी-कभी इसके विपरीत भी देखने में आता है। इसलिए 14 नवम्बर को ही यह मालूम हो सकेगा कि लोगों ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़कर जो मतदान किया है उसका असली मकसद क्या है? मगर मोटे तौर पर यह माना जा सकता है कि लोग कुछ न कुछ परिवर्तन जरूर चाहते हैं। आज हुए मतदान में सभी राजनीतिक दलों के 122 सीटों के लिए कुल1302 प्रत्याशी खड़े हुए थे जिनमें से केवल 122 का ही चुनाव होना था। इनमें भी भाजपा समाहित एनडीए गठबन्धन व कांग्रेस समाहित महागठबन्धन के बीच कांटे का मुकाबला माना जा रहा है। मगर मुख्यमन्त्री नीतीश कुमार इन चुनावों का केन्द्र भी बने हुए हैं। अभी तक पिछले चुनावों से यह परंपरा चली आ रही है कि जिस तरफ नीतीश बाबू होते हैं वही गठबन्धन चुनावों में बाजी मार जाता है।

2005 से लेकर 2020 तक के चुनावों में यही होता रहा है। 2015 के चुनावों में जब नीतीश बाबू महागठबन्धन के पाले में थे और उन्होंने भाजपा का साथ छोड़ दिया था तो इस महागठबन्धन को शानदार विजय प्राप्त हुई थी। मगर पिछले 2020 के चुनावों में तस्वीर ऐसी नहीं थी हालांकि विजय नीतीश बाबू के पाले वाले एनडीए की ही हुई थी मगर जीत का अन्तर केवल 12 हजार वोटों का ही था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि बिहार में नीतीश कुमार के जलवे में रौनक घट रही है। इस बार राज्य की राजनीति के ध्रुव माने जाने वाले श्री लालू प्रसाद यादव की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल के नेता उनके पुत्र श्री तेजस्वी यादव का जलवा चुनाव में आकर्षण का केन्द्र रहा है अत: उनकी अगुवाई वाले महागठबन्धन से कुछ करिश्मे की उम्मीद लगाई जा रही है। यह करिश्मा किस प्रकार का होगा इसका आंकलन राजनीतिक पंडित अगले दो दिनों, 14 नवम्बर तक करने में लगे रहेंगे। मगर इतना तय है कि तेजस्वी ने इन चुनावों में अपने द्वारा बनाये गये राजनीतिक विमर्श को लोगों के गले उतारने में एक हद तक सफलता जरूर पाई। यह विमर्श बेरोजगारी व पलायन का था।

चुनाव का यह नियम होता है कि जिस पार्टी या पक्ष का विमर्श जनता में बोलने लगता है वही पार्टी या पक्ष अन्त में भारी पड़ता है। दूसरे चरण के मतदान प्रतिशत के आंकड़े इस बात की गवाही देते लगते हैं। अत: सोचा जा सकता है कि सत्तारूढ़ एनडीए गठबन्धन को इस बार नीतीश बाबू का साथ होने का पूरा लाभ किस हद तक मिल पायेगा? 2020 के पिछले चुनावों में 58.64 प्रतिशत ही मतदान हुआ था। इस बार यह आंकड़ा 70 के करीब है तो इसके अर्थ आसानी से निकाले जा सकते हैं परन्तु कई राज्यों के चुनावों में बढ़े हुए मतदान का लाभ सत्तारूढ़ दलों को भी पूर्व में होता रहा है इसलिए यकीन के साथ कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। परन्तु मैं एक्जिट पोलों की विश्वसनीयता को शून्य मानता रहा हूं क्योंकि इनका आंकलन प्राय: सही नहीं निकलता है और ये अपने आंकड़ेबाजी के करतबों से जिसे चाहे उसे हरा या जिता देते हैं।

बिहार के बारे में यह प्रसिद्ध है कि यह देश को राजनीतिक दिशा देने वाला राज्य है। इसकी राजनीति भविष्य की दिशा तय करने में सहायक मानी जाती है। इसलिए 14 तारीख को जो भी नतीजे आयेंगे उनका असर पूरे भारत खासकर उत्तर भारत की राजनीति पर पड़े बिना नहीं रहेगा। इस हकीकत को सत्ता व विपक्ष दोनों ही समझते हैं, इसीलिए दोनों पक्षों ने अपने-अपने चुनाव प्रचार में किसी प्रकार की कोताही नहीं बरती। राजद नेता तेजस्वी यादव ने तो 171 रैलियां सम्बोधित कीं। जबकि भाजपा की ओर से भी प्रधानमन्त्री व गृहमन्त्री से लेकर नीतीश कुमार तक ने जमकर चुनाव प्रचार किया। इससे बिहार की राष्ट्रीय राजनीति में अहमियत का अनुमान लगाया जा सकता है।

2005 से लेकर 2020 तक के चुनावों में यही होता रहा है। 2015 के चुनावों में जब नीतीश बाबू महागठबन्धन के पाले में थे और उन्होंने भाजपा का साथ छोड़ दिया था तो इस महागठबन्धन को शानदार विजय प्राप्त हुई थी। मगर पिछले 2020 के चुनावों में तस्वीर ऐसी नहीं थी हालांकि विजय नीतीश बाबू के पाले वाले एनडीए की ही हुई थी मगर जीत का अन्तर केवल 12 हजार वोटों का ही था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि बिहार में नीतीश कुमार के जलवे में रौनक घट रही है। इस बार राज्य की राजनीति के ध्रुव माने जाने वाले श्री लालू प्रसाद यादव की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल के नेता उनके पुत्र श्री तेजस्वी यादव का जलवा चुनाव में आकर्षण का केन्द्र रहा है अत: उनकी अगुवाई वाले महागठबन्धन से कुछ करिश्मे की उम्मीद लगाई जा रही है।

बम के धमाके...

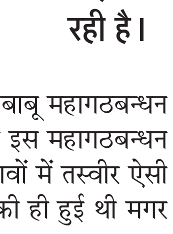

गीता पाढा

"फिर दहली है देश की धड़कन किसी के नापाक इरादों से,
चीखों, लहूलुहान बिखरे मांस के टुकड़े
और एक साथ उठते जनाजों से,,
इंसान ही बन गया है इंसानियत का दुश्मन,
धर्म मजहब के बढ़ते विवादों से,
और ईश्वर की सुंदर दुनिया ढह रही रेत की तरह,
बम के धमाकों की आवाजों से...।।"

ज़ोहरन ममदानी ने ट्रंपवाद को करारा झटका दिया

प्रभु चावला

एडिटोरियल डायरेक्टर
द न्यू इंडियन एक्सप्रेस

newindianexpress.com

यह सिर्फ़ एक चुनावी जीत नहीं थी, बल्कि डोनाल्ड ट्रंप की निजी राजनीति, विभाजन की ज़हर भरी सोच और उनके तथाकथित 'ट्रंपियन इकॉनोमिक्स' का एक कठोर सफाया थी। न्यूयॉर्क शहर की चमकदार गगनचुंबी इमारतों के बीच जहां अटूट रोशनी और तेज़ रौनक है, एक भूकंपीय बदलाव आया जो पुराने साम्राज्यों के विध्वंस की तरह गूंजा। पिछले हफ्ते 34 साल के जोशीले डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट ज़ोहरन क्वामे ममदानी ने शहर के इतिहास में दूसरे सबसे कम उम्र के मेयर के रूप में जबरदस्त जीत हासिल की। भारतीय हिंदू मां, फ़िल्ममेकर मीरा नायर और युगांडा के मुस्लिम पिता, अकादमिक महमूद ममदानी के बेटे इस प्रवासी परिवार के युवा ने सिर्फ़ वोट नहीं जीते उन्होंने ट्रंपवाद के बचे हुए अवशेषों को उसकी ही आत्मिक धरती पर मिटा दिया। 50.4 प्रतिशत वोट लेकर ममदानी ने पूर्व गवर्नर एंड्रयू क्यूमो, जो आज एक हताश स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में खड़े थे और रिपब्लिकन कर्टिस स्लिवा दोनों को धूल चटा दी।

यह महज बैलेट-बॉक्स की जीत नहीं थी, यह ट्रंप की पहचान-आधारित और विभाजनकारी राजनीति का निर्विकल्प बहिष्कार था। विडम्बना यह कि उसी शहर में, जहां 11 सितंबर 2001 को चरमपंथियों ने ट्विन टावर्स गिरा दिए थे और करीब 3,000 अमेरिकियों और अन्य लोगों की मौत हुई थी, जनता ने बहुलता में अटूट विश्वास प्रकट किया। जश्न के काफिले में जब कंफ़ेटी छूट रहा था और भीड़ गर्जन कर रही थी, एक सच्चाई सुगठित हो गई। अमेरिका का ट्रंप के तानाशाही-प्रवृत्त व्यक्तिवाद के साथ रोमांस अब टूट रहा है और ट्रंप की घटती स्वीकृति उसके अपरिहार्य पतन का संकेतक है। ट्रंप का उदय 2016 में अराजकता का महोत्सव था। उन्होंने डर को नीति बनाया और पहचान को हथियार, वे हाशिए पर पड़े लोगों की पीठ पर सवार होकर ज़मीन पर दीवारें खड़ी करने और 'दूसरों' के ख़िलाफ दीवारों और अमीरों के लिए छूट के वादों के जरिए अपनी बढ़त बनाई, जिसे उन्होंने लोकलुभावनता का रूप दे दिया था, पर उनकी दूसरी पारी के एक साल से भी कम वक्त में ही दरारें खाई में तब्दील हो रही हैं। ममदानी की जीत और अन्य महत्वपूर्ण मुकाबलों में डेमोक्रेटिक झाड़ू ने ट्रंप की पकड़ की नाज़ुकता उजागर कर दी है। यह एक राष्ट्रीय जनमत-संग्रह जैसा है ओवरऑल असर, पर देश के सबसे बड़े शहर के मतदाताओं ने, जो अमेरिका की विविधता का सूक्ष्म रूप हैं, ट्रंप के बहिष्कारी औज़ारों को ज़ोरदार तरीके से खारिज कर दिया। ममदानी ने इस दौड़ को पहचानों की निजी ज़मीन बना दिया जहां उनकी विरासत ही उनकी ढाल और तलवार दोनों बनी, हालांकि इसी जोरदार वामपंथी ज़ोर ने राष्ट्रीय विभाजन की आशंका भी बढ़ा दी है। ममदानी की नीतियां अवैध प्रवासन के ख़िलाफ लड़ाई को कमजोर कर सकती हैं और सामाजिक खर्चों को बढ़ाकर शहर और देश की संसाधन-सीमाओं पर दबाव डाल सकती हैं, जो उस समय खतरनाक है जब सावधानी जरूरी है। मुहिम एक कच्ची विचारधारा की टकराहट में बदल गई, दोनों ओर से कटु टिप्पणियां चलीं जिन्होंने अमेरिकी राजनीति की आत्मा को बेपर्दा कर दिया। ट्रंप ने हमेशा की तरह उकसाने वाले स्वर ने ममदानी की पहचान पर वार किया।

चुनाव से कुछ दिन पहले ट्रुथ सोशल पर उन्होंने ममदानी को "self-professed Jew hater" कहा और यह तक लिखा कि "any Jewish person who votes for him is a stupid person", क्लासिक ट्रंप की रणनीति जिसमें धर्म और जातीयता पर दहशत फैलाकर अपने आधार को खड़ा किया जाता है, उन्होंने ममदानी की मुस्लिम विरासत को संदिग्ध होने का इशारा दिया और उन पर "रेडिकल लेफ्ट आइडेंटिटी पॉलिटिक्स जो न्यूयॉर्क को तबाह कर देगी" जैसे आरोप लगाकर उन्हें कथित रूप से देश-विद्रोही साया दिया। यह व्यक्तिगत, कट्टर और पूरी तरह अनुमानित था। ट्रंप की सोच का आईना जहां विविधता खतरा है, ताकत नहीं। ममदानी ने इसका जवाब भी शिष्टता और सांस्कृतिक ताकत से दिया। रैली के बाद रैली में उन्होंने अपने द्विवर्णीय और अंतर-धार्मिक जड़ों को अमेरिका के वादे के सबूत के रूप में पेश किया। "मेरी मां हिंदू है, मेरे पिता मुस्लिम हैं। मैं वही अमेरिका हूं जिससे ट्रंप डरते हैं।" ममदानी की चाल उसका असली जोर था—उन्होंने इतिहास के दिग्गजों और सांस्कृतिक प्रतीकों का सहारा लेकर ट्रंप के संकुचित राष्ट्रवाद को भेद दिया। नेहरू के प्रसिद्ध 'ट्रिस्ट विथ डेस्टिनी' भाषण से लेते हुए ममदानी ने उसे अमेरिकी संदर्भ में ढाल कर कहा, "हम एक ऐसा महान नगर बनाएंगे जहां हिंदू, मुस्लिम, यहूदी, ईसाई, नास्तिक सभी एकता में रहें, न कि ट्रंप द्वारा बेचना गया दीवारों से घिरा हुआ डिस्टोपिया।" यह ट्रंप के 'अमेरिका फर्स्ट' अलगाववाद के सीधे चुनौती के रूप में था। नेहरू के समावेशी लोकतंत्र के विचार को उद्धृत करके ममदानी ने दिखा दिया कि ट्रंप की व्यक्तिगत सत्ता विभाजन ही उत्पन्न करती है। अपने संदेश को ठोस करने के लिए ममदानी ने प्रवासी समुदायों से जुड़ी सांस्कृतिक डोरे बुनकर उन्हें बांधा। उनके जीत समारोह में जब भीड़ फूट पड़ी तब मंच से हिंदी गाना 'धूम मचा ले' बजेगा। यह नेहरू की आदर्शवाद और बॉलीवुड की चमक का ऐसा मेल था जो सिर्फ़ दिखावटी नहीं, बल्कि दक्षिण एशियाई, मुस्लिम और प्रगतिशील मतदाताओं को उकसाने वाला सशक्त रणनीतिक कदम था। पहचान को कमजोरी से बदलकर यह ममदानी के लिए जीत का शक्तिशाली कारण बन गया—एक मास्टरक्लास इन मार्केटिंग। ममदानी की विजय अकेली नहीं। यह व्यापक डेमोक्रेटिक पुनरुत्थान का हिस्सा है जो ट्रंप की सत्ता के लिए भय का संकेत है। मिशिगन के डियरबॉर्न में लेबनानी-अमेरिकी अब्दुल्ला हम्मूद ने मेयर के रूप में पुन: विजय प्राप्त की और बफ़ेलो में डेमोक्रेट इंडिया वॉल्टन ने मेयर का तख्त साफ किया। ये चुनावी सफलताएं तीन डेमोक्रेट मेयरों में से दो मुस्लिम शहरी किलेबंदी में ट्रंपवाद के प्रति एक कड़ा प्रतिवाद हैं। निस्संदेह, ट्रंप की सत्ता को पहुंचा नुक्सान गहरा और बहुआयामी है। घरेलू स्तर पर ये हार उनकी रिपब्लिकन पार्टी पर पकड़ को ढीला करती है, जहां भीतर-भीतर असंतोष की फुसफुसाहटें तेज़ हो रही हैं। 2026 के मिडटर्म चुनाव सामने हैं, ऐसे समय में जब डेमोक्रेट्स के पास अब महत्वपूर्ण शहर और गवर्नरशिप पर नियंत्रण है, जैसा लेख में Abigail Spanberger को वर्जीनिया और Mikie Sherrill को न्यू जर्सी के संदर्भ में बताता है तो विपक्ष के पास तेज़ी है। ये जीत डेमोक्रेट्स को ट्रंप का सख्ती से मुकाबला करने के लिए हिम्मत देती हैं, हर नीति-झगड़े को उनके "तानाशाही-व्यक्तिवाद" के खिलाफ़ युद्ध के रूप में फ्रेम करने का अवसर देती हैं। फिर भी, यह सांस्कृतिक विजय कुछ खतरों को छिपाए हुए है। ममदानी का विस्तारित सामाजिक एजेंडा, जिसमें बिना दस्तावेज़ वाले प्रवासियों के लिए मजबूत समर्थन और महत्वाकांक्षी कल्याण विस्तार शामिल है। सीमाओं पर नियंत्रण के प्रयासों को कमजोर कर सकता है, अवैध पारगमन को कम करने की कोशिशों में विघटन ला सकता है और बॉर्डर पर अराजकता को आमंत्रित कर सकता है जिससे ट्रंप की कहानी कि डेमोक्रेट सुरक्षा के मामले में कमजोर हैं, फिर से हवा मिल सकती है। ममदानी की आव्रजन-नियमन पर नरम रुख से जनता का सीमा-सुरक्षा पर भरोसा घट सकता है और यह ट्रंप को खोया हुआ ज़मीन वापस लेने का हथियार दे सकता है। कार्यपालिका शाखा के भीतर भी ट्रंप का प्रभाव घट रहा है क्योंकि ये स्थानीय नेता उसकी नीतियों को चुनौती दे रहे हैं। ममदानी ने पहले ही यह कहा है कि वह न्यूयॉर्क को संघीय दख़ल के खिलाफ एक "संक्चुअरी" बनाएंगे। उन्होंने ट्रंप की डिपोर्टेशन योजनाओं और आर्थिक नीतियों को सीधे चुनौती दी है। यह प्रतिरोध अगर जारी रहा तो प्रभावित होकर यह कैस्केड की तरह गिरता चला जाएगा, और ट्रंप का वैश्विक आर्थिक और कूटनीतिक नियंत्रण कमज़ोर पड़ सकता है। ट्रंप की दहाड़ भरी ट्रेड-युद्ध और अलगाववादी नीतियां घरेलू समर्थन पर निर्भर करती हैं। बड़े शहरों के विद्रोह से उनका चीन या यूरोप के साथ मोल-तोल में लीवरैज मिट सकता है। विदेशों में उनके सहयोगी, जो पहले ही उनकी अस्थिरता को लेकर सतर्क थे, इन हारों को उनकी घटती साख का सबूत मानेंगे और विश्व-मंच पर उन्हें डराने-धमकाने या मोल-भाव में कम समझेंगे। कम से कम एक साल के भीतर ट्रंप की दूसरी पारी एक विजयी वापसी से बदलकर हताश भागदौड़ में तब्दील हो गई है। यह साबित करता है कि एक मज़बूत लोकतंत्र में वह व्यक्तिवाद और तानाशाही जहां किसी एक व्यक्ति के अहंकार से नीतियां तय हों, सामूहिक इच्छा के बोझ के आगे टूट जाता है लेकिन विजेताओं के लिए भी सनक नहीं करनी चाहिए। ममदानी का वामपंथी विज़न यदि संतुलित न रहे तो वह उन्हीं विविधताओं को तोड़ सकता है जिनका वह जश्न मना रहा है, यानी एकता को ध्रुवीकरण वाले अलग-अलग गुटों में बदल सकता है। आगे देखिए तो यह एक डेमोक्रेटिक पुनर्जागरण का संकेत भी हो सकता है, जहां ममदानी जैसे नेता नई पीढ़ी को अमेरिका की बहु-आयामी आत्मा को वापस पाने के लिए प्रेरित करेंगे, बशर्ते वे समझदारी से नकारात्मक पहलुओं को संभालें। यदि डेमोक्रेट्स इस गति को बनाए रखें और विचारधारा को वित्तीय व सुरक्षा-विवेक के साथ संतुलित करें, तो मिडटर्म्स में कांग्रेस का पलटना सम्भव है। इससे ट्रंप के एजेंडे को पतला किया जा सकेगा और उनकी राजनीतिक प्रासंगिकता जल्द ही घट सकती है। सोने जैसा चमकता हुआ टॉवर अभी भी चमक सकता है, पर उसकी नींव सड़ चुकी है। अंतत: ट्रंप का नाश धमाके के साथ नहीं बल्कि उन विविध आवाज़ों के शांत परन्तु जाज़मदार गर्जन से होगा जो उसने कभी समझी ही नहीं और यह एक ऐसे युग का सुन्दर शोक गीत होगा जो खुद अतिरेक से भरा था।

मोदी और शाह की खेल जगत की पारी

फिरोज बख्त अहमद

कम ही लोगों को पता है कि न जाने कितनी पिचों पर खेलते हैं नरेंद्र मोदी और अमित शाह! ऐसा विश्वास किया जाता है कि अगर किसी भी देश का सर्वांगीण विकास देखना है तो यह देखो कि क्रीड़ा जगत में उसका क्या स्थान देखो।

पिछले दस वर्ष में भारत ने जिस प्रकार से खेल-कूद के मैदान में अपना वर्चस्व बनाया है, उसे देख दुनिया हैरान है तो कुछ ईर्ष्यालु हो उठे! नरेंद्र मोदी और अमित शाह का खेलों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

पिछले दस वर्षों में भारत ने विभिन्न खेलों में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है और खास तौर से महिलाओं द्वारा, चाहे बन निखत ज़रीन और मैरी कौम बॉक्सिंग में हों, मल्लेश्वरी या मीराबाई चानू भारोत्तोलन में हों, या क्रिकेट की पारियां हों, जिन सब से देश का गौरव बढ़ा है। जब भी कोई खिलाड़ी किसी भी प्रतिस्पर्द्धा में पदक या पोजीशन लाता है तो प्रधानमंत्री मोदी उसे अपने निवास पर बुलाकर उसे पूर्ण मान-सम्मान देते हैं। जब पिछले ओलंपिक्स में भारत ने सबसे अधिक पदक बंटोरे तो एक बहुत बढ़िया पार्टी उन्होंने अपने घर पर दी। उनसे पूर्व प्रधानमंत्री भी यशस्वी खिलाड़ियों का स्वागत करते रहे हैं, मगर उस प्रकार से नहीं, जैसे मोदी जी दिल-ओ-जान से किया करते हैं। उनका तो स्टाईल ही सुपर-डूपर होता है। भारत में एक क्रिकेट प्रतियोगिता हारने पर राहुल गांधी ने जब उनके लिए "पनौती" का घृणात्मक शब्द प्रयुक्त किया तो उसी समय मोदी ने प्रण कर लिया था कि वे भारत को शिखर तक पहुंचाएंगे और देश ने दो वर्ल्ड कप अपनी झोली में डाल लिए।

एक दौर था जब 1976 में भारतीय महिला क्रिकेट के प्रारंभ में शांता रंगास्वामी, डायना इडोलजी, झूलन गोस्वामी, शुभांगी कुलकर्णी, सुधा शाह, श्रीरूपा बोस आदि अटल संघर्ष कर रही थीं और आज 49 वर्ष के उपरांत 2025 में भारतीय महिला क्रिकेट अपने चरम बिंदु पर पहुंची। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खिलाड़ियों की सहायता और प्रोत्साहन के लिए कई स्तरों पर लगातार प्रयास करते रहे हैं। उन्होंने न केवल सरकारी योजनाओं के माध्यम से, बल्कि व्यक्तिगत स्तर पर भी भारतीय खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया है। नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी (मणिपुर) खेल शिक्षा, रिसर्च और प्रशिक्षण के लिए स्थापित की गई जिसका ब्लू प्रिंट प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में साकार हुआ।

प्रधानमंत्री मोदी ने खिलाड़ियों की मदद के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय खिलाड़ी कल्याण कोष की स्थापना की है, जो खिलाड़ियों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इस कोष के तहत खिलाड़ियों को खेल सामग्री और प्रशिक्षण के लिए सहायता प्रदान की जाती है। हारने वाले खिलाड़ियों को भी हिम्मत देते हैं और जीतने वालों को सम्मानित करते हैं। खिलाड़ियों को छात्रवृत्ति (5 लाख प्रति वर्ष तक) और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की ट्रेनिंग दी जाती है। प्रधानमंत्री मोदी बड़े खेल आयोजनों (जैसे ओलंपिक, पैरालंपिक, एशियन गेम्स, कॉमनवैल्थ गेम्स) के पहले और बाद में खिलाड़ियों से सीधा संवाद करते हैं।

मोदी सरकार ने खेलों को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं, जैसे कि खेलो इंडिया कार्यक्रम, जो युवा खिलाड़ियों को प्रशिक्षण और समर्थन प्रदान करता है। इसके अलावा, सरकार ने खेल बुनियादी ढांचे में भी निवेश किया है जिससे खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें। प्रधानमंत्री मोदी ने पी.वी. सिंधु, मीरा बाई चानू, नीरज चोपड़ा, फोगाट सिस्टर्स, रानी रामपाल, सायना नेहवाल आदि की भी मदद की है।

अमित शाह ने भी खेलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, खासकर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के साथ मिलकर काम करके। उनके नेतृत्व में बीसीसीआई ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं जो भारतीय क्रिकेट के विकास में सहायक रहे हैं। जब शाह के सुपुत्र, जय शाह ने भारतीय क्रिकेट टीम की कमान संभाली तो न जाने उनके विरुद्ध, विपक्षियों द्वारा क्या कुछ नहीं कहा गया कि गृहमंत्री के बेटे होने का लाभ उठा रहे हैं, घपला हो रहा है आदि, मगर वह ख़ामोशी के साथ भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों के लिए आसानियां प्रदान करते रहे, जिसके चलते महिला व पुरुष, दोनों ही वर्गों में हरमनप्रीत कौर, स्मृति मंधाना, दीप्ति, शुभमन गिल, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह, अभिषेक शर्मा, मुहम्मद सिराज आदि खिलाड़ी सामने आए।

इन प्रयासों का परिणाम यह है कि भारत ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर नाम रोशन किया है। वह दिन दूर नहीं, जब भारत अपने यहां ओलंपिक्स का आयोजन करेगा और एक बार फिर पहले की तुलना में कई गुणा अधिक पदक प्राप्त करेगा।

दिल्ली विस्फोटः राम मंदिर की सुरक्षा में बड़ा बदलाव

- प्रवेश द्वार पर लगा DFMD, अब सात कतारों में हो रहे दर्शन
- सभी हनुमानगढ़ी दर्शन करने के बाद राम मंदिर आ रहे हैं

अयोध्या, (पंजाब केसरी) : दिल्ली विस्फोट के बाद अयोध्या हाई अलर्ट मोड पर है। ऐसे में ही राम मंदिर परिसर की सुरक्षा व्यवस्था में बड़ा बदलाव किया गया है। अब यहां प्रवेश द्वार के एंट्री पॉइंट पर ही डोर फ्रेम मेटल डिटेक्टर (डीएफएमडी) लगा दिए गए हैं। यही व्यवस्था यात्री सुविधा केंद्र में भी की गई है। इसके माध्यम से जांच के बाद ही देश दुनिया से आए हुए श्रद्धालुओं को राम मंदिर परिसर के भीतर प्रवेश दिया जा रहा है। यह व्यवस्था आज से ही प्रभावी की गई है। इसके बाद अगले चरण में भी जांच प्रक्रिया से गुजरना पड़ रहा है।

मंगलवार होने के नाते श्रद्धालु बड़ी संख्या में अयोध्या पहुंचे हैं। वह सभी हनुमानगढ़ी दर्शन करने के बाद राम मंदिर आ रहे हैं। श्रद्धालुओं पर दिल्ली विस्फोट का कोई खौफ नहीं दिख रहा है। वह अपने भक्ति के रंग में सराबोर हैं। श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या को देखते हुए और सुरक्षा जांच को बेहतर बनाने की उद्देश्य से अभी तक पांच कतारों में हो रही दर्शन की व्यवस्था भी बदली गई है। अब सात कतारों में श्रद्धालुओं को राम मंदिर के भीतर जाने दिया जा रहा है। इससे भीड़ भी नियंत्रित हो रही है और सुरक्षा एजेंसियों को जांच और निगरानी में भी सहूलियत मिल रही है। अयोध्या के सभी प्रवेश द्वारों पर वाहनों को चेकिंग के बाद ही भीतर आने दिया जा रहा है। हनुमानगढ़ी और कनक भवन के साथ अन्य मंदिरों और सरयू के घाटों पर भी सुरक्षा एजेंसियां मुस्तैद हैं। राम मंदिर के एसपी सुरक्षा बलरामाचारी दुबे ने बताया कि हर स्तर पर सुरक्षा को सख्त कर दिया गया है। विभिन्न एजेंसियां समन्वय के साथ निगरानी और चौकसी बरत रही हैं। एंटी ड्रोन सिस्टम एक्टिव है। इससे आकाश की भी निगरानी की जा रही है। इसके अलावा 1000 सीसीटीवी कैमरों की मदद से राम मंदिर के आसपास नजर रखी जा रही है।

कर्नाटक में स्व-भागीदारी की अवधि 30 तक बढ़ाई

बेंगलुरु, (पंजाब केसरी) : कर्नाटक राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग ने मंगलवार को उन लोगों के लिए समय सीमा बढ़ा दी है जो विभिन्न कारणों से राज्य में सामाजिक एवं शैक्षिक सर्वेक्षण में भाग नहीं ले पाए थे। वे अब 30 नवंबर तक ऑनलाइन गणना में हिस्सा ले सकते हैं। इस सर्वेक्षण को जाति गणना के नाम से भी जाना जाता है। वास्तविक सर्वेक्षण 31 अक्टूबर को समाप्त हुआ था, जिसमें 89.48 प्रतिशत गणना ही हो पाई थी। इसमें गणनाकर्ताओं ने घर-घर जाकर आंकड़े एकत्र किए थे।

परीक्षण में 180 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ी वंदे भारत स्लीपर ट्रेन

कोटा (राजस्थान), (पंजाब केसरी) : स्वदेशी तकनीक से निर्मित वंदे भारत स्लीपर ट्रेन ने पश्चिम मध्य रेलवे के कोटा मंडल में गति परीक्षण के दौरान 180 किलोमीटर प्रति घंटे की अधिकतम रफ्तार प्राप्त कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। रेलवे अधिकारियों ने मंगलवार को बताया कि यह उपलब्धि भरी और खाली दोनों परिस्थितियों में हासिल की गई। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन की दूसरी 'रेक' (संस्करण-दो, 16 कोच) का परीक्षण अनुसंधान डिजाइन एवं मानक संगठन (आरडीएसओ), लखनऊ के परीक्षण निदेशालय दल ने दो नवंबर से किया। रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि पिछले सप्ताह 908 टन भार के साथ 180 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार प्राप्त करने के बाद सोमवार को 800 टन के खाली 'रेक' पर भी परीक्षण सफल रहा। वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, यह उपलब्धि 'मिशन रफ्तार' और 'मेक इन इंडिया' अभियानों की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83

पंजाब केसरी

दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

राष्ट्रीय सहारा
पटना। बुधवार ● 12 नवम्बर ● 2025
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

जहां सम्मान है वहां डर है, पर ऐसी हर जगह सम्मान नहीं है, जहां डर है, क्योंकि संभवतः डर सम्मान से ज्यादा व्यापक है।

-सुकरात

बढ़ता बिहार व बदलता चुनावी एजेंडा

बिहार चुनाव

संजय त्रिपाठी

बिहार की धरती एक बार फिर राजनीतिक इतिहास के निर्णायक मोड़ पर खड़ी है। इस बार के विधानसभा चुनाव ने न केवल नेताओं और दलों को बल्कि पूरे देश के राजनीतिक विश्लेषकों को चौंका दिया है। आजादी के बाद पहली बार राज्य में मतदान प्रतिशत में इतनी बड़ी छलांग देखी गई है। गांव-गांव,शहर-शहर मतदाताओं की अभूतपूर्व सक्रियता ने यह साबित कर दिया कि बिहार अब केवल राजनीति का उपभोक्ता नहीं, बल्कि परिवर्तन का निर्माता बन चुका है। यह केवल एक चुनाव नहीं, बल्कि एक राजनीतिक चेतना का उदय है।

मतदान का उत्सव और जनता की जागरूकता : बिहार की जनता ने इस बार जो उत्साह दिखाया है, वह अभूतपूर्व है। लंबी कतारें,. इन सबके बावजूद मतदान प्रतिशत में जबरदस्त वृद्धि दर्ज की गई। इस बार महिलाओं की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। ग्रामीण इलाकों में महिलाएं बड़ी संख्या में मतदान केंद्रों तक पहुंचीं। इसका अर्थ केवल यह नहीं कि वे लोकतंत्र में भाग ले रही हैं, बल्कि यह कि वे अब अपने जीवन की प्राथमिकताओं को खुद तय करना चाहती हैं।

युवाओं ने भी इस बार अभूतपूर्व भागीदारी की। एक समय था जब बिहार के युवा मतदान के बजाय पलायन को प्राथमिकता देते थे। लेकिन अब वे लौट रहे हैं, मतदान कर रहे है और अपने राज्य के भविष्य पर चर्चा कर रहे हैं। मजदूर वर्ग ने भी अपने मौन से व्यवस्था को हिलाया है। यह वही वर्ग है जो दशकों से रोजी-रोटी के लिए दूसरे राज्यों में भटकता रहा, पर अब उसने अपने "मत" से संदेश दिया है कि "हमारा जीवन अब दूसरों की नीतियों पर नहीं चलेगा।"

यह बदलाव अचानक नहीं आया। यह उस असंतोष का परिणाम है जो पिछले कई दशकों से धीरे-धीरे सुलग रहा था। लाखों बेरोजगार युवा, शिक्षक अभ्यर्थी, ठेके पर काम करने वाले मजदूर और पलायन से टूटे परिवार अब अपने दर्द को "मुद्दे" में बदल रहे हैं। यह एक बड़ी सामाजिक क्रांति का संकेत है।

बिहार की जनता अब यह समझ चुकी है कि जातीय नारे और भावनात्मक भाषण केवल चुनाव जीतने का हथियार हैं, शासन सुधारने का नहीं। यही कारण है कि इस बार मतदाता ने "नेता की जाति" नहीं, बल्कि "नीति की गुणवत्ता" को देखा है।

जनसुराज की एंट्री- राजनीति में एक नया प्रयोग : इस बार के चुनाव ने एक नया नाम उभारा है . जनसुराज। प्रशांत किशोर द्वारा संचालित यह अभियान न किसी पारंपरिक दल का हिस्सा है, न किसी जातीय गठबंधन का। इसके बावजूद, इसने बिहार के राजनीतिक समीकरणों में अभूतपूर्व हलचल मचा दी है। जनसुराज की असली ताकत उसके विचार की सादगी और संदेश की स्पष्टता में है। रोजगार, शिक्षा और पलायन-तीन ऐसे मुद्दे जिन्हें वर्षों से हर सरकार ने अपने घोषणापत्र में तो रखा, पर कभी प्राथमिकता नहीं दी। जनसुराज ने इन मुद्दों को केवल भाषण में नहीं, बल्कि जनता के संवाद में शामिल किया। गांव-गांव में प्रशांत किशोर की "जनसंवाद यात्रा" ने यह साबित किया कि जनता आज भी उन नेताओं को सुनना चाहती है जो उसके बीच जाते हैं, जो उसकी भाषा बोलते है। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार,

जनसुराज ने बिहार में एक नई "आइडियोलॉजिकल पॉलिटिक्स" की नींव रखी है . जो न हिंदू-मुस्लिम में बंटी है, न जातीय खांचों में। इसने यह दिखाया कि बिहार अब "राजनीतिक ठेकेदारों" से आगे बढ़कर "नीतिगत विकल्पों" की तलाश में है।

मतदाता का बदला हुआ मनोविज्ञान : बिहार के इस चुनाव की एक बड़ी विशेषता है मतदाताओं की चुप्पी। यह चुप्पी सामान्य नहीं थी . यह गहरी सोच का प्रतीक थी। लोग खुलकर यह नहीं बता रहे थे कि वे किसे वोट देंगे, लेकिन उनके सवाल साफ थे- "रोजगार कहां है?", "शिक्षा क्यों पिछड़ी?",उन्हें सरकार से अधिक की आशा है ?"

मतदाता अब केवल सरकार गिराने के लिए वोट नहीं दे रहा, बल्कि यह तय करने के लिए वोट दे रहा है कि राज्य किस दिशा में जाएगा। बिहार की यह चुप्पी सत्ता के गलियारों में सबसे बड़ा भय बन चुकी है, क्योंकि इस चुप्पी में "सजगता" छिपी है।

जनादेश का दूरगामी प्रभाव- 2029 की छाया : इस बार का बिहार चुनाव केवल एक राज्यीय मुकाबला नहीं, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करने वाला चुनाव बन सकता है।

वर्ष 2029 के लोकसभा चुनाव पर इस जनादेश का असर निश्चित रूप से पड़ेगा। बिहार हमेशा से भारतीय राजनीति का बैरोमीटर रहा है । यहां का रुझान पूरे देश के मूड को प्रभावित करता है। 1974 में जयप्रकाश नारायण के आंदोलन से लेकर 1990 में लालू प्रसाद यादव के सामाजिक न्याय के उभार तक, हर युग की शुरुआत बिहार से हुई। अब यदि 2025 में बिहार फिर करवट लेता है, तो 2029 में देश की राजनीति में नया अध्याय शुरू हो सकता है।

महिलाएं और युवा-लोकतंत्र की नई रीढ़ : इस बार के मतदान में महिलाओं और युवाओं की भूमिका निर्णायक रही है। बिहार की महिलाएं पहले भी मतदान में सक्रिय थीं, लेकिन इस बार उन्होंने "सत्ता-परिवर्तन" नहीं, बल्कि "सोच-परिवर्तन" का संदेश दिया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, महंगाई और सुरक्षा जैसे मुद्दे उनकी प्राथमिकता में है। वहीं युवा पीढ़ी, जो पहले राजनीति से निराश थी, अब सक्रिय भूमिका में है। वे अब "नौकरी की मांग" को राजनीति के केंद्र में ला रहे है। सोशल मीडिया से लेकर गांव की चौपाल तक, युवा अब एजेंडा तय कर रहे है। यही कारण है कि पारंपरिक दलों के लिए यह चुनाव सहज नहीं रहा।

यह चुनाव सोच का चुनाव है : बिहार का यह चुनाव किसी सरकार को गिराने या बनाने का नहीं, बल्कि सोच बदलने का चुनाव है। यह उस जनता का जनादेश है जिसने यह तय कर लिया है कि अब केवल वादों से नहीं, बल्कि कार्य से आंका जाएगा। अब "नाम" नहीं, "काम" चलेगा। जनसुराज का उभार, महिलाओं का बढ़ता मतदान, युवाओं की भागीदारी, जाति समीकरण का टूटना,ये सब संकेत है कि बिहार अब एक नए राजनीतिक युग में प्रवेश कर चुका है।

जागता बिहार : चौदह नवंबर को जब नतीजे आएंगे, तो यह स्पष्ट होगा कि जनसुराज ने क्या पाया और क्या खोया। पर एक बात निश्चित है कि बिहार की जनता अब पहले जैसी नहीं रही। उसने अपने वोट से एक स्पष्ट संदेश दिया है ।"हम अब जाग चुके हैं।" यह चुनाव दिखाता है कि लोकतंत्र की असली ताकत सत्ता में नहीं, जनता की समझ में है। जब जनता अपने मुद्दे खुद तय करती है, तो लोकतंत्र जीवित रहता है।

लोकतंत्र में असली सुराज तभी आएगा जब जनता अपने मुद्दों को खुद तय करेगी। और इस बार बिहार ने वही कर दिखाया है।

'दानिश महल' और उर्दू जबान

अहमद मुबीन

उर्दू ज़बान और लखनऊ का रिश्ता बहुत पुराना है, शहर ए अदब जहाँ चलने वाली हवाएं भी तवारीख़ पर बातें करती है। लखनऊ के अदब और तहज़ीब ने अपनी जमक से उर्दू ज़बान को रोशन किया। लखनऊ से उर्दू ज़बान के अखबार और रिसाले पब्लिश हुआ करते थे। मुल्क में उर्दू के तीन गढ़ हुआ करते थे, दिल्ली , हैदराबाद और लखनऊ। लखनऊ स्कूल की उर्दू को सबसे आला उर्दू में शुमार था। जो हज़रात तहज़ीब के शहर लखनऊ से वाबस्ता है तो वो 'दानिश महल' से भी वाबस्ता ज़रूर होंगे। लखनऊ के मशहूर बाज़ार अमीनाबाद में झंडे वाला पार्क के सामने वाक़ए 'दानिश महल' कुतुबखाना मुल्क की आज़ादी से पहले 1939 में उर्दू ज़बान की किताबो और रिसालों के मरकज़ के तौर पर जाना जाता था। जनाब नसीम अहमद साहब ने इसको 1939 में क़ायम किया था। और मौजूदा वक्त में उनके बेटे नईम अहमद साहब इसके ज़िम्मेदार है। नईम साहब की ज़बानी इस कुतुबखाने का नाम बाबा ए उर्दू मौलवी अब्दुक हक़ साहब ने 'दानिश महल' रखा था। जिसका मतलब पैलेस ऑफ उर्दू होता है।

कुतुबखाने दानिश महल का उर्दू ज़बान से वैसा ही वास्ता है जैसा एक माँ का अपनी औलाद से होता है। ये उर्दू ज़बान से मोहब्बत का नतीजा है कि अहम मार्केट में आज भी दानिश महल ने अपना इब्तिदाई मक़सद उर्दू ज़बान की तरक़्क़ी को नही बदला, वरना उर्दू ज़बान की कम हुई रीडरशिप ने उर्दू की नई किताबो और रिसालों की छपाई बहुत कम हो गई है।

नईम साहब बताते है कि यहाँ पर हरदिल अज़ीज़ शायर जोश मलीहाबादी से लेकर फ़िराक़ गोरखपुरी, राम लाल, अब्दुल माजिद दरियाबादी, आले अहमद सुरूर, मौलवी अब्दुल हक़ जैसे मशहूर अदबी शक़्सीयतें इस किताब घर पर इब्तिदा से आती रहीं आज की नई नस्ल से गुज़ारिश है कि वो मौक़ा मिले तो दानिश महल ज़रूर होकर आयें, दानिश महल में मीर तक़ी मीर, मौलाना हसरत मोहानी, सर सैय्यद अहमद खान, मीर अनीस जैसी इल्मी रूहों वाले दबीरों कि लगी हुई तस्वीरों को देखे, जो इस कुतुबखाने के मयार को खुद बखुद बयां कर देती है। जब इसकी शुरूआत हुई तो ये उर्दू किताबों के मशहूर पब्लिशिंग हाउस का आउटलेट हुआ करता था। एक दौर था जब यहां पर शहर के अदबी दिग्गज, शायरों, इतिहासकार आते थे और मुख़्तलिफ़ मौज़ू पर गुफ्तगू किया करते थे । उस दौर में उर्दू का तालुक किसी खास मज़हब या तबके से नही था, चाहे वो हिन्दू हो, सिख हो, ईसाई हो या मुसलमान सबकी ज़बान उर्दू हुआ करती थी।

तब शायर अपने नाम से ज़्यादा से ज़्यादा तखलुस से जाने जाते थे। गुज़िश्ता दिनों दानिश महल जाने पर वहाँ बैठे हुए उर्दू अदब से जुड़े जनाब मंजूर परवाना साहब से हुई गुफ़्तगू में दानिश महल की तारीख की मालूमात हुई। उन्होंने उर्दू ज़बान पढ़ने वाले लोगों की तादाद में हो रही लगातार कमी पर अफ़सोस का इज़हार करते हुए कहा कि जब तक ज़बान को रोज़ी रोटी से नही जोड़ा जायेगा, तब तक उसकी तरक़्क़ी नही हो सकती। चाहे आप कितने ही इदारे उर्दू की तरक़्क़ी के लिये क्यों न बना दें। आज के इस बदलते डिजिटल दौर में उर्दू ज़बान और अदब को ज़िंदा रखना है तो उसको प्रैक्टिकल भी बनाना होगा । लॉक डाउन का असर तमाम पब्लिशिंग हाउस पर पड़ा, वो आज भी देखने को मिलता है ।

उ प्र सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की तरफ से प्रकाशित उर्दू मासिक 'नया दौर ' और उत्तर प्रदेश उर्दू अकैडमी का माहनामा 'खबर नामा' जैसे रिसाले वक़्त पर अपना अंक पब्लिश नही कर पा रहे है।

दानिश महल वो जगह है जहाँ पर उर्दू ज़बान की न सिर्फ़ किताबे मिलती थी बल्कि उर्दू अदब से जुड़े लोगों की ये दर्सगाह रही है। वैसे तो उर्दू की जो किताब में ढूंढ रहा था वो मुझे वहां मिल नही पाई। मगर उर्दू ज़बान के मरकज़ रहे दानिश महल में लगी उर्दू अदब के नामवर शायरों की तस्वीरें ये बायां कर रही थी कि उर्दू ज़बान की तरक़्क़ी में दानिश महल का कितना अहम किरदार रहा है। ये किताब घर उर्दू अदब की विरासत है और अपनी विरासत को बचाये रखना नई जनरेशन की अहम ज़िम्मेदारी है। इसलिये उर्दू बोलो, उर्दू लिखो और उर्दू पढ़ो आखिर में मशहूर शायर मंसूर उस्मानी साहब के इस शेर के साथ मै अपनी बात ख़त्म कर रहा हूं।

जहां जहां कोई उर्दू जबान बोलता है।
वहीं वहीं मेरा हिन्दोसान बोलता है।।
मेरी जबान मेरी तहजीब छीनने वाला।
कमाल देखिये मेरी जबान बोलता है।।

(मनसूर उस्मानी साहब)

अपरिग्रह

डॉ. ज्ञानानंददास स्वामी

अपरिग्रह भारतीय दर्शन का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'आवश्यकता से अधिक ग्रहण न करना' या 'संपत्ति अथवा वस्तुओं के प्रति आसक्ति का त्याग'। यह केवल भौतिक वस्तुओं के संग्रह से दूरी बनाए रखना नहीं है, बल्कि मन-वचन-कर्म से आसक्ति के भावों से भी ऊपर उठना है। पतंजलि के योग दर्शन के अनुसार, जब योगी अपरिग्रह का अभ्यास करता है, तो उसके भीतर बोध जाग्रत होता है कि जो कुछ भी है, वह क्षण भंगुर है, और किसी के भी स्थायी स्वामित्व में नहीं है। गीता में इसी योगी के लिए 'त्यक्तसर्वपरिग्रह' कहा गया है। अपरिग्रह का अभ्यास केवल साधु-संतों या योगियों के लिए नहीं है। यह गृहस्थ जीवन में भी उतना ही आवश्यक और उपयोगी है। जब हम वस्त्र, भोजन, धन या अन्य संसाधनों का अति संग्रह करते हैं, तो हम दूसरों के हिस्से की चीजें ले लेते हैं। जैसे एक व्यक्ति सैकड़ों जोड़ी जूते रखता है, जबकि किसी के पास एक जोड़ी भी नहीं। यह सामाजिक विषमता का कारण बनता है। अगर हर व्यक्ति केवल अपनी आवश्यकता भर की चीजें रखे तो समाज अधिक संतुलित और न्यायपूर्ण बन सकता है। गांधी जी मानते थे, 'धरती सबकी आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ है, लेकिन किसी एक के लालच को नहीं।' आज के समय में जब जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय संकट और उपभोग की संस्कृति बढ़ रही है, अपरिग्रह का मूल्य और भी बढ़ गया है। उपभोक्तावाद ने मनुष्य को लोभी, असंतुष्ट और तनावग्रस्त बना दिया है। हम जितना अधिक संग्रह करते हैं, उतना ही भय भी हमें सताता है चोरी का, नष्ट होने का, खो जाने का। अधिक वस्तुएं हमें सुख नहीं देतीं, बल्कि हमारी चिंता का कारण बनती हैं। ऐसे में, अपरिग्रह न केवल आध्यात्मिक समाधान है, बल्कि मानसिक शांति, सामाजिक समरसता और पारिस्थितिक संतुलन का भी आधार है। महंत स्वामी महाराज यह सिखाते हैं कि सच्चा सुख संग्रह में नहीं, बल्कि त्याग में है। जो जितना कम चाहता है, वह उतना ही अधिक स्वतंत्र होता है। अपराध, संघर्ष और विषमता से ग्रस्त इस संसार को यदि किसी मूल्य की सबसे अधिक आवश्यकता है, तो वह है-अपरिग्रह!

रीडर्स मेल

ऑनलाइन गेमिंग बाजार ध्वस्त

सरकार ने एक बड़ा फैसला लेते हुए प्रमोशन एंड रेग्युलेशन ऑफ ऑनलाइन गेमिंग बिल, 2025 को लागू कर लगभग 3.8 अरब डॉलर के ऑनलाइन गेमिंग बाजार को ध्वस्त कर दिया है। हुकूमत ने अपने राजस्व को दरकिनार कर जनहित में निर्णय लिया है, जो निःसंदेह सराहनीय है। कम समय में अधिक पैसा कमाने के लालच में हर रोज न जाने कितने लोग अपनी जमापूंजी बर्बाद कर बैठते थे। न जाने कितने कर्ज के दलदल में फंस कर आत्महत्या को मजबूर हो गए। ऑनलाइन जुए की लत कितनी खतरनाक है, इसका एक मामला सुल्तानपुर में देखने को मिला जहां एक शिक्षक ने महज नौ महीने में सवा करोड़ रुपये गंवा दिए। दिल दहला देने वाली एक खबर इंदौर में भी देखने को मिली जहां तेरह साल के एक बच्चे ने इसलिए आत्महत्या कर ली कि ऑनलाइन मनी गेम में तीन हजार रुपये हार गया था। ऑनलाइन गेम्स प्रतिबंधित होने से भले ही इनसे जुड़े दो लाख लोगों का रोजगार छिन गया है पर यह निर्णय उन करोड़ों परिवारों के लिए संजीवनी साबित होगा जिन्हें ये गेम्स धीरे-धीरे निगल रहे थे।

शिवेन्द्र सिंह चौहान, अम्बेडकरनगर, उप्र

निजता का अधिकार जरूरी

हर नागरिक को निजता का अधिकार है, इसलिए आम लोगों का डाटा संरक्षण करना सरकार का कर्तव्य है। आज के दौर में डाटा सुरक्षा एक अनिवार्य मुद्दा बन गया है। हमारे दैनिक दिनचर्या में साइबर स्पेस का दायरा बढ़ता जा रहा है। एक ओर साइबर पर हमारी निर्भरता बढ़ती जा रही है, तो दूसरी ओर डाटा संरक्षण के अभाव में साइबर अपराध का दायरा बढ़ता जा रहा है। आज सोशल मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। सरकार को स्वदेशी डिजिटल मंच विकसित करना चाहिए। कई बार बच्चों की लापरवाही से डाटा की चोरी हो जाती है। देश में बच्चों द्वारा इंटरनेट का इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है। सरकार को डाटा संरक्षण के लिए कड़े कानून बनाने चाहिए।

राज शेखर, ई-मेल से

सोशल मीडिया और अराजकता

आज की तारीख में सोशल मीडिया के यूजर की संख्या हर सेकंड बढ़ रही है। लोग अपनी अभिव्यक्ति का सशक्त मंच सोशल मीडिया को मान रहे हैं। इस पर प्रतिबंध स्वतंत्रता पर प्रतिबंध का पर्याय होगा। इस बात का ज्वलंत उदाहरण नेपाल है। दूसरी ओर, सोशल साइट्स के दुरुपयोग एवं सरकार के लिए डिजिटल संप्रभुता वाली बात भी आती है, जिसमें आम लोगों के व्यवहार प्रभावित होने के साथ-साथ सरकार द्वारा नियंत्रित परिवेश की बात भी शामिल हो जाती है। सोशल मीडिया के दुरुपयोग के पश्चात देश में त्राहिमाम जैसी स्थिति उत्पन्न होना नई बात नहीं रह गई है। किसी भी साइट पर विद्वेष जैसी बातें विस्तृत रूप में प्रचारित-प्रसारित नहीं हो पाएं, इसके लिए नियंत्रण तो सरकार के पास ही होना चाहिए। सोशल मीडिया पर प्रतिबंध के बाद नेपाल में जो हालात हो गए हैं, यह अपने आप में सही नहीं है। शांति, सहिष्णुता के वातावरण में लोगों की आजादी के साथ-साथ किसी प्रकार की तल्खी न आवे, सरकार को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।

बलविंदर सिंह, पंजाब

letter.editorsahara@gmail.com

मुनक्का के नियमित सेवन से सौंदर्य में निखार

- मुनक्का को काली किशमिश भी कहा जाता है, जो एक तरह का सूखा हुआ अंगूर है। यह विटामिन, फाइबर, मिनरल और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है, जिसका सेवन करने से बीमारियों से लड़ने में मदद मिलती है
- नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन, अमेरिका की फरवरी, 2022 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के मुताबिक, किशमिश (मुनक्का) में लिपिड (वसा) कम करने के और एंटीऑक्सीडेंट्स गुण होते हैं, जो स्किन के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने, त्वचा की रंगत में सुधार लाने और उम्र बढ़ने के लक्षणों को कम करने में मदद कर सकते हैं

(मीडिया इनपुट्स)

दिनोंदिन राजनीतिक उथल-पुथल, नेपाल में अराजकता इस कड़ी में हालिया घटना है, से घिरा भारत लोकतंत्र का प्रकाश स्तंभ बना हुआ है। अमेरिका की शह पर हसीना के देशनिकाले के बाद बांग्लादेश मुस्लिम कट्टरपंथियों की गिरफ्त में है। म्यांमार में अमेरिकी मदद से जुंटा-विरोधी विद्रोही पूर्वोत्तर भारत में अस्थिरता का खतरा मंडराए हुए हैं। पाकिस्तान नाकाम देश है, जहां सेना राजनीति पर हावी है।

ब्रह्म चेलानी, सामरिक चिंतक
@Chellaney

आवारा सही पर दोस्त भरोसेमंद है!

शंभू नाथ शुक्ल

वर्ष 1960 में जब मेरी उम्र पांच वर्ष की थी, तब गांव में एक कुत्ते ने मुझे दौड़ाया और मेरी टांगों को सूंघा तथा वापस चला गया। लेकिन डर के कारण मै रोने लगा। चाचा लोग घबड़ाये और तहसीलदार से मेरे लिए कुत्ता काटे का टीका लिखवा लाए। उन दिनों तहसीलदार की तस्दीक़ पर ही अस्पताल में 14 टीके लगाए जाते थे। एक-एक फ़िट लंबे ये टीके सिर्फ ज़िला अस्पतालों में लगते। पिताजी तब कानपुर शहर में रहते थे और मां तथा हम बच्चे गांव में। चाचा मुझे पिताजी के पास छोड़ गए। हर सप्ताह जब परेड अस्पताल जाते तो उस टीके का आकार देख कर रुलाई फूटती किंतु कोई चारा नहीं था। कम्पाउण्डर पेट में वह सुई घुसेड़ ही देता। पिताजी के काम पर जाने के बाद घर में अकेला रहता तो मूँगफलियाँ चबाया करता। कुछ दिनों बाद मेरी नींद ग़ायब हो गई और शरीर पीला पड़ने लगा। पिताजी मेडिकल कॉलेज अस्पताल (हैलट अस्पताल) ले गये तो पता चला कि मुझे कुत्ते ने काटा ही नहीं था। मगर तब तक सात इंजेक्शन लग चुके थे. अब चूँकि कुत्ते ने काटा नहीं था पर टीके लग गये, इसका ख़ामियाज़ा उस बालपन में भुगतना पड़ा। मुझे Epilepsy हो गई, घर वालों ने मेरे तालाब या नहर में अकेले जा कर नहाने पर रोक लगा दी। बचपन से ही नींद की गोली दी जाने लगी और आयरन के सिरप भी क्योंकि ब्लड में लाल रक्त कण कम हो गए थे। शरीर का इम्यून सिस्टम गड़बड़ा गया। कई महीने लगे मुझे चंगा होने में। इसके बाद से तो मै कुत्तों से ऐसा डरने लगा कि किसी के घर यदि कुत्ता, डॉगी या कोई पॉपी पला है तो मै भरसक कोशिश करता कि उसके घर न जाना पड़े। हालाँकि अब चिकित्सा विज्ञान बहुत विकसित है और कुत्ते काटने पर तीन या पांच सुइयाँ ही लगती है। कोई भी प्राइवेट डॉक्टर इन्हें लगा सकता है। पर आज से 65 वर्ष पहले कुत्ते द्वारा काट लेने का मतलब था हाइड्रोफोबिया का शिकार हो जाना। इसका मरीज़ बूँद-बूँद पानी को तरस कर मर जाता था। आज तो एंटी रैबीज डोज़ की टेबलेट्स भी आने लगी है।

कुत्ता और मनुष्य की दोस्ती पुरानी : मानव सभ्यता की शुरुआत से ही कुत्ते मनुष्य के दोस्त रहे है। संभवतः मनुष्य का पहला पालतू पशु कुत्ता ही था। जब कृषि सभ्यता का विकास नहीं हुआ था तब मनुष्य भी अन्य चौपायों की तरह छोटे जानवरों का शिकार करता। चूँकि उसके सिर्फ दो पाँव थे इसलिए दौड़ने की उसकी क्षमता बहुत कम थी। ऐसे में कुत्ते मनुष्य की मदद करते। वे झपट कर शिकार को दबोच लेते और अपने नुकीले दांतों तथा पंजों से उसे उधेड़ देते। मनुष्य को आग का ज्ञान था, इसलिए वह उस शिकार को भूनता और उसके मांस से अपना पेट भरता। इसके बाद मनुष्य ने भेड़ें पालनी शुरू की तब यह कुत्ता ही उन भेड़ों और बकरियों की भेड़ियों से रक्षा करता। इसलिए कुत्ते के बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना मुश्किल है। शायद इसी कारण हमारी पुराण गाथाओं में कुत्ता मनुष्य का भरोसेमंद मित्र बताया गया है।

महाभारत में कुत्ता : महाभारत में युधिष्ठिर के एक प्रिय पशु कुत्ते का वर्णन है। इस कुत्ते का नाम युधिष्ठिर ने धर्म रखा था। महाभारत में बताया गया है कि अनेक वर्षों तक राज करने के बाद जब पांडवों ने स्वर्गारोहण के बारे में सोचा, तब सभी भाइयों, द्रोपदी और अपने कुत्ते धर्म के साथ युधिष्ठिर सुमेरुपर्वत पर चढ़ते हुए स्वर्ग की तरफ़ जाने का अभियान करने लगे। इस कथा के अनुसार सबसे पहले द्रोपदी भूमि पर गिरीं क्योंकि वे अपने पाँचों पतियों में से सिर्फ अर्जुन पर विशेष अनरक्त रहती थीं। उनके बाद सहदेव गिर पड़े क्योंकि उन्हें अपने पांडित्य पर अभिमान था। फिर नकुल का नम्बर आया। नकुल को अपने सुदर्शन होने पर गर्व था। अर्जुन गिरे क्योंकि अर्जुन को लगता था कि महाभारत युद्ध सिर्फ उनके और उनके धनुष गांडीव के बूते ही जीता गया। अंत में भीम भी गिर पड़े तो भीम ने युधिष्ठिर को पुकारा और पूछा, भैया बताते तो जाओ, मै क्यों गिरा? युधिष्ठिर ने बिना पलटे जवाब दिया क्योंकि तुम पेटू थे। लेकिन युधिष्ठिर और उनका कुत्ता सशरीर स्वर्ग लोक के दरवाज़े पर पहुंचे। स्वर्ग के राजा इंद्र ने उनकी सशरीर स्वर्ग में आने पर स्वागत हेतु रथ भेजा था। किंतु युधिष्ठिर ने उस रथ पर चढ़ने के लिए पहले अपने कुत्ते धर्म को आमंत्रित किया तो रथवान ने आपत्ति की। उसने कहा, नहीं महाराज स्वर्ग में कुत्ते का प्रवेश वर्जित है। इतना सुनते ही युधिष्ठिर ने कहा कि मै भी रथ पर नहीं चढूँगा। यह कुत्ता अपने धर्म (कर्ततव्य) से कभी विचलित नहीं हुआ इसीलिए वह यहाँ तक सशरीर पहुँचा है। यदि इसे प्रवेश नहीं मिलेगा तो मै भी स्वर्ग लोक में कदम नहीं रखूँगा। तब कुत्ते ने साक्षात धर्मराज का अपना स्वरूप दिखाया और कहा, युधिष्ठिर मै तुम्हारे सत्य और धर्म की परीक्षा ले रहा था, तुम खरे उतरे हो। यह बोल कर वह कुत्ता विलीन हो गया।

रामायण में कुत्ता प्रसंग : इसी तरह रामायण में भी एक कुत्ते द्वारा राजा राम से न्याय माँगने का प्रसंग है। इस कथा में बताया गया है कि एक कुत्ता राजा राम के दरबार में न्याय की गुहार लगाते हुए आता है और कहता है कि अमुक ब्राह्मण ने मुझे अकारण पत्थर से मारा है। महाराज मुझे न्याय दिया जाए। राजा रामचंद्र जी का सारा दरबार हतप्रभ। कुत्ते को न्याय देने के लिए ब्राह्मण को दंड! पर कुत्ता हठ किये था। अंत में राम ने पूछा हे श्वान श्रेष्ठ, यह तो बताओ इस ब्राह्मण ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? कुत्ता कहता है, इसने मुझे पत्थर से मारा। राम जी ने उस ब्राह्मण को बुलाया और पूछा तो ब्राह्मण ने कहा, हां राजन मैने इसे मारा। मै एक भिक्षुक ब्राह्मण हूँ, उस दिन मुझे भिक्षा नहीं मिली। मै भूखा था तभी अचानक मुझे देख कर यह कुत्ता भौंकने लगा, मुझे ग़ुस्सा आ गया और मैने इसे पत्थर मारा राजा रामचंद्र ने कुत्ते से पूछा, कि तुम क्यों भौंके? वह बोला, राजन भौंकना तो मेरी प्रवृत्ति है, मेरा धर्म है। दरबार में किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था, कि कैसे न्याय किया जाए। अंत में रामचंद्र जी उस कुत्ते से पूछते है, तुम ही बताओ मै इस कुत्ते को क्या दंड दूँ? वह कुत्ता कहता है, भगवन, इस ब्रह्मण को अमुक मठ का महंत बना दीजिए। पूरा दरबार चौक गया। कुत्ता कैसा न्याय चाह रहा है! बाद में वह कुत्ता कहता है, प्रभु मै पिछले जन्म में उसी मठ का महंत था। मैने वहाँ रह कर लोक कल्याण का कोई काम नहीं किया। बस खाता और मस्त पड़ा रहता, नतीजा इस जन्म में मुझे कुत्ते की योनि मिली। ये दोनों मिथकीय कथाएँ है।

कुत्ते की जगह पर मनुष्य ने क़ब्ज़ा किया! : जो लोग कुत्ते के मनोविज्ञान को समझते है, उनका कहना है कि कुत्तों में मनुष्य की तुलना में आसन्न संकट को समझ पाने की क्षमता अधिक होती है। उसकी सूंघने की शक्ति तीव्र है, वह ध्वनि तरंगों को पकड़ लेता है। इसके अलावा वह भौंक कर अपनी क्षेत्रीय सीमा भी बताता है कि यह उसकी सीमा है और इसमें कोई और अतिक्रमण कर रहा है। लेकिन पशु चिकित्सक डॉ. जेबी सिंह बताते है कि कुत्ते ने कभी यदि कभी आपकी गाड़ी पर पेशाब किया है, तो जब भी वह गाड़ी उसके क़रीब से गुजरेगी वह उस गाड़ी के पीछे भागेगा। एक कुत्ते को दिन भर में 25 किमी की दौड़ उसके शरीर के अनुसार अनिवार्य है।

फ़्लैट में कुत्ता और रौद्र होगा : आजकल महानगरों में फ़्लैट्स में रहने वाले लोग भी पाल लेते है। सीमित दायरे के फ़्लैट में क़ैद कुत्ते अजनबी को देखते ही झपट पड़ते है। इसके अतिरिक्त कुत्ते जैसा पेट (पालतू पशु) कभी भी लिफ़्ट पर चढ़ने का आदी नहीं होता और अक्सर वह लिफ़्ट में हिंसक हो जाता है। सुप्रीम कोर्ट मोहल्लों में बढ़ते स्ट्रीट डॉग को ले कर चिंतित है। यह अच्छी बात है मगर स्ट्रीट डॉग म्यूनिस्पैलिटी की समस्या है। और देश की किसी भी म्यूनिस्पैलिटी ने इस समस्या को ख़त्म करने का कोई उपाय नहीं किया। कुत्तों को मार देने से या उन्हें शेल्टर होम में क़ैद करने से कुत्तों की संख्या कभी ख़त्म नहीं होगी।

पेट्स की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए : कुत्तों को बधिया करना समस्या एक हल है किंतु म्यूनिस्पैलिटी इस पर अमल करेंगी, इस पर संदेह है। कुत्ता प्रेमी जन कुत्तों को केतु का अवतार मानते है और उनके सफ़ाये में यह धार्मिक ख़याल आड़े आता है। कुछ लोग स्ट्रीट डॉग को रोटी या बिस्किट्स डालते रहते है, इसलिए कुत्ता परक जाता है। ऐसे में यदि वह भूखा हुआ और कोई भी शख़्स स्ट्रीट डॉग के झुंड के बीच से निकला तो वे हमलावर हो उठते है। अमेरिका, कनाडा और योरोप के देशों ने कुत्तों से निजात पाने के लिए स्ट्रीट डॉग को बधिया कर दिया। चूँकि कुत्ते की उमर 12-13 साल की ही होती है, इसलिए धीरे-धीरे उनकी संख्या घटने लगी। अलबत्ता वहाँ घरों में लोग कुत्ते पालते है, पर उन्हें कुत्ते की पूरी ज़िम्मेदारी लेनी पड़ती है।

लुटियन ज़ोन में भी आवारा कुत्ते : इसलिए वहाँ कुत्ते अब समस्या नहीं रहे। सर्वाधिक मुश्किल था, चीन में। जहां कुत्तों के कारण शंघाई और बीजिंग जैसे शहरों में रात-बिरात निकलना मुश्किल था। मगर वहाँ अब कहीं भी स्ट्रीट डॉग नहीं दिखते। यद्यपि लुटियन ज़ोन में आवारा कुत्तों की गिनती कभी नहीं की गई, पर वहाँ रहने वाले ऐसी शिकायत करते रहते है।

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
● राष्ट्रीयता ● कर्तव्य ● समर्पण

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **जिया कादरी** द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन द्वारा हिन्दुस्तान मीडिया वेन्चर्स लिमिटेड प्रेस, मौजा-दरियापुर, पुलिस स्टेशन-शाहपुर, दानापुर, पटना से मुद्रित तथा चतुर्थ तल, सहारा इण्डिया विहार, बोरिंग रोड क्रासिंग, पटना से प्रकाशित। । स्थानीय संपादक - संजय त्रिपाठी *।

पटना कार्यालय- 3911448/417/454/422, **फैक्स :** 2535935,2520760 **विज्ञापन**-3911455/434, **प्रसार**- 3911451/428

वर्ष - 20, अंक 6828

आर.एन.आई. सं. -बीआईएचएचआईएन/2006/18082 Postal Reg. No. : R-10/NP-50/06-07

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु उत्तरदायी

प्रत्याशियों ने भी किया मतदान

रामगढ़ ग्रामीण। जिले के चारों विधानसभा क्षेत्र में मतदान के दौरान विभिन्न पार्टियों के प्रत्याशियों के द्वारा भी मतदान किया गया और आम मतदाताओं से वोट डालने की अपील भी की गई भाजपा प्रत्यासी रामगढ़ में अशोक सिंह बहुजन समाज पार्टी के सतीश सिंह उर्फ पिंटू यादव तथा राजद प्रत्याशी अजीत सिंह अपने भाई सांसद सुधाकर सिंह के साथ मतदान किया।

—— एक रिपोर्ट

संक्षिप्त खबरें

गया जिले के दसों विस क्षेत्रों में मतदाताओं में उल्लास देखा गया

गयाजी। गया जिले दसों विधानसभा में मतदान करने के लिए मतदाताओं में उल्लास देखे गए। खासकर महिलाओं व बुजुर्गों में काफी उल्लास देखा गया। गयाजी विधानसभा के विभिन्न बूथों पर

निरीक्षण करते जिला निर्वाची पदाधिकारी।

शांतिपूर्ण तरीके से मतदान शुरू हुआ। मतदातागण पंक्ति में खड़े रहकर अपनी बारी का इंतजार करते रहे। सभी बूथों पर संरक्षा के कड़े इंतजाम किये गये थे। राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के प्रदेश अध्यक्षसह भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता लोकतंत्र के इस महापर्व पर गया जी विधानसभा क्षेत्र के 200 नंबर बूथ पर जाकर अपने मताधिकार का प्रयोग किया। गुरारू/गुरुआ से एसएनबी के अनुसार बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के दूसरे चरण के तहत मंगलवार की सुबह सात बजे से गुरुआ विधानसभा क्षेत्र के सभी बूथों पर मतदान की प्रक्रिया शांतिपूर्ण माहौल में प्रारंभ हुई। मतदान शुरू होने से पहले मतदान पदाधिकारियों ने पोलिंग एजेंटों की उपस्थिति में मॉक पोल कर ईवीएम की जांच की। इसके बाद विधिवत रूप से मतदान कार्य आरंभ हुआ। टिकारी से एसएनबी के अनुसार टिकारीः विधानसभा क्षेत्र (संख्या 231) में मंगलवार को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शांतिपूर्ण मतदान संपन्न हुआ। दोनों प्रखंड टिकारी और कोंच के बूथों पर मतदाताओं ने सुबह 7 बजे से ही मतदान केंद्रों पर पहुंचना शुरू कर दिया था। महिलाओं और पुरुषों की लंबी कतारों से माहौल उत्साहपूर्ण रहा। इस बार टिकारी विधानसभा में 12 प्रत्याशी मैदान में है।

कैमूर में भय मुक्त माहौल में शांतिपूर्ण ढंग से विधान सभा चुनाव संपन्न

भभुआ/रामगढ़। भय मुक्त माहौल में शांतिपूर्ण ढंग से विधानसभा चुनाव संपन्न हो गया जिले के चारों विधानसभा क्षेत्र में चुनाव संपन्न कराए जाने को लेकर कुल 1484 मतदान केंद्र बनाए गए थे जानकारी के मुताबिक कहीं से भी किसी प्रकार की अप्रिय घटना की सूचना नहीं थी लोगों ने लाइन में लगकर शांतिपूर्ण ढंग से अपने

मतों का प्रयोग किया मतदान केंद्र पर तैनात सुरक्षा कर्मी और पुलिस वालों के द्वारा बुजुर्ग विकलांग मतदाताओं को मदद देते हुए मतदान केंद्र तक पहुंचने में सहयोग किया गया सुबह 7 बजे मतदान शुरू होते ही मतदान केदो पर मतदाताओं की लंबी कतार लग गई थी शहर से लेकर गांव तक बूढ़े से लेकर जवान तक मतदान करने के लिए अपने घरों से निकलने लगे थे। समाचार लिखे जाने तक 5 बजे तक कैमूर जिले में 68 प्रतिशत मतदान हो चुके थे 5 बजे के बाद भी लोग मतदान करने के लिए लाइन में खड़े थे। बढ़ा हुआ प्रतिशत यह बताता है कि शायद यह कैमूर के इतिहास में पहली बार रहा होगा कि इतनी भारी संख्या में मतदान हुए।

जमुई में 67.81 प्रतिशत मतदान

जमुई (एसएनबी)। जमुई जिला अंतर्गत 240 सिकंदरा विधानसभा क्षेत्र (सु.) , 241जमुई , 242 झाझा और 243 चकाई विधानसभा क्षेत्र के चुनावी महासमर में 67.81 प्रतिशत वोटिंग हुई है। 242 झाझा विधानसभा क्षेत्र में वोटों की बारिश हुई। यहां 70.76 प्रतिशत निर्वाचकों ने ईवीएम का बटन दबाया और मन पसंद के उम्मीदवार को वोट दिया। वहीं 240 सिकंदरा विधानसभा क्षेत्र (सु) में अपेक्षाकृत कम मतदान हुआ। यहां 63.93 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। 241 जमुई विधानसभा क्षेत्र में 65.57 प्रतिशत वहीं 243 चकाई विधानसभा क्षेत्र में 70.54 प्रतिशत वोटिंग दर्ज की गई है।जमुई जिला अंतर्गत सभी चारों विधानसभा क्षेत्र में मतदान शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हो गया।

कतार में लगकर मतदान करते हुए लोग।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी श्री नवीन ने खबरनबीसों को बताया कि लोकतंत्र के महापर्व में मतदान को लेकर जमुई जिला के सभी चार विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं में ऊर्जा के साथ उत्साह देखने को मिला। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के दूसरे और आखिरी चरण में सिकंदरा (सु) , जमुई, झाझा और चकाई विधानसभा क्षेत्र के लिए मंगलवार को मतदान हुआ। लोग उत्साह तथा उमंग के साथ घरों से निकले और मतदान केंद्र पर जाकर ईवीएम का जमकर बटन दबाया। साथ ही पसंदीदा प्रत्याशी के पक्ष में वोटिंग की। जमुई जिला में कुल 67.81 प्रतिशत वोटरों ने मतदान किया। झाझा और चकाई विधानसभा क्षेत्र शिखर पर रहा वहीं सबसे कम वोटिंग सिकंदरा (सु) में हुआ। जमुई विधानसभा क्षेत्र में 65.57 प्रतिशत वोटरों ने मताधिकार का इस्तेमाल किया।हुआ। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि जमुई जिला में कुल 41 प्रत्याशी मैदान में है। इन सभी की किस्मत अब ईवीएम में कैद हो गई है। पोल्ड ईवीएम और वीवीपैट को स्थानीय केकेएम कॉलेज स्थित बज्रगृह में सुरक्षित रखा जा रहा है। नामित ओहदेदारों की उपस्थिति में बज्रगृह में पोल्ड ईवीएम और वीवीपैट को भंडारित कर इसे सील किया जाएगा। केकेएम कॉलेज स्थित बज्रगृह को त्रिस्तरीय सुरक्षा प्रदान की गई है। इसकी सुरक्षा के लिए खास प्रबंध किए गए है। अभ्यर्थी के प्रतिनिधियों के लिए पोल्ड ईवीएम एवं वीवीपैट की निगरानी हेतु भी स्थल का चयन किया गया है। जमुई जिला अंतर्गत सभी चार विधानसभा क्षेत्र के वोटों की गिनती 14 नवंबर को निर्धारित है। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने स्वतंत्र, स्वच्छ, शांतिपूर्ण, निष्पक्ष, पारदर्शी और निर्भीक मतदान संपन्न कराने के लिए ओहदेदारों, कर्मियों के साथ यहां के नागरिकों को साधुवाद दिया है। उन्होंने कहा कि मतगणना के दरम्यान इसी जोश, जज्बा और जुनून के साथ देय दायित्वों का निर्वहन किया जाना है ताकि चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहे। श्री नवीन ने भारत निर्वाचन आयोग के गाइडलाइंस के मुताबिक निर्वाचन प्रक्रिया के गतिमान रहने की बात बताते हुए कहा कि 140 उत्क्रमित मध्य विद्यालय बंझूलिया मतदान केंद्र पर दिव्यांग मतदाता ने सबसे पहले अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। उन्होंने शांतिपूर्ण तरीके से मतदान संपन्न होने पर खुशी का इजहार किया। उधर विधायक श्रेयसी सिंह ने नयागांव स्थित मतदान केंद्र पर वोट दिया।

शिवहर में वोटों की हुई बरसात

शिवहर (एसएनबी)। 18वीं विधानसभा चुनाव में आज दूसरे और अंतिम चरण के चुनाव में शिवहर में मतदान की बारिश हुई है,11 अभ्यर्थी का भाग्य का फैसला अब ईवीएम में बंद हो गया है।जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह- जिला पदाधिकारी विवेक रंजन मैत्रेय, पुलिस अधीक्षक शैलेश कुमार सिन्हा ने स्वच्छ वातावरण में मतदान होने की बात

मतदान करते जाती महिला मतदाता।

ताता है। निर्भीक होकर मतदान करने की अपील की गई थी। शिवहर विधानसभा में 40 सेक्टर ऑफिसर तथा 30, बेलसंड अंश विधानसभा में 16 सेक्टर मजिस्ट्रेट किए गए नियुक्त किए गए थे।

सभी मतदाताओं को चुनाव के समय अपनी पहचान हेतु मतदाता पहचान पत्र अपने साथ लाने का निर्देश दिया गया था। निर्वाचन क्षेत्र में मतदान हेतु ,मॉडल के हैदराबाद निर्मित ई0वी0एम0 वी0वी0पैट0 का उपयोग किया गया,22, शिवहर विधान सभा के 199 भवन में 368 मतदान केंद्रों पर होगा मतदान, 30, बेलसंड अंश के 79 भवनों में 152 मतदान केंद्रों पर हुआ मतदान।

शिवहर विधानसभा में 18 वर्ष से 19 आयु वर्ग के निर्वाचकों की संख्या 7185 है ,22, शिवहर विधानसभा में 85 वर्ष से अधिक के निर्वाचकों की संख्या 1758 है ,22, शिवहर विधानसभा में 162602 पुरुष मतदाता तो 142067 महिला मतदाता थे वहीं तृतीय लिंग के 06 मतदाता थे । 98 प्रतिशत वोटर की बीएलओ के माध्यम से वोटर पर्ची हस्तगत कराया जा चुका था। ईवीएम - वीवीपैट संग्रहण के लिए 12 काउंटर बनाए गए थे ।स्ट्रांग रूम में 32 सीसी कैमरे लगाए गए।मतदान बाद ईवीएम एवं वीवीपैट को भवन निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियंता कार्यालय में बने स्ट्रांग रूम में रखा गया। डीएम विवेक रंजन मैत्रेय ने बताया चुनाव आयोग द्वारा जारी गाइडलाइन का शत् प्रतिशत पालन कराया गया।मतदान के उपरांत 14 नवंबर को महात्मा गांधी नगर भवन में होगी मतगणना होगी। मतदान को लेकर शिवहर जिले में विधि व्यवस्था को लेकर सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए थे।

किशनगंज में हुई बम्पर वोटिंग 75 से 80 प्रतिशत तक मतदान

किशनगंज (एसएनबी)। किशनगंज के चार विधानसभा क्षेत्रों किशनगंज, बहादुरगंज, कोचाधामन और ठाकुरगंज में बंपर वोटिंग हुई है अब तक के सारे रिकॉर्ड ध्वस्त हो गये है। 75 से 80 प्रतिशत मतदाताओं ने मत का प्रयोग किया है। दूसरे चरण के तहत मतदान हुआ संपन्न।

नदी पार कर जाते मतदाता।

निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव को लेकर जिला पुलिस ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किया गया। लगभग 6 हजार से अधिक पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई। इनमें अर्द्ध-सैनिक बलों के साथ बिहार पुलिस के जवान शामिल थे।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की निगरानी में सातों प्रखंडों, किशनगंज सदर, बहादुरगंज, कोचाधामन, टेढ़ागाछ, दिघलबैंक, ठाकुरगंज और पोठिया में लगातार फ्लैग मार्च किया गया। पुलिस वाहन जांच अभियान चला रही है ताकि किसी भी तरह की गड़बड़ी रोकी जा सके। सुरक्षा के लिए हजारों पुलिस और अर्द्धसैनिक बल तैनात किए गए थे। ईवीएम की सुरक्षा के लिए सात सौ जीपीएस लगे वाहनों का उपयोग किया गया। नदी पार बूथों के लिए नावों की व्यवस्था की गई थी। मतदान को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गए थे। जिले में हजारों पुलिस जवान के साथ अर्द्धसैनिक बलों के जवानों की प्रतिनियुक्ति की गई। चुनाव में किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो इसको लेकर संवदेनशील जगहों पर अर्द्धसैनिक पुलिस बल के साथ पुलिस के जवान तैनात रहे। किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो इसको लेकर बाहर के जिले से बड़ी संख्या में सुरक्षा बलों को मंगाया गया था। छह हजार पुलिसकर्मियों को चुनाव कार्य में लगाया गया था। चुनाव भयमुक्त हो इसको लेकर पांच आईएएस, दो आईपीएस एक आईआरएस, मॉनिटरिंग में लगे रहे। इसके साथ पांच डीएसपी, बीएमपी, कॉन्स्टेबल, इंस्पेक्टर, एक हजार से ज्यादा दारोगा, बारह सौ से ज्यादा सहायक अवर निरीक्षक तैनात किए गए है। वहीं चुनाव से पहले से ही बंगाल व नेपाल सीमा पर सुरक्षा के मद्देनजर विशेष सतर्कता बरती गई। इस दौरान नेपाल बॉर्डर सील कर दिया गया था। भयमुक्त वातावरण में चुनाव संपन्न कराने के लिए चुनाव आयोग के निर्देश पर प्रशासन के द्वारा पूरी तैयारी के साथ चुनाव कराया गया।

सीतामढ़ी में शाम पांच बजे तक 65.29 फीसद वोटिंग

सीतामढ़ी (सहारा न्यूज ब्यूरो)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के तहत द्वितीय व अंतिम चरण के मतदान दिवस 11 नवंबर (मंगलवार) को जिले में मतदाताओं ने उत्साहपूर्वक अपने वोट डाले। मतदान केंद्रों पर सुरक्षा व सुविधा की बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था के बीच जिले के आठ विधानसभा क्षेत्रों 23- रीगा, 24- बथनाहा, 25- परिहार, 26- सुरसंड, 27- बाजपट्टी, 28- सीतामढी, 29- रून्नीसैदपुर व 30- बेलसंड में शाम 5 बजे तक औसतन 65 प्रतिशत से अधिक मतदान की सूचना है।

मिली जानकारी के मुताबिक निर्धारित समय से शुरू हुए मतदान के दौरान जिले में सुबह 9 बजे तक 13.49, 11 बजे तक 29.81, दोपहर 1 बजे तक 45.28 व 3 बजे तक 58.32 प्रतिशत की सूचना रही थी। शाम 5 बजे तक मतदान का यह आंकड़ा बढ़कर 65.29 प्रतिशत पर पहुँच गया। कुछ मतदान केंद्रों को छोड़कर प्रायः अधिकांश मतदान केंद्रों पर दिन में लंबी कतार कभी दिखाई नहीं दी, लेकिन दोपहर बाद बड़ी संख्या में लोग

डुमरा के बूथ नम्बर 206 पर मतदान के लिए कतार में लगे डीएम रिची पाण्डेय।

मतदान केंद्रों पर कतार में लगकर अपने वोट डाले। जिला प्रशासन द्वारा मतदान केंद्रों की सुरक्षा व सुविधा सहित पूरी व्यवस्था बड़े ही सुंदर तरीके से की गई थी। अनेक मतदान केंद्रों को सजाया व संवारा गया था। जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-जिलाधिकारी रिची पांडेय व पुलिस अधीक्षक ने जिले के विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों का भ्रमण कर मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। साथ हीं जिला नियंत्रण कक्ष में पहुँच कर जिले भर से मिल रही सूचनाओं की जानकारी ली एवं आवश्यक निर्देश दिए। इससे पहले सुबह में हीं सीतामढ़ी जिला मुख्यालय डुमरा के बागमती प्रमंडल कार्यालय परिसर में स्थित बूथ नम्बर 206 पर डीएम रिची पाण्डेय ने कतार बद्ध होकर मतदान किया। वहीं रीगा विधानसभा क्षेत्र के पोसुआ पटनिया के 93 साल के रामचंद्र सिंह ने मतदान केंद्र संख्या 216 पर अपना वोट डालकर लोकतंत्र के इस महापर्व में अपनी भागीदारी निभायी। वहीं सीतामढ़ी व रीगा सहित विभिन्न विधानसभा क्षेत्र के प्रत्याशियों ने अपने अपने मतदान केंद्र पर परिवारजन सहित वोट डाले।

वहीं रुन्नीसैदपुर राजकीय मध्य विद्यालय बूथ संख्या 270 पर जनता दल यूनाइटेड के उम्मीदवार के पोलिंग एजेंट गौतम कुमार के विरुद्ध आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के मामले को लेकर प्राथमिकी दर्ज की गई। वहीं सीतामढ़ी विधानसभा क्षेत्र संख्या.28 के अंतर्गत डुमरा रोड साहू चौक स्थित मतदान केंद्र संख्या.56 (राजकीय जिला उद्योग केंद्र कार्यालय, राजोपट्टी उर्फ कोट बाजार, पूर्वी भाग) ने जिले में एक अनूठी मिसाल पेश की। इस मॉडल मतदान केंद्र की सबसे विशेष बात यह रही कि यहाँ कार्यरत सभी मतदान कर्मी स्वयं दिव्यांग थे।

रोहतास में पिछले चुनाव की अपेक्षा 7 प्रतिशत अधिक मतदान

सासाराम (एसएनबी)। जिले में बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान मंगलवार की सुबह 7 बजे से शुरू होकर शाम 6 बजे तक शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हुआ। जिला प्रशासन ने सभी सात विधानसभा क्षेत्रों में शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं पारदर्शी मतदान सुनिश्चित कराने हेतु मतदान केंद्रों पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के साथ जिला मुख्यालय स्थित डीआरडीए भवन में एक कंट्रोल रूम संचालित किया, जहां से मतदान अवधि में सभी विधानसभा क्षेत्रों की रियल टाइम मॉनिटरिंग की गई।

महिला मतदाताओं बातचीत करती डीएम।

प्रत्याशियों की किस्मत ईवीएम में कैद : विधानसभा चुनाव के दूसरे व अंतिम चरण के मतदान के बाद जिले में तकरीबन डेढ़ महीने से चल रही चुनावी सरगर्मी आज थम गई और चुनाव लड़ रहे सभी प्रत्याशियों के किस्मत भी ईवीएम में कैद हो गए। जिले के सात विधानसभा क्षेत्रों के लिए कुल 95 प्रत्याशी मैदान में है, जिनके भाग्य का फैसला आगामी 14 नवंबर को मतगणना के दिन होगा। बता दें कि जिले के 2217137 मतदाताओं के लिए कुल 2692 मतदान केंद्र बनाए गए थे। जहां सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम के साथ-साथ मतदाताओं के लिए सभी जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई थी।

युवा और महिला वोटरों में दिखा उत्साह : जिले के सभी मतदान केन्द्रों पर मॉक पोल की प्रक्रिया पूरी करते हुए पूर्व निर्धारित समय से मतदान प्रारंभ हुआ तथा गुलाबी ठंड के बीच विभिन्न बूथों पर सुबह से हीं मतदाताओं की भारी भीड़ देखी गई। सभी मतदान केन्द्रों पर दिव्यांग, महिला वोटर व 85 वर्ष से अधिक उम्र वाले मतदाताओं के लिए ग्रीन चौनल बनाए गए थे तथा मतदान को लेकर लोगों में भारी उत्साह देखने को मिला। युवा, महिला एवं नए वोटरों ने मतदान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और सेल्फी लेकर सोशल प्लेटफॉर्म पर भी अपनी तस्वीरें साझा की।

कई मतदान केंद्रों पर वोट बहिष्कारः जिले के अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों से मंगलवार को वोट बहिष्कार के मामले भी सामने आए।

जिले के सभी मतदान केंद्रों पर शांतिपूर्ण मतदान संपन्न, युवा व महिला वोटरों में दिखा उत्साह, कई जगहों पर वोट बहिष्कार

जानकारी के अनुसार चेनारी विधानसभा क्षेत्र के रोझई एवं कोनकी गांव तथा करगहर विधानसभा क्षेत्र के लडुई बिसुनपुरा में ग्रामीणों ने वोट बहिष्कार किया। कोनकी एवं लडुई बिशनपुरा गांव में जहां ग्रामीणों ने पंचायत सरकार भवन के निर्माण को लेकर वोट बहिष्कार किया, वहीं रोझई गांव में प्राथमिक विद्यालय को लेकर मतदान का बहिष्कार हुआ। इसके अलावा जिले के कई मतदान केंद्रों पर ईवीएम खराब होने से भी कुछ घंटों के लिए मतदान प्रभावित हुआ। प्रशासन के अनुसार अलग-अलग मतदान केंद्रों से कुल 27 बीयू, 19 सीयू एवं 30 वीवीपैट बदले गए है।

डीएम- एसपी ने मतदान केंद्रों का लिया जायजा : जिले में अंतिम चरण के मतदान के दिन जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह डीएम उदिता सिंह व पुलिस अधीक्षक रौशन कुमार ने एकसाथ जिले के कई मतदान केंद्रों पर जाकर सुरक्षा व्यवस्था एवं मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की सुविधा के लिए मुहैया कराई गई सभी जरूरी सुविधाएं जैसे बिजली, पानी, रैंप, छाया, व्हीलचेयर आदि का जायजा लिया। सभी अधिकारी निष्पक्ष व शांतिपूर्ण ढंग से चुनाव कराने को लेकर सजग दिखे और पूरे दिन मतदान कार्य में जुटे सभी आला अधिकारियों की गाड़ियां सड़कों पर एक मतदान केंद्र से दूसरे मतदान केंद्र तक दौड़ती रही।

जिले में 61 प्रतिशत हुआ मतदान : जिलाधिकारी उदिता सिंह ने कहा कि जिले में मतदान के दिन शाम 5 बजे तक कुल तकरीबन 61ः मतदान हुआ है तथा पूरे जिले में किसी बूथ से कोई भी अप्रिय घटना की सूचना नहीं मिली है। मतदान समाप्ति के पश्चात इवीएम संग्रहण का कार्य शुरू हो गया है। जिला प्रशासन के अनुसार, जिले के सभी मतदान केंद्रों से ससमय इबीएम का संग्रहण कर लिया जाएगा और इसके बाद पूरे चुनावी प्रक्रिया की स्क्रूटनी होगी।

खबरें एक नजर में

भागलपुर में शांतिपूर्ण रहा मतदान

भागलपुर (एसएनबी)। जिले के सात विधानसभा में मंगलवार को मतदान की प्रक्रिया ईवीएम खराब होने की छिटपुट घटनाओं के बीच शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गई। इस बार के विधानसभा में मतदाताओं ने अपने मताधिकार का जमकर प्रयोग किया। शाम 5 बजे तक मतदान का प्रतिशत 62 फीसदी तक पहुंच चुका था। सबसे अधिक मतदान का प्रतिशत गोपालपुर विधानसभा का रहा। जहां शाम पांच बजे 68 फीसदी हो चुका था। उधर गोपालपुर विधानसभा में 64 और नाथनगर विधानसभा में यह आंकड़ा 63 फीसदी तक पहुंच चुका था। उधर मतदान को लेकर मतदाताओं में काफी उत्साह देखा गया। सुबह से मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की भीड़ लगने लगी थी। सभी मतदाता कड़ी सुरक्षा के बीच अपने मतदान करते दिखे। ग्रामीण क्षेत्रों में मतदान केंद्र पर पुरुष मतदाताओं से ज्यादा महिला मतदाताओं में उत्साह काफी देखा गया। भागलपुर जिले के सात विधानसभा क्षेत्रों में मतदान के लिए बिहपुर में 316, गोपालपुर में 317, पीरपैंती में 438, कहलगांव में 423, भागलपुर में 375, सुल्तानगंज में 399 और नाथनगर में 418 मतदान केंद्र बनाए गए थे। मतदान को लेकर अंतरराज्यीय सीमा को सील किया गया था। किसी भी बाहरी व्यक्ति का प्रवेश चुनाव समाप्ति तक भागलपुर में प्रतिबंधित किया गया था। जिले की सीमा पर सघन जांच जारी रही। उल्लेखनीय है कि ईवीएम की मतगणना 14 नवंबर को आठ बजे पूर्वाह्न से पालिटेक्निक और महिला आईटीआई में प्रारंभ होगी। बिहपुर, गोपालपुर और सुल्तानगंज विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की मतगणना महिला आईटीआई में तथा शेष चार विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के मतगणना राजकीय पालिटेक्निक बरारी में की जाएगी। ईवीएम की सेकेंड लास्ट राउंड की गिनती पोस्टल बैलेट की गिनती पूर्ण होने के उपरांत ही की जाएगी। पांव-पांच वीवी पैट के पर्ची की गिनती का मिलान संबंधित ईवीएम की गिनती से की जाएगी। वहीं संवेदनशील और अतिसंवेदनशील मतदान केंद्रों पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी थी। जिले में सबसे अधिक संवेदनशील मतदान केंद्र पीरपैंती विधानसभा क्षेत्र में 438 चिन्हित किए गए थे। जिले के 1296 भवनों में 2686 मतदान केंद्र बनाए गए थे। इनमें से 461 मतदान केंद्र संवेदनशील है।

नवादा में कड़ी सुरक्षा के बीच 55 प्रत्याशियों के भाग्य ईवीएम में कैद

नवादा/कौआकोल/रजौली (एसनबी)। नवादा जिले के पांच विधानसभा क्षेत्र में मंगलवार को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच 2169 मतदान केंद्रों पर मतदान संपन्न हो गया। लगभग 57.11 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया ।मतदान के बाद नवादा जिले के पांच विधानसभा क्षेत्र के 55 प्रत्याशियों का भाग्य अब ईवीएम में कैद हो गया है।14 नवंबर को मतगणना के बाद ही परिणाम सामने आएंगे ।मतदान खत्म होने के साथ ही जीत हार के दावे प्रति दावे किए जा रहे है ।लेकिन मतगणना के बाद ही सही चित्र साफ हो पाएंगे। नवादा के जिला पदाधिकारी सह जिला निर्वाचित अधिकारी रवि प्रकाश ने कहा है कि जिले के पांच विधानसभा क्षेत्रों के 2169 मतदान केंद्रों पर शांतिपूर्ण मतदान संपन्न कराया गया । इस कार्य के लिए 9600 मतदान कर्मियों को लगाया गया

नवादा में 105 वर्ष की महिला मतदाता से अनुभव साझा करते डीएम, एसपी।

था तथा 300 वाहनों का उपयोग किया गया था । चुनाव प्रेक्षक के साथही बड़ी संख्या में सेक्टर दंडाधिकारियों ने सशस्त्र बलों के साथ चुनाव कार्य को संपन्न कराने में अपनी भूमिका अदा की ।कुछ मतदान केंद्रों पर ईवीएम खराब होने की शिकायत मिली। जहां कुछ ही देर बाद मतदान चालू कर दिया गया। पार नवादा मतदान केंद्र पर लगभग 1 घंटे तक ईवीएम खराब रहने के कारण मतदान बाधित रहे ।वारसलीगंज विधानसभा क्षेत्र के माफी तथा अब्दुलपुर गांव में वोट देने के सवाल पर दो गुटों में हुए संघर्ष में तीन लोग घायल हो गए ।सशस्त्र बलों ने शांतिपूर्ण तरीके से इन जगहों पर भी मतदान शांतिपूर्ण संपन्न कराया। सेक्टर दंडाधिकारी ने बताया कि जो भी घटना हुई मतदान केंद्र के बाहर हुई ।मतदान में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं हुआ। नवादा के कन्हाई लाल साहू महाविद्यालय में बनाए गए स्ट्रांग रूम में ईवीएम जमा कराए जाएंगे।

विस चुनाव के दूसरे चरण में औरंगाबाद की सभी छह सीटों के लिए शांतिपूर्ण संपन्न हुआ मतदान

औरंगाबाद(एसएनबी)। बिहार विधानसभा आम निर्वाचन 2025 के दूसरे चरण में औरंगाबाद जिले की सभी छः विधानसभा सीटों के लिए मतदान शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हो गया है। खास बात यह रही कि पहले चरण के मतदान वाले क्षेत्रों के अनुरूप दूसरे चरण में औरंगाबाद जिले में भी रिकॉर्ड वोटिंग हुई। जिले के सभी छः विधानसभा सीटों पर कड़ी सुरक्षा के बीच शांतिपूर्वक मतदान संपन्न हुआ। जिले में विधानसभा चुनाव के लिए मंगलवार सुबह कड़ी सुरक्षा के बीच 6 सीटों पर मतदान शुरू हुआ और सुबह 7 बजे शुरू हुआ मतदान शाम 6 बजे तक चला। मतदान संपन्न होने

5 बजे तक रिकॉर्ड 64.48 फीसदी वोटिंग, जिले में 76 प्रत्याशियों की चुनावी किस्मत ईवीएम में कैद

ओबरा के एक बूथ पर मतदान के लिए कतार में लगे कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष।

के साथ ही जिले के सभी 6 विधानसभा सीटो से चुनाव लड़ रहे कुल 76 प्रत्याशियों की चुनावी किस्मत ईवीएम में कैद हो गई है, जिसका खुलासा 14 नवंबर को मतगणना से होगा। मतदान संपन्न होने के बाद नेताओं ने अपनी-अपनी जीत के दावे करने भी शुरू कर दिए है। जिले की 6 सीटों पर रिकॉर्ड 64.48 फीसदी (5 बजे तक) मतदान हुआ है।

अरवल बम्पर वोटिंग, टूटा पिछला रिकॉर्ड

अरवल (एसएनबी)। बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के लिए संपन्न हुए मतदान में बंपर वोटिंग हुआ है। पिछले विधानसभा चुनाव के वोटिंग प्रसेंटेज को तोड़ते हुए वोटिंग प्रतिशत का एक नया रिकॉर्ड बना है। अरवल के दोनों ही विधानसभा क्षेत्र में मतदाताओं ने मतदान की प्रक्रिया में बढ़-चढ़ करके हिस्सा लिया है।अरवल विधान सभा में 2020 में 55.67 प्रतिशत मतदान हुआ था इस बार बम्पर बढ़ोतरी के साथ 70 प्रतिशत से अधिक प्रतिशत मतदान हो सकता है वही कुर्था विधान सभा की अगर बात की जाय तो 2020 में 55.03 प्रतिशत मतदान हुआ था इस बार बम्पर वोटिंग के साथ यहाँ भी 70 प्रतिशत से अधिक मतदान हो सकता है कुर्था (एसएनबी) बिहार

कतार में लगे लोग।

विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण में कुर्था विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न मतदान केदो पर मतदाताओं में मतदान को लेकर जबरदस्त उत्साह देखा गया। हालांकि सभी मतदान केदो पर सुरक्षा का व्यापक इंतजाम रहा। खास करके कुर्था प्रखंड मुख्यालय में बनाए गए। सखी मतदान केंद्र मानो प्रखंड क्षेत्र के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा तो दूसरी तरफ यूथ मैनेज मतदान केंद्र में भी कई प्रकार की व्यवस्थाएं की गई थी। हालांकि इस बार मतदान के दौरान मतदाताओं को किसी भी प्रकार के परेशानी ना हो इसको लेकर मतदान केदो पर पीने के पानी शौचालय व मोबाइल रखने के लिए तमाम प्रकार की व्यवस्थाएं उपलब्ध थी। जिला निर्वाचित पदाधिकारी के अनुसार कुर्था प्रखंड में सुबह 9.42 बजे 15.05 प्रतिशत 12.08 में 31.9 प्रतिशत दोपहर 1:30 बजे 3:30 बजे 58.3 प्रतिशत 05 बजे 63.30 प्रतिशत मतदान कराया गया। हालांकि प्रखंड क्षेत्र के सभी मतदान केदो पर मतदाता कतार वध होकर अपने-अपने मताधिकार का प्रयोग कर रहे थे। वही मतदान केदो पर सुरक्षा की चाक चौबंद व्यवस्था की गई थी साथ ही पुलिस ऑब्जर्वर लगातार सभी मतदान केदो का निरीक्षण करते देखे गए।